Follow us on: @TheDailyPioneer facebook.com/dailypioneer instagram.com/dailypioneer/

RNI NO.UPHIN/2010/36547
वर्ष 15 अंक 145
लखनऊ, सोमवार, 17 मार्च 2025
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
लखनऊ, नगर संस्करण

पायनियर

Established 1865

लखनऊ, नई दिल्ली और रायपुर से प्रकाशित

www.dailypioneer.com

आभ्यन्तर

राष्ट्रीय-10

राम मंदिर ट्रस्ट ने पिछले पांच वर्षों में 400 करोड़ रुपए का कर चुकाया

पाकिस्तानी सेना पर बलूच विद्रोहियों का फिदायीन हमला

● 90 सैनिकों को मारने का किया दावा, पाकिस्तान पुलिस बोली, केवल 5 सैनिक मारे गए

पायनियर न्यूज सर्विस/ एजेंसियां। कराची/नई दिल्ली

पाकिस्तान के अशांत बलूचिस्तान प्रांत में रविवार को संदिग्ध बलूच आतंकवादियों द्वारा किए गए आतंकवादी हमले में कम से कम पांच सुरक्षाकर्मी मारे गए और एक दर्जन से अधिक घायल हो गए हैं। स्थानीय मीडिया रिपोर्टों के अनुसार प्रांत के नोशकी जिले में जवाबी कार्रवाई में आत्मघाती हमलावर सहित चार आतंकवादी मारे गए। इस हमले की बलूच लिबरेशन आर्मी (बीएलए) ने हमले की जिम्मेदारी लेते हुए दावा किया है कि हमले में 90 सैन्यकर्मी मारे गए हैं। पिछले सप्ताह की शुरुआत में, इसी प्रांत में, बीएलए के उग्रवादियों ने 11 मार्च को बोलन जिले के गुडलार और पीरू कुनरी के पहाड़ी इलाकों के पास 440 यात्रियों को ले जा रही जाफर एक्सप्रेस पर घात लगाकर हमला किया था। 12 मार्च को सेना द्वारा सभी 33 आतंकवादियों को मार गिराने से पहले उग्रवादियों ने 21 यात्रियों और चार अर्धसैनिक सैनिकों को मार डाला था। जहां तक हालिया घटना का सवाल है, एक आत्मघाती हमलावर ने नुश्की-दलबंदिन राष्ट्रीय राजमार्ग पर पैरामिलिट्री फ्रंटियर कॉर्प (एफसी) के काफिले में विस्फोटकों से लदे वाहन को घुसा दिया। स्थानीय पुलिस स्टेशन के प्रमुख जफरुल्लाह सुमालानी ने कहा कि प्रारंभिक जांच से पता चलता है कि यह एक आत्मघाती हमला था। सुमालानी ने यह भी कहा कि हमले की जगह से मिले सबूतों से पता चलता है कि एक आत्मघाती हमलावर ने विस्फोटकों से लदे वाहन को एफसी के काफिले में घुसा दिया था।

स्थानीय समाचार पत्र एक्सप्रेस ट्रिब्यून ने कहा कि हमले के तुरंत बाद, सुरक्षा बलों ने तत्काल जवाबी कार्रवाई शुरू की, जिसमें आत्मघाती हमलावर सहित चार आतंकवादी मारे गए। समाचार पत्र ने सुरक्षा सूत्रों के हवाले से यह भी कहा कि यह हमला प्रतिबंधित बीएलए के आतंकवादियों द्वारा किया गया था। रविवार को उनके काफिले पर हुए हमले में कुल 90 पाकिस्तानी सैन्यकर्मियों के मारे जाने का दावा करते हुए बीएलए की ओर से जारी बयान में कहा गया, बलूच लिबरेशन आर्मी की फिदायीन इकाई मजीद ब्रिगेड ने कुछ घंटे पहले नोशकी में आरसीडी हाईवे पर रखशान मिल के पास वीबीआईईडी फिदायीन हमले में कब्जे वाली पाकिस्तानी सेना के काफिले को निशाना बनाया। काफिले में आठ बसें थीं, जिनमें से एक विस्फोट में पूरी तरह नष्ट हो गई। इसमें आगे कहा गया, हमले के तुरंत बाद, बीएलए के फतेह दस्ते ने आगे बढ़कर एक अन्य बस को पूरी तरह से घेर लिया, जिसमें सभी सैन्यकर्मियों को व्यवस्थित तरीके से मार गिराया गया, जिससे दुश्मन के हताहतों की कुल संख्या 90 हो गई। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और गृह मंत्री मोहसिन नकवी तथा बलूचिस्तान के मुख्यमंत्री सरफराज बुगती ने हमले की निंदा की और जानमाल के नुकसान पर दुख जताया।

शरीफ ने एक बयान में कहा, ऐसी कायरतापूर्ण हरकतें आतंकवाद के खिलाफ हमारे संकल्प को हिला नहीं सकतीं। उन्होंने यह भी निर्देश दिया कि घायलों को सर्वोत्तम संभव उपचार प्रदान किया जाए। बुगती ने एक आधिकारिक विज्ञप्ति (शेष पृष्ठ 9)

पाकिस्तान ने हमेशा धोखा दिया:मोदी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

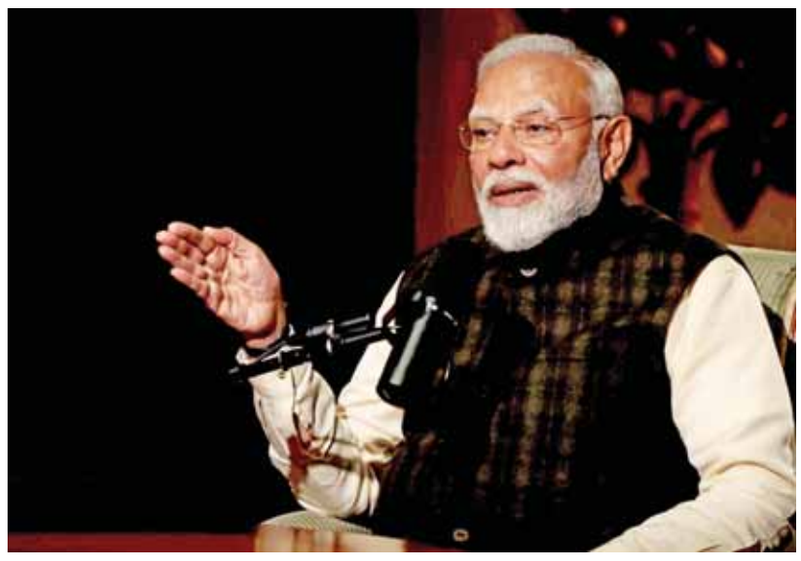

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि पाकिस्तान के साथ शांति स्थापित करने के हर प्रयास का सामना दुश्मनी और विश्वासघात के साथ हुआ है। पीएम मोदी ने कहा कि उम्मीद जताते हुए कहा कि द्विपक्षीय संबंधों को बेहतर बनाने के लिए इस्लामाबाद में नेतृत्व को समझदारी से काम लेना होगा। लेक्स फ्रिडमैन के साथ जारी पॉडकास्ट में मोदी ने रविवार को याद किया कि उन्होंने 2014 में अपने शपथ ग्रहण समारोह के लिए अपने पाकिस्तानी समकक्ष नवाज शरीफ को विशेष रूप से आमंत्रित किया था, इस उम्मीद के साथ कि दोनों देश एक नया अध्याय शुरू कर सकते हैं।

प्रधानमंत्री ने अपने तीन घंटे से अधिक के संवाद में कहा, फिर भी, शांति स्थापित करने के हर नेक प्रयास का सामना दुश्मनी और विश्वासघात से हुआ। हमें पूरी उम्मीद है कि उन्हें समझदारी से काम लेना होगा और वे शांति का रास्ता चुनेंगे। मोदी ने कहा कि उनका मानना है कि पाकिस्तान के लोग भी शांति चाहते हैं क्योंकि वे भी संघर्ष, अशांति और निरंतर आतंक के साये में रहने से थक गए होंगे, जहां मासूम बच्चों की हत्या की जाती है और अनगिनत लोगों की जान जाती है। प्रधानमंत्री ने कहा कि द्विपक्षीय संबंधों को बेहतर बनाने का उनका पहला प्रयास सद्भावना का संकेत था।

मोदी ने कहा, यह दशकों में किसी भी तरह का कूटनीतिक इशारा नहीं था। वही लोग जो कभी विदेश नीति के प्रति मेरे दृष्टिकोण पर सवाल उठाते थे, वे तब हैरान रह गए जब उन्हें पता चला कि मैंने सभी सार्क राष्ट्राध्यक्षों को आमंत्रित किया था और हमारे तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने अपने संस्मरण में उस ऐतिहासिक इशारे को खूबसूरती से कैद किया है। यह इस बात का प्रमाण था कि भारत की विदेश नीति कितनी स्पष्ट और आत्मविश्वासी हो गई है। इसने दुनिया को शांति और सद्भाव के लिए भारत की प्रतिबद्धता के बारे में एक स्पष्ट संदेश दिया, लेकिन हमें वांछित परिणाम नहीं मिले।

2002 के गोधरा दंगों और उसके बाद के घटनाक्रम को अब वे किस तरह देखते हैं, इस सवाल पर मोदी ने कहा कि यह चर्चा एक झूठी कहानी गढ़ने का प्रयास था और केंद्र में सत्ता में बैठे उनके राजनीतिक विरोधी चाहते थे कि उन्हें दंडित किया जाए, लेकिन अदालतों ने उन्हें निर्दोष करार दिया। मोदी ने कहा कि उन्हें निशाना बनाने के लिए कई लोग गलत सूचना फैलाने में शामिल थे। मोदी ने कहा, अगर आप 2002 से पहले के आंकड़ों की समीक्षा करेंगे, तो आप देखेंगे कि गुजरात में लगातार दंगे हुए। कहीं-कहीं लगातार कर्फ्यू लगाया जा रहा था। पतंगबाजी की प्रतियोगिता या साइकिल की टक्कर जैसी छोटी-छोटी बातों पर सांप्रदायिक हिंसा भड़क जाती थी। मोदी ने कहा कि 1969 में गुजरात में दंगे छह महीने से ज़्यादा चले और वह एक ऐसा दौर था जब वे राजनीति में कहीं नहीं थे। उन्होंने कहा कि गोधरा ट्रेन जलाने की घटना उनके गुजरात विधानसभा के विधायक चुने जाने के बमुश्किल तीन दिन बाद हुई थी। यह अकल्पनीय परिमाण की त्रासदी थी, लोगों को जिंदा जला दिया गया। उन्होंने कहा, आप कल्पना कर सकते हैं, कंधार अपहरण, संसद पर हमला या यहां तक कि 9/11 जैसी घटनाओं की पृष्ठभूमि में स्थिति कितनी तनावपूर्ण और अस्थिर थी। कुछ भी न हो, हम भी यही चाहते हैं। हर कोई चाहता है कि शांति हो। उस समय गुजरात के मुख्यमंत्री रहे मोदी ने कहा कि गोधरा में हुई बड़ी घटना ही हिंसा का कारण बनी और हिंसा हुई। उन्होंने कहा कि गोधरा मामले को लेकर झूठी कहानी फैलाई गई। उन्होंने कहा, लेकिन अदालत ने मामले की गहन जांच की और हमें पूरी तरह से निर्दोष पाया। जो लोग वास्तव में जिम्मेदार थे, उन्हें अदालतों से न्याय मिला है।

मोदी ने कहा, उस समय हमारे राजनीतिक विरोधी सत्ता में थे और स्वाभाविक रूप से वे चाहते थे कि हमारे खिलाफ सभी आरोप बरकरार रहें। वे हमें दंडित होते देखना चाहते थे। उनके अथक प्रयासों के बावजूद न्यायपालिका ने दो बार स्थिति का बारीकी से विश्लेषण किया और अंततः हमें पूरी तरह निर्दोष पाया। उन्होंने कहा कि सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि गुजरात, जो लगभग हर साल हिंसा का गवाह बनता था, ने 2002 के बाद से दंगे नहीं देखे हैं। पिछले 22 वर्षों में, गुजरात में एक भी बड़ा दंगा नहीं हुआ है। मोदी ने कहा, गुजरात पूरी तरह से शांतिपूर्ण है। उन्होंने दोहराया कि कैसे कुछ लोगों ने दंगों के बाद उनकी छवि को खराब करने की कोशिश की, लेकिन अंततः न्याय की जीत हुई और अदालतों ने उन्हें दोषमुक्त कर दिया। आरएसएस के साथ अपने संबंधों के बारे में पूछे जाने पर, मोदी ने कहा कि वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसे 'पवित्र संगठन' (शेष पृष्ठ 9)

लश्कर के वांछित आतंकी कताल की पाक में हत्या

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

लालघेरे में मारा गया आतंकवादी अबू कताल

जम्मू-कश्मीर में कई घातक आतंकी हमलों का जिम्मेदार और भारतीय सुरक्षा एजेंसियों द्वारा वांछित लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) के शीर्ष कमांडर को पाकिस्तान में एक हमले में बंदूकधारियों ने मार गिराया, अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी। पंजाब के झेलम इलाके में शनिवार शाम को जिया-उर-रहमान उर्फ नदीम उर्फ अबू क़ताल उर्फ क़ताल सिंधी की गोली मारकर हत्या कर दी गई। अधिकारियों ने पड़ोसी देश से प्राप्त सूचना के हवाले से बताया कि उसके सुरक्षा गार्ड की भी हत्या कर दी गई। अबू क़ताल को पाकिस्तानी सेना की ओर से कड़ी सुरक्षा दी जा रही थी, जिसमें लश्कर-ए-तैयबा के आतंकवादी और सादे कपड़ों में पाकिस्तानी सैन्यकर्मी उसकी सुरक्षा में तैनात थे।

यह हमला झेलम इलाके में दीना पंजाब यूनिवर्सिटी के पास जीनत होटल के पास उस समय हुआ, जब जिया-उर-रहमान का काफिला गुजर रहा था। उसी समय अज्ञात बंदूकधारियों ने ताबड़तोड़ गोलियां चलानी शुरू कर दीं। उन्होंने कहा कि लश्कर-ए-तैयबा के संस्थापक और 26/11 मुंबई आतंकवादी हमले के मास्टरमाइंड हाफिज सईद का सबसे भरोसेमंद हैंडलर माना जाने वाला 43 वर्षीय रहमान जम्मू-कश्मीर के पुंछ-राजौरी क्षेत्र में विभिन्न हमलों की योजना बनाने में शामिल आतंकी संगठन का मुख्य हैंडलर था। अधिकारियों ने कहा कि रहमान ने 2000 की शुरुआत में जम्मू क्षेत्र में घुसपैठ की थी और 2005 में भाग गया था। उन्होंने कहा कि उसके पुराने संपर्कों के जरिए पुंछ और राजौरी में उसके पास स्थानीय स्तर पर कार्यकर्ताओं का एक बड़ा नेटवर्क था। अधिकारियों ने कहा कि पुंछ-राजौरी क्षेत्र में भीषण आतंकवादी घटनाओं में राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) द्वारा की गई विभिन्न जांचों में उसकी संलिप्तता पाई गई। उन्होंने कहा कि एनआईए ने 2023 में राजौरी जिले के ढांगरी गांव में हिंदू अल्पसंख्यकों पर हमले के लिए गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम और अन्य धाराओं के तहत उसके खिलाफ आरोप पत्र दायर किया था। आतंकवादियों ने 1 जनवरी, 2023 को ढांगरी गांव पर इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आईईडी) से हमला किया और घटनास्थल से भागने से पहले ग्रामीणों को निशाना बनाया। एक आतंकवादियों की गोलीबारी में पांच लोग मारे गए, जबकि अगली सुबह आईईडी विस्फोट में दो अन्य की मौत हो गई। दोहरे हमलों में 14 ग्रामीण घायल हो गए।

अधिकारियों ने कहा कि रहमान रियासी बस हमले का भी मास्टरमाइंड है, जो 9 जून, 2024 को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार के शपथ ग्रहण समारोह के दिन आयोजित किया गया था। इस हमले में आतंकवादियों ने शिव खोड़ी मंदिर जा रही तीर्थयात्रियों की बस पर गोलीबारी कर नौ तीर्थयात्रियों की हत्या कर दी और 41 को घायल कर दिया था। वह 20 अप्रैल, 2023 को भट्टा-दुरियन आतंकी घटना में भी शामिल था, जिसमें सेना के पांच जवान मारे गए थे। वह 5 मई, 2023 को 9 पैरा स्पेशल फोर्स के अधिकारियों और कर्मियों पर कंडी हमले में भी आरोपी है। अधिकारियों ने कहा कि हमले में पांच कर्मियों की जान चली गई। उन्होंने कहा कि रहमान, सैफुल्लाह साजिद जट्ट, एक अन्य पाकिस्तान स्थित आतंकवादी के साथ, जम्मू और कश्मीर के पुंछ-राजौरी क्षेत्र में सक्रिय संगठन के आतंकवादियों का मुख्य हैंडलर था। 4 फरवरी, 1982 को पाकिस्तान के सिंध प्रांत के संघर जिले में जन्मे रहमान, पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) के कोटली जिले में स्थित लश्कर के खुइरट्टा डेट्स (घुसपैठ के लिए तैयार आतंकवादियों का छोटा समूह) का प्रभारी था। अधिकारियों ने कहा कि वह पीओके और पाकिस्तान के सिंध प्रांत में लश्कर के कैडरों और उसके ऑपरेटरों के बीच मुख्य कड़ी था और वह सईद का सबसे भरोसेमंद हैंडलर था। अधिकारियों ने कहा कि कई मौकों पर लश्कर के (शेष पृष्ठ 9)

सुनीता विलियम्स की वापसी तय नया दल अंतरिक्ष स्टेशन पहुंचा

पीटीआई। केप कैनवेरल

अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के लंबे समय से फंसे अंतरिक्ष यात्रियों बुच विल्मोर और सुनीता विलियम्स के स्थान पर अन्य अंतरिक्ष यात्रियों को तैनात करने के लिए एक दिन पहले रवाना हुआ स्पेसएक्स का यान रविवार को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पहुंच गया। इसके साथ ही विलियम्स और विल्मोर की वापसी का रास्ता साफ हो गया। अमेरिका, जापान और रूस का प्रतिनिधित्व करने वाले चार नए अंतरिक्ष यात्री अगले कुछ दिन बुच विल्मोर और सुनी विलियम्स से स्टेशन के बारे में जानकारी लेंगे।

फिर वे दोनों इस सप्ताह के अंत में अपने स्पेसएक्स कैप्सूल में सवार होंगे, जो पिछले साल से ही वहां है, ताकि पिछले जून में शुरू हुए एक अप्रत्याशित विस्तारित मिशन को पूरा किया जा सके। विलमोर और विलियम्स को बोइंग की पहली अंतरिक्ष यात्री उड़ान पर लॉन्च होने के एक सप्ताह बाद ही वहां से चले जाने की उम्मीद थी। इस महीने की शुरुआत में उन्होंने नौ महीने पूरे कर लिए। बोइंग स्टारलाइनर कैप्सूल में इतनी सारी समस्याएं आईं कि नासा ने जोर देकर कहा कि यह खाली वापस आए, जिससे इसके परीक्षण पायलटों को स्पेसएक्स की उड़ान का इंतजार करना पड़ा।

विल्मोर ने अंतरिक्ष स्टेशन का दरवाजा खोला और फिर जहाज की घंटी बजाई, क्योंकि नए यात्री एक-एक करके अंदर आ रहे थे और उनका स्वागत गले लगाकर और हाथ मिलाकर किया जा रहा था। विलियम्स ने मिशन कंट्रोल को बताया, यह एक शानदार दिन था। अपने दोस्तों को आते देखकर बहुत अच्छा लगा। विलमोर और विलियम्स की सवारी सितंबर के अंत में दो लोगों के कम क्रू के साथ वापस आई और लेग बैक के लिए दो खाली सीटें आरक्षित थीं। लेकिन जब उनके प्रतिस्थापन के नए कैप्सूल को व्यापक बैटरी मरम्मत की आवश्यकता हुई, तो और अधिक देरी हुई। एक पुराने कैप्सूल ने उनकी जगह ले ली, जिससे उनकी वापसी कुछ हफ़्ते आगे बढ़कर मार्च के मध्य तक हो गई। मौसम की अनुमति मिलने पर, विल्मोर, (शेष पृष्ठ 9)

भारत, न्यूजीलैंड ने एफटीए वार्ता बहाल करने की घोषणा की

नई दिल्ली (भाषा)। भारत और न्यूजीलैंड ने रविवार को प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) के लिए वार्ता बहाल करने की घोषणा की, जो 2015 में स्थगित हो गई थी। भारत और न्यूजीलैंड ने वस्तुओं, सेवाओं और निवेश में व्यापार को बढ़ावा देने के लिए अप्रैल, 2010 में व्यापक आर्थिक सहयोग समझौते (सीईसीए) पर बातचीत शुरू की थी। हालांकि, नौ दौर की चर्चाओं के बाद 2015 में वार्ता रुक गई थी। वाणिज्य मंत्रालय ने कहा, दोनों देश एक व्यापक और पारस्परिक रूप से लाभकारी भारत-न्यूजीलैंड मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) वार्ता के लिए बातचीत शुरू करने की घोषणा करते हुए खुश हैं। यह घोषणा इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री क्रिस्टोफर लक्सन 16 मार्च से चार दिवसीय यात्रा पर यहां आ रहे हैं। मंत्रालय ने वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल और न्यूजीलैंड के व्यापार एवं निवेश मंत्री टॉड मैक्ले के बीच बैठक के बाद यह घोषणा की। बयान के अनुसार, भारत-न्यूजीलैंड एफटीए वार्ता का उद्देश्य संतुलित परिणाम प्राप्त करना है, जिससे आपूर्ति शृंखला एकीकरण बढ़े और बाजार पहुंच में सुधार हो। गोयल ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा, द्विपक्षीय व्यापार में लगातार वृद्धि जारी है, जो अप्रैल-जनवरी 2025 के दौरान एक अरब डॉलर को पार कर जाएगा। एफटीए वार्ता का उद्देश्य व्यवसायों और उपभोक्ताओं के लिए नए रास्ते खोलना, हमारे देशों की पारस्परिक वृद्धि और समृद्धि को बढ़ावा देना है। शोध संस्थान ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) के अनुसार, नए सिरे से होने वाली वार्ता में एक बड़ी चुनौती शुल्क संरचनाओं में असमानता होगी। न्यूजीलैंड का औसत आयात शुल्क केवल 2.3 प्रतिशत है, जबकि इसकी आधी से अधिक शुल्क लाइनें पहले से ही शुल्क-मुक्त हैं, जिसका अर्थ है कि भारतीय वस्तुओं की पहले से ही उसके बाजार में पर्याप्त पहुंच है। इसके विपरीत, भारत का औसत शुल्क 17.8 प्रतिशत है, जिसका अर्थ है कि उसे महत्वपूर्ण कटौती करनी होगी, जिससे भारत के लिए पारंपरिक एफटीए कम आकर्षक हो जाएगा। जीटीआरआई के संस्थापक अजय श्रीवास्तव ने कहा, (शेष पृष्ठ 9)

ट्रंप ने हूती विद्रोहियों पर दिए हवाई हमले के आदेश, 31 मरे

पीटीआई। वेस्ट पाम बीच

हूती विद्रोहियों द्वारा संचालित स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा है कि यमन पर अमेरिकी हमलों में मरने वालों की संख्या 31 हो गई है, जिसमें महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं। मंत्रालय के प्रवक्ता अनीस अल-असबाही ने रविवार को कहा कि रात भर हुए हमलों में 101 अन्य लोग घायल हुए हैं। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि उन्होंने शनिवार को यमन में हूतियों के कब्जे वाले क्षेत्रों पर हवाई हमलों की एक श्रृंखला का आदेश दिया, जिसमें ईरान समर्थित हूती विद्रोहियों द्वारा एक महत्वपूर्ण समुद्री गलियारे के साथ शिपिंग पर अपने हमले बंद करने तक 'जबरदस्त घातक बल' से हमला करने का वादा किया। हूतियों के अनुसार इस हमले में कम से कम 18 नागरिक मारे गए हैं।

ट्रंप ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा, हमारे बहादुर युद्धक अभी अमेरिकी शिपिंग, वायु और नौसैनिक संपत्तियों की रक्षा करने और नौवहन स्वतंत्रता को बहाल करने के लिए आतंकवादियों के ठिकानों, नेताओं और मिसाइल रक्षा पर हवाई हमले कर रहे हैं। कोई भी आतंकवादी ताकत अमेरिकी वाणिज्यिक और नौसैनिक जहाजों को दुनिया के जलमार्गों पर स्वतंत्र रूप से नौकायन करने से नहीं रोक पाएगी। उन्होंने ईरान को विद्रोही समूह का समर्थन बंद करने की चेतावनी भी दी और कहा कि कि वह अपने छद्म कार्यों के लिए देश को पूरी तरह से जवाबदेह ठहराएंगे। अमेरिकी नेता द्वारा यह जवाब ईरानी नेताओं को एक पत्र भेजे जाने के दो सप्ताह बाद आया है, जिसमें ईरान के बढ़ते परमाणु कार्यक्रम पर देशों के बीच द्विपक्षीय वार्ता को फिर से शुरू करने का रास्ता सुझाया गया था। ट्रंप ने कहा है कि वह इसे चालू नहीं होने देंगे। हूतियों ने शनिवार शाम को अपने क्षेत्र में विस्फोटों की सूचना दी, राजधानी सना और सादा के उत्तरी प्रांत में, जो सऊदी अरब की सीमा पर विद्रोहियों का गढ़ है, रविवार की सुबह उन क्षेत्रों में और हवाई हमले किए जाने की सूचना मिली। ऑनलाइन तस्वीरों में सना हवाई अड्डे के परिसर के क्षेत्र में काले धुएं के गुबार दिखाई दिए, जिसमें एक विशाल सैन्य सुविधा शामिल है। हूतियों ने रविवार की सुबह होदेदा, बायदा और मारिब प्रांतों पर हवाई हमले की भी सूचना दी। हूती द्वारा संचालित स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, कम से कम 18 लोग मारे गए, जिनमें सना में 13 और सादा में पांच लोग शामिल हैं। कम से कम 24 अन्य घायल हुए, जिनमें सना में नौ और सादा में 15 लोग शामिल हैं।

एक अमेरिकी अधिकारी ने कहा कि यह हूती ठिकानों पर हवाई हमलों की शुरुआत थी, जिसके जारी रहने की उम्मीद है। अधिकारी ने नाम न बताने की शर्त पर बात की, क्योंकि उन्हें प्रेस से बात करने के लिए अधिकृत नहीं किया गया था। हूती मीडिया कार्यालय के उप प्रमुख नसरुद्दीन आमेर ने कहा कि हवाई हमले उन्हें नहीं रोकेंगे और वे अमेरिका के खिलाफ जवाबी कार्रवाई करेंगे। उन्होंने सोशल मीडिया पर कहा, सना गाजा की ढाल और सहारा बना रहेगा और चुनौतियों के बावजूद इसे नहीं छोड़ेगा।

एक्स पर एक अन्य प्रवक्ता, मोहम्मद अब्दुलसलाम ने ट्रंप के इस दावे को झूठा और भ्रामक बताया कि हूती अंतरराष्ट्रीय शिपिंग मार्गों को खतरा पहुंचाते हैं। हवाई हमले हूतियों द्वारा यह कहे जाने के कुछ दिनों बाद हुए हैं कि वे गाजा पर इजराइल की नवीनतम नाकाबंदी के जवाब में यमन से रवाना होने वाले इजराइली जहाजों पर हमले फिर से शुरू करेंगे। उन्होंने चेतावनी को लाल सागर, अदन की खाड़ी, बाब अल-मंडेब जलडमरूमध्य और अरब सागर को प्रभावित करने वाला बताया। तब से हूती हमलों की कोई सूचना नहीं मिली है। इस महीने की शुरुआत में, इज़राइल ने गाजा में आने वाली सभी सहायता को रोक दिया (शेष पृष्ठ 9)

पायनियर
लखनऊ, सोमवार, 17 मार्च 2025

जरूरतमंदों तक योजनाओं का लाभ पहुंचा कर विकास से जोड़ेंः योगी

● सबका विश्वास, सबका विकास के संकल्प के साथ कार्य कर रही सरकारः मुख्यमंत्री

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/गोरखपुर

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को भी गोरखनाथ मंदिर में श्जनता दर्शनश् किया। इस दौरान 150 से अधिक लोग पहुंचे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सभी के पास पहुंचकर उनकी समस्याओं को सुना और अधिकारियों को निस्तारण के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि सरकार 'सबका विश्वास सबका विकास' के संकल्प के साथ कार्य कर रही है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि समस्याओं का निदान कराएं और पीड़ितों को न्याय दिलाएं। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को स्पष्ट रूप से निर्देश दिया कि जरूरतमंदों तक सरकार की योजनाओं का लाभ पहुंचाएं और उन्हें विकास से जोड़ें।

सीएम योगी रविवार सुबह गोरखनाथ मंदिर में आयोजित जनता दर्शन में पीड़ितों की समस्याएं सुन रहे थे। मंदिर परिसर के महंत दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार के बाहर कुर्सियों पर बैठाए गए लोगों तक वह खुद पहुंचे और एक.एक करके सबकी समस्याएं सुनीं। इस दौरान करीब 150 लोगों से मुलाकात कर उन्होंने सबको आश्वस्त किया कि किसी के साथ अन्याय नहीं होने दिया जाएगा। सबके प्रार्थना पत्रों को संबंधित अधिकारियों को संदर्भित करते हुए त्वरित और संतुष्टिपरक निस्तारण का निर्देश देने के साथ सीएम ने लोगों को भरोसा दिलाया कि सरकार हर पीड़ित की समस्या का समाधान कराने के लिए दृढ़ संकल्पित है।

मुख्यमंत्री के समक्ष जनता दर्शन में कई लोग इलाज के लिए आर्थिक सहायता की गुहार लेकर पहुंचे थेए जिस पर मुख्यमंत्री ने आश्वस्त किया कि सरकार इलाज के लिए भरपूर मदद करेगी। मुख्यमंत्री ने इलाज से जुड़े एस्टिमेट मंगाने के लिए कहा। राजस्व व पुलिस से जुड़े मामलों को उन्होंने पूरी पारदर्शिता व निष्पक्षता के साथ निस्तारित करने का निर्देश भी दिया।

आज से प्रदेश में शुरू होगी गेहूं खरीद

● रबी विपणन वर्ष 2025-2026 के लिए सरकार ने तय किया है 2425 रुपये प्रति कुंतल समर्थन मूल्य

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

रबी विपणन वर्ष 2025.26 के लिए 17 मार्च से गेहूं खरीद शुरू होगी, जो 15 जून तक चलेगी। इसके लिए 6500 क्रय केंद्र निर्धारित किए गए हैं। वहीं केंद्र सरकार ने गेहूं का समर्थन मूल्य 2425 रुपये प्रति कुंतल निर्धारित किया हैए जो विगत वर्ष से 150 रुपये प्रति कुंतल अधिक है। पिछले वर्ष गेहूं का समर्थन मूल्य 2275 रुपये प्रति कुंतल था। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अधिकारियों को निर्देश दिया है कि किसानों को 48 घंटे के भीतर भुगतान कर दिए जाएं। सीएम ने जोर दिया है कि क्रय केंद्रों पर आने वाले किसानों के लिए भी समुचित व्यवस्था की जाए। उन्हें किसी प्रकार की परेशानी न हो। मोबाइल केंद्र के माध्यम से किसानों के गांवों में जाकर भी खरीद होगी।

गेहूं की बिक्री के लिए पहली मार्च से पंजीकरण प्रारंभ हो चुका है। अब तक प्रदेश के 2ण्65 लाख से अधिक किसानों ने पंजीकरण करा लिया है। गेहूं की बिक्री के लिए किसानों को खाद्य व रसद विभाग के पोर्टल या विभाग के मोबाइल ऐप पर पंजीकरण नवीनीकरण कराना अनिवार्य है। विभाग ने किसानों से अनुरोध किया है कि गेहूं को ओसाकर, मिट्टी, कंकड़, धूल आदि को साफ्कर अच्छी तरह से सुखाकर ही क्रय केंद्र पर बिक्री के लिए लेकर आएं। इस वर्ष भी बटाईदार किसानों द्वारा भी पंजीकरण कराते हुए गेहूं की बिक्री की जा सकेगी।

खाद्य व रसद विभाग के मुताबिक रविवार व अन्य अवकाशों को छोड़कर 15 जून तक क्रय केंद्रों पर गेहूं खरीद प्रतिदिन सुबह 8 से रात्रि 8 बजे तक होगी। योगी सरकार ने निर्देश दिया है कि किसानों को किसी भी प्रकार की परेशानी न हो। विभाग ने इसकी तैयारी भी कर ली गई है। किसी भी विषम परिस्थितियों के लिए खाद्य व रसद विभाग ने टोल फ्री नंबर 18001800150 जारी किया है। किसी भी समस्या के समाधान के लिए किसान जिला खाद्य विपणन अधिकारी या तहसील के क्षेत्रीय विपणन अधिकारी या ब्लॉक के विपणन अधिकारी से संपर्क कर सकते हैं।

केंद्र सरकार ने गेहूं का न्यूनतम समर्थन मूल्य ;एमएसपीद्ध रबी विपणन वर्ष 2025.26 के लिए 2425 रुपये प्रति कुंतल निर्धारित किया है। पिछले वर्ष यह मूल्य 2275 रुपये प्रति कुंतल था। इस बार सरकार ने 150 रुपये प्रति कुंतल में वृद्धि की है। खाद्य विभाग समेत आठ क्रय एजेंसियों के द्वारा कुल 6500 क्रय केंद्र स्थापित किए गए हैं। खाद्य व रसद विभाग ने गेहूं के मूल्य भुगतान सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली (पीएफ्एमएस) के माध्यम से सीधे किसानों के आधार लिंक खाते में 48 घंटे के अंदर करने की व्यवस्था बनाई है। 17 मार्च से शुरू होने वाली गेहूं खरीद के लिए विभाग ने सारी तैयारी कर ली है। इस वर्ष मोबाइल केंद्र के माध्यम से गांवों में जाकर किसानों से गेहूं खरीद होगी।

कुछ लोग सोशल मीडियाा प्लेटफार्म का दुरुपयोग कर नकारात्मकता फैलाने का कर रहे कामः सीएम

लखनऊ/गोरखपुर। लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में मीडिया को मान्यता दी गयी है। मीडिया ही लोकतंत्र के प्रति सजग प्रहरी के रूप में सबसे महत्वपूर्ण मुद्दे की ओर आकर्षित कर अन्य तीन स्तंभों को किसी न किसी रूप में झकझोरती है। किन्ही कारणों से छूटे हुए मुद्दों को सही तथ्यों के साथ प्रस्तुत कर जन सरोकार से जोड़ती है। मीडिया की भूमिका पूरी दुनिया में समय.समय पर अलग.अलग रूप में देखने को मिली है। गोरखपुर पूर्वी उत्तर प्रदेश का केंद्र बिंदु है। ऐसे में गोरखुपर जर्नलिस्ट प्रेस क्लब की भूमिका और महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि यहां नई कार्यकारिणी का निर्णय आस-पास के जनपदों और संस्थानों पर पड़ेगा। इसे ध्यान में रखकर नई कार्यकारिणी को जन सरोकारों से जुड़ करके संवेदनशील बनना होगा तभी नई कार्यकारिणी की भूमिका महत्वपूर्ण और प्रासंगिक होगी। ये बातें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को गोरखपुर में आयोजित गोरखपुर जर्नलिस्ट्स प्रेस क्लब की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह में कही। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि देश में कई ऐसे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहे हैं, जिन्होंने अपने करियर को मीडिया के जरिये आगे बढ़ाने का काम किया था। देश के स्वाधीनता आंदोलन में उन्होंने पत्रकारिता के रूप में अपनी अहम भूमिका निभायी थी। इसमें सबसे पहला नाम राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का आता है, उन्होंने अपनी लेखनी से समाचार पत्रों को प्रोत्साहित किया था। लोकमान्य तिलक ने जन चेतना को जागरूक करने के लिए गणपति महोत्सव का आयोजन किया। इसके अलावा लाल लाजपत राय, गणेश शंकर विद्यार्थी आदि ने अपनी लिखनी की धार से समाज को नई दिशा दी। जिस समय देश के लोकतंत्र का गला घोंटा जा रहा था तब समाचार समूहों ने अपनी लेखनी के माध्यम से लोकतंत्र को बचाने के लिए पूरी ताकत लगा दी थी। मीडिया की भूमिका और प्रासंगिकता को परिवर्तनशील माहौल में भी कभी कम नहीं किया जा सकता है। आज टेक्नोलॉजी से पूरी दुनिया में तेजी से बदलाव हो रहा है। ऐसे में मीडिया जगत में भी तेजी के साथ बदलाव हो रहा है ताकि समाज तक टेक्नोलॉजी से जुड़ करके सही तथ्यों को उन तक पहुंचाया जा सके। आज युवा पीढ़ी सबसे ज्यादा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग कर रही है क्योंकि उसके पास समय कम है। ऐसे में मीडिया संस्थानों की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ गयी है कि उनका सकारात्मक चीजें पहुंचाई जाएं क्योंकि कुछ लोग सोशल मीडियाा प्लेटफार्म का दुरुपयोग कर नकारात्मकता फैलाने का काम कर रहे हैं। ऐसे में मीडिया जगत अपनी जिस भूमिका के लिए जानी जाती है, उसी भूमिका के साथ उसे आगे बढ़ना होगा। यह न केवल लोकतंत्र बल्कि देश की सुरक्षा और संप्रभुता के लिए बड़ा कार्य होगा।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि सुशासन और लोकतंत्र की पहली शर्त संवाद है। हम जबरन अपनी बात को किसी पर थोप नहीं सकते हैंए लेकिन संवाद से बड़े से बड़ी समस्या का समाधान कर सकते हैं। वहीं जब भी हम संवाद की भाषा से अपने आप को अलग करते हैं तो नये संघर्ष को बढ़ावा मिलता है। हमें उस संघर्ष से बचने की आवश्यकता है। ऐसे में अगर मीडिया उस संवाद की भाषा को प्रभावित ढंग से आगे बढ़ाएगी तो निश्चित रूप से बहुत सारी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। सीएम ने कहा कि संवाद को प्रभावी ढंग से आगे बढ़ने का सबसे सशक्त माध्यम मीडिया है। इसके लिए जरुरी नहीं है कि एक लाख लोगों को इकट्ठा करके अपनी बात कही जाएए इसके लिए कुछ लोग ही पर्याप्त हैं। वहीं लोग करोड़ तक आपकी आवाज को पहुंचाएंगे। इसके लिए मीडिया को आगे आना होगा।

धार्मिक स्थलों के विकास से स्थानीय पर्यटन को मिलेगी नई ऊर्जाः जयवीर सिंह

● फिरोजाबाद के नारखी धौकल में प्राचीन नारद मुनि मंदिर का होगा सौंदर्यीकरण

लखनऊ। पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि प्रदेश सरकार धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयासरत है। इसी कड़ी में फिरोजाबाद जिले के ग्राम नारखी धौकल स्थित प्राचीन देवर्षि नारद मुनि मंदिर के सौंदर्यीकरण एवं पर्यटन विकास के लिए 1.29 करोड़ रुपए स्वीकृत किए गए हैं। इस परियोजना की प्रथम किश्त के रूप में 40 लाख रुपए जारी किए जा चुके हैं।

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने कहा कि इस राशि से मल्टीपरपज हॉल, शौचालय, बेंच सहित अन्य आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था की जायेगी। इससे श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी और मंदिर परिसर अधिक व्यवस्थित होगा। सरकार का उद्देश्य धार्मिक स्थलों के सौंदर्यीकरण और बुनियादी ढांचे के विकास के माध्यम से धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देना है। इस पहल से स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा मिलने की संभावना है। जयवीर सिंह ने बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार लगातार धार्मिक स्थलों के विकास पर ध्यान दे रही है। इससे न केवल श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधाएं मिलेंगीए बल्कि स्थानीय पर्यटन को भी नई ऊर्जा मिलेगी। नारद मुनि मंदिर का जीर्णोद्धार इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। मंदिर के सौंदर्यीकरण की खबर से स्थानीय लोगों और श्रद्धालुओं में उत्साह है। वे उम्मीद कर रहे हैं कि इस पहल से न केवल मंदिर का ऐतिहासिक महत्व और बढ़ेगाए बल्कि क्षेत्र में रोजगार और व्यापार के नए अवसर भी सृजित होंगे।

सरकार जरूर सकारात्मक कदम उठाएगी : मायावती

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

बसपा सुप्रीमों मायावती ने आगरा में बाराखंबा रेलवे फाटक 'अंबेडकर भवन' को अतिक्रमण बताकर उसे हटाने की कार्रवाई पर अपनी नाराजगी जताई है। उन्होंने कहा कि उम्मीद है कि इस मामले में सरकार जरूर सकारात्मक कदम उठाएगी। मायावती ने इस मामले में रविवार को एक्स पर पोस्ट कर बताया कि आगरा में बाराखंबा रेलवे फाटक के पास दशकों से समाज हित व जनकल्याण आदि गतिविधियों से जुड़े 'अम्बेडकर भवन' को अतिक्रमण बताकर उसे हटाने की कार्रवाई से लोगों में आक्रोश व्याप्त है। लोगों का यह भी कहना है कि क्या यही है सरकार का अम्बेडकर प्रेम? ऐसे में केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि आगरा के साथ-साथ ऐसी और भी बाबा साहेब डा. भीमराव अंबेडकर-विरोधी कार्रवाईयों का तत्काल संज्ञान ले और जरूर उचित कार्रवाई भी करें। उम्मीद है कि सरकार जरूर सकारात्मक कदम उठाएगी। बता दें कि आगरा में यह अंबेडकर भवन स्थानीय समुदाय के लिए एक सामाजिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में कार्य करता है। वहीं रेलवे प्रशासन का कहना है कि यह भवन रेलवे की जमीन पर अवैध रूप से बनाया गया है और इसे हटाने के लिए नोटिस जारी किया गया है।

पायनियर वर्गीकृत

सूचना

मैंने अपना नाम राजेश से बदलकर राजेश कुमार पुत्र छोटा कर लिया है भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जाए। ग्राम व पोस्ट रायपुरगढी उन्नाव।

भाजपा सरकार ने प्रदेश को बेरोजगारी के अंधकार में धकेलाः अखिलेश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा सरकार ने प्रदेश को बेरोजगारी के अंधकार में धकेल दिया है। इस सरकार ने प्रदेश में बेरोजगार नौजवानों की फौज खड़ी कर दी है। पढ़े.लिखे नौजवानों के पास नौकरीए रोजगार नहीं है। भाजपा सरकार की नीतियां ठीक नहीं है। यह सरकार हमारा बाजार दूसरे देशों के हवाले कर दे रही है। भाजपा और इसकी सरकार ने किसानोंए नौजवानोंए व्यापारियोंए आम जनता को धोखा दिया है। इसने नौजवानों के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया है। भाजपा नफ्रत की राजनीति कर रही है। अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी सरकार ने बुंदेलखण्ड में विकास कार्य किया। बुन्देलखण्ड के लोगों को सुविधाएं दी। समाजवादी सरकार ने बुन्देलखंड में नल लगाने की योजना शुरू की थी। सड़के, मंडियों को बनाने का काम किया था। समाजवादी सरकार में डैम से राठ सिटी तक पाइप से पानी पहुंचाने की योजना बनी थी। अगर वह योजना शुरू हो गयी होती तो राठ कस्बे के साथ उसके रास्ते में पड़ने वाले गांवों को भी शुद्ध पीने का पानी मिल जाता।

बच्ची से बलात्कार का आरोपी मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार

लखनऊ। पुलिस ने लखनऊ के विभूतिखंड थाना क्षेत्र में सात साल की एक बच्ची से बलात्कार करने के आरोपी को शनिवार देर रात मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार कर लिया। पुलिस उपायुक्त (पूर्वी) शशांक सिंह ने कहा, बच्ची से बलात्कार के आरोपी मोहम्मद सरजू के बारे में पुलिस को सूचना मिली थी कि वह वारदात को अंजाम देने के बाद लखनऊ से भागने की फिराक में है। इस पर विभूतिखंड थाने की पुलिस ने उसका पीछा किया और हैनीमैन चौराहे पर उसे रोकने की कोशिश की। सिंह ने कहा कि रोके जाने पर सरजू ने पुलिस पर गोली चला दी। पुलिस ने आत्मरक्षा में आरोपी पर गोली चलाई जो उसके पैर में लगी। अधिकारी ने बताया कि आरोपी को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है। राजधानी लखनऊ में शनिवार को सात वर्षीय बच्ची के साथ उसके पड़ोस में रहने वाले आरोपी ने कथित तौर पर बलात्कार किया था।

मुख्यमंत्री ने भाजपा के सभी नवनियुक्त जिला एवं महानगर अध्यक्षों को दी बधाई

● संगठन की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने का करें कार्यः चौधरी

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को प्रदेश में भाजपा के सभी नवनियुक्त जिला एवं महानगर अध्यक्षों हार्दिक बधाई दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमें पूर्ण विश्वास है कि निर्वाचित पदाधिकारी भाजपा की नीतियों और सिद्धांतों का पालन करते हुए संगठन को और अधिक मजबूत करेंगे और उत्तर प्रदेश में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सुरक्षा एवं सुशासन के अभियान को आगे बढ़ाने में अपना योगदान देंगे।

इसके साथ ही उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने बधाई देते हुए उन्हें उज्जवल कार्यकाल की शुभकामनाएं दीं। उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कहा कि नवनियुक्त ऊर्जावान अध्यक्षों के कुशल नेतृत्व में हम लगातार तीसरी बार उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनाएंगे। उन्होंने कहा कि संगठन सर्वोपरि है। इसके साथ ही उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौय ने भी निर्वाचित पदाधिकारयिों को बधाई दी।

डिप्टी सीएम ने कहा कि सभी नवनियुक्त अध्यक्षगण अपनी कुशल संगठनात्मक दक्षताए पार्टी के प्रति अटूट निष्ठा एवं कर्मठता से संगठन को और अधिक सशक्त बनाएंगे एवं उसका विस्तार करेंगे। लखनऊ-भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी एवं प्रदेश महामंत्री संगठनी धर्मपाल सिंह ने पार्टी के नवनिर्वाचित जिलाध्यक्षों को बधाई व शुभकामनाएं दी हैं। प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कहा कि भाजपा उत्तर प्रदेश के नवनिर्वाचित सभी जिला अध्यक्षों को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की ढेरों शुभकामनाएं। उन्होंने जिला अध्यक्षों को बधाई देते हुए कहा कि पूर्ण विश्वास है कि आप सभी संगठन की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका सुनिश्चित करने के साथ ही संगठन को निचले स्तर तक मजबूती प्रदान करने के लिए दृढ़.संकल्पित होकर अपने दायित्वों का निर्वहन करेंगे। प्रदेश महामंत्री संगठन धर्मपाल सिंह ने नवनिर्वाचित जिला अध्यक्षों को बधाई व शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आप सभी नई ऊर्जा से संगठन कार्य को सर्वस्पर्शी एवं सर्वव्यापी बनाएंगें।

भाजपा ने 70 संगठनात्मक इकाइयों में जिलाध्यक्षों की घोषणा की

● विजय मौर्य लखनऊ जिला इकाई के बने अध्यक्ष

लखनऊ। केन्द्र और राज्य में सत्तारूढ़ भाजपा ने रविवार को बहुप्रतीक्षित जिला और महानगर की 70 इकाइयों में जिलाध्यक्षों की घोषणा की, पांच महिलाएं भी शामिल हैं। यह घोषणा जिला मुख्यालयों पर की गई। भाजपा के एक वरिष्ठ नेता ने बताया कि प्रदेश की कुल 98 संगठनात्मक जिला इकाइयों (जिला और महानगर समेत) में 70 जिलाध्यक्षों के नाम घोषित किए गए हैं और बाकी 28 जिला इकाइयों के अध्यक्ष बाद में घोषित किए जाएंगे।

भाजपा के उप्र निर्वाचन अधिकारी और पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. महेन्द्र नाथ पांडेय ने बताया कि प्रदेश में 70 जिलाध्यक्षों की रविवार को घोषणा की गई है। इन जिलाध्यक्षों में 39 सामान्य वर्ग के, 25 अन्य पिछड़ा वर्ग और छह अनुसूचित जाति से संबंध रखते हैं। इनमें पांच महिलाएं भी शामिल हैं। पार्टी के मुताबिक विजय मौर्य को लखनऊ जिला इकाई का अध्यक्ष, आनंद द्विवेदी को लखनऊ महानगर का, प्रदीप अग्रहरि को वाराणसी महानगर इकाई का, जनार्दन तिवारी को गोरखपुर जिला इकाई का और देवेश श्रीवास्तव को गोरखपुर महानगर इकाई का अध्यक्ष नामित किया गया है।

भाजपा ने संगठनात्मक सहूलियत के लिए उप्र को काशी, गोरखपुर, अवध, कानपुर-बुंदेलखंड, ब्रज और पश्चिम छह क्षेत्रों और 98 जिला इकाइयों में विभाजित किया है। मुख्यमंत्री योगी और भाजपा प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र चौधरी ने नए पार्टी जिलाध्यक्ष बनाए गए नेताओं को बधाई दी। योगी ने कहा, उप्र में भाजपा के सभी नवनियुक्त जिला एवं महानगर अध्यक्ष को हार्दिक बधाई पूर्ण विश्वास है कि आप सभी भाजपा की नीतियों और सिद्धांतों का पालन करते हुए संगठन को और अधिक मजबूत करेंगे और उप्र में प्रधानमंत्री के सुरक्षा एवं सुशासन के अभियान को आगे बढ़ाने में अपना योगदान देंगे।

आनंद द्विवेदी फिर बने भाजपा लखनऊ महानगर अध्यक्ष

लखनऊ। भारतीय जनता पार्टी लखनऊ महानगर द्वारा संगठन पर्व के तहत रविवार को सीएमएस गोमती नगर ऑडिटोरियम में चुनाव अधिकारी एवं राज्यसभा सांसद नवीन जैन ने पार्टी नेतृत्व द्वारा निर्धारित चुनाव प्रक्रिया के क्रम में आनंद द्विवेदी को लखनऊ महानगर अध्यक्ष निर्वाचित घोषित कर दिया है। महानगर अध्यक्ष घोषित होने के उपरांत आनंद द्विवेदी ने लखनऊ के लोकप्रिय सांसद और केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह, उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक, संगठन महामंत्री धर्मपाल सिंह, नीरज सिंह सहित सभी वरिष्ठ नेताओं और कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया और कहा कि संगठन ने महानगर अध्यक्ष पद के दायित्व के लिए मुझपर जो विश्वास व्यक्त किया है उसको पूरा करने के लिए नयी ऊर्जा और लगन के साथ पार्टी की नीतियों और योजनाओं को जन.जन तक पहुंचाने का कार्य करूंगा और पार्टी अभियानों में लखनऊ महानगर को पूर्व की तरह प्रदेश और राष्ट्रीय स्तर पर शीर्ष स्थान पर पहुंचने का प्रयास करूंगा। इस मौके पर सांसद नवीन जैन ने कहा कि यह हम लोगों के लिए हर्ष और गर्व का विषय है कि हम लोग भारतीय जनता पार्टी के सदस्य हैं। भारतीय जनता पार्टी के एकमात्र पार्टी है जो निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव प्रक्रिया के तहत संगठन पदों का निर्वाचन करती है। इस प्रक्रिया के तहत आज पूरे प्रदेश के सभी जिलों में एक साथ जिला अध्यक्षों की घोषणा की जा रही है। मीडिया प्रभारी प्रवीण गर्ग ने बताया कि महानगर अध्यक्ष घोषणा के लिए आयोजित कार्यक्रम में राज्यसभा सांसद

बृजलाल, संजय सेठ, एमएलसी डॉ महेंद्र सिंह, मुकेश शर्मा, विधायक डॉ नीरज बोरा, ओपी श्रीवास्तव, अंजनी श्रीवास्तव, रजनीश गुप्ता, अमित टंडन और सह चुनाव अधिकारी रमेश तूफानी, राकेश सिंह सहित बड़ी संख्या में पार्टी पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे। घोषणा के साथ ही कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर दौड़ गई महानगर अध्यक्ष को माला और अंगवस्त्र पहनकर बधाई देने वालों में होड़ मच गई। परिसर में ढोल नगाड़े और आतिशबाजी के साथ कार्यकर्ता खुशी में झूमते नजर आए। कार्यकर्ता ने बड़ी माला और फूलों के साथ अध्यक्ष का स्वागत अभिनंदन किया। महानगर अध्यक्ष निर्वाचित घोषित होने के बाद आनंद द्विवेदी सीधे हनुमान सेतु मंदिर पहुंचे जहां हनुमान प्रतिमा पर बड़ी माला अर्पित करके प्रसाद चढ़ाया और शीश नवाया। सभी देवी देवताओं का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया।

नवनियुक्त पदाधिकारी विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में अहम भूमिका निभाएंगेः बृजेश पाठक

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

महानगर अध्यक्ष घोषित होने के उपरान्त आनंद द्विवेदी उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक के सरकारी आवास गए जहां उपमुख्यमंत्री ने गुजिया से मुंह मीठा करा कर दोबारा महानगर अध्यक्ष निर्वाचित होने की बधाई और शुभकामनाएं दी। इस मौके पर उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने कहा कि सभी नवनियुक्त अध्यक्षगण प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। उसके बाद महानगर अध्यक्ष ने पार्टी कार्यालय जाकर प्रदेश महामंत्री संगठन धर्मपाल सिंह और पार्टी कार्यालय में उपस्थित वरिष्ठ पदाधिकारीयों से भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस दौरान महामंत्री राम अवतार कनौजिया, उपाध्यक्ष घनश्याम अग्रवाल, विवेक सिंह तोमर, टिंकू सोनकर, जया शुक्ला, सौरभ वाल्मीकि, राकेश सिंह, अभिषेक खरे, मानवेंद्र सिंह, हेमंत दयाल, विजय भुर्जी, मीडिया प्रभारी प्रवीण गर्ग सहित मंडल अध्यक्ष और पार्षद गण और वरिष्ठ पदाधिकारी उपस्थित रहे।

महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी भाजपा नेता अमित टंडन द्वारा त्रिलोकनाथ मार्ग आवास पर आयोजित होली मिलन समारोह में सम्मिलित हुए जहां बड़ी संख्या में उपस्थित लोगों ने महानगर अध्यक्ष निर्वाचित होने की बधाई और शुभकामनाएं दी। इसके बाद राज्यसभा सांसद डॉक्टर दिनेश शर्मा के यूनिवर्सिटी रोड आवास पहुंचे और भेंट की जहां विधायक डॉक्टर नीरज बोरा मुख्य रूप से उपस्थित रहे। वहां से आनंद द्विवेदी अपने आलमबाग स्थित कार्यालय गए जहां बड़ी संख्या में उपस्थित क्षेत्र वासियों और कार्यकर्ताओं ने पुष्प वर्षा से नव निर्वाचित अध्यक्ष का स्वागत किया।

पायनियर
लखनऊ, सोमवार, 17 मार्च 2025

आम जनता की सुविधा शीर्ष प्राथमिकता: मुख्यमंत्री

● वन ट्रिलियन डॉलर इकॉनमी के लिए जारी प्रयासों और परिणामों की सीएम योगी ने की समीक्षा, कहा लक्ष्य बड़ा, हर विभाग को निभानी होगी जिम्मेदारी ● विभागों में आवंटन के सापेक्ष व्यय की स्थिति संतोषजनक न पाए जाने पर सीएम ने व्यक्त की नारजगी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को प्रदेश को वन ट्रिलियन डॉलर इकॉनमी बनाये जाने के लक्ष्य के लिए जारी प्रयासों और अब तक के परिणामों की समीक्षा की। विभागवार हुई इस समीक्षा में सभी विभागों के अपर मुख्य सचिवध्प्रमुख सचिव/सचिव गण की उपस्थिति रही। विभागीय अधिकारियों ने बारी-बारी से अपने व्न्क्म् लक्ष्य के सापेक्ष अपने विभागों में हो रहे प्रयासों और अद्यतन प्रगति के बारे में मुख्यमंत्री को अवगत कराया और मुख्यमंत्री का मार्गदर्शन प्राप्त किया। बैठक में मुख्यमंत्री ने वित्तीय वर्ष 2024-25 के बजट आवंटन और उसके सापेक्ष हुए व्यय की स्थिति की भी समीक्षा की, साथ हीए जनहित में जारी विभिन्न परियोजनाओं की मुख्यमंत्री डैशबोर्ड के आधार अद्यतन प्रगति पर भी विभागवार चर्चा की। इस दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दि निर्देश दिया कि वित्तीय वर्ष 2024-25 अब समाप्ति की ओर है। कुछ विभागों में आवंटन के सापेक्ष व्यय की स्थिति संतोषजनक नहीं है। संबंधित विभागों के अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव गण से इसमें तेजी की अपेक्षा है। मुख्य सचिव और अपर मुख्य सचिव वित्त द्वारा इन विभागों की समीक्षा की जाए और स्थिति में सुधार के ठोस प्रयास किये जाएं।

जनहित में जहां भी नीतिगत सुधार आवश्यक होगाए सरकार करने को तैयार है। नीतिगत जड़ता की स्थिति नहीं होनी चाहिए। जिस भी व्यवस्था से आम लोगों को सुविधा होए नीतियों में बदलाव करें। रिफॉर्म करें। सरलीकरण करें। उन्होंने कहा कि मिशन वन ट्रिलियन डॉलर इकॉनमीद्ध की सफलता के लिए हर विभाग को अपनी भूमिका का निर्वहन करना होगा। अपने पोटेंशियल को पहचानेंए नए आयामों को विस्तार दें। अपर मुख्य सचिव/प्रमुख सचिव स्तर पर विभागवार तय लक्ष्य की समीक्षा हर पखवारे में की जाए तथा मंत्री स्तर पर मासिक समीक्षा हो। समीक्षा बैठक में लक्ष्य के सापेक्ष प्रगतिए अपनाई गई रणनीति और प्रभावों के हर पहलू पर विचार किया जाए और बेहतरी के लिए कार्ययोजना बनाकर लागू करें। स्वास्थ्य सेक्टर से हर व्यक्ति प्रभावित होता है। इसमें व्यापक सुधार की आवश्यकता है। हर व्यक्ति को समय पर और कम खर्च में इलाज सुलभ हो सके, यही प्राथमिकता होनी चाहिए। मरीजों की सुविधा और डॉक्टरों की सहूलियत को ध्यान में रखते हुए नीतिगत सुधारों को आगे बढ़ाया जाए। उन्होंने कहा कि आयुष्मान भारत अथवा मुख्यमंत्री जन आरोग्य के अंतर्गत पंजीकृत किसी भी अस्पताल का बकाया न रखा जाए। यह सुनिश्चित करें कि आयुष्मान कार्ड धारक मरीज के इलाज के बाद अधिकतम 01 माह के भीतर नियमानुसार अस्पताल का भुगतान कर दिया जाना चाहिए। नए अस्पतालों को इम्पैनल करें। आवश्यकता अनुसार इम्पैनलमेंट नियमों को सरल बनाएं। व्यवहारिकता का ध्यान रखें। सतत प्रयासों से आज प्रदेश में 80 मेडिकल कॉलेज संचालित हो रहे हैं। इन सभी का सुचारु संचालन होए आम जन को सुलभ चिकित्सा सुविधा मिल सकेए इसके लिए मेडिकल कॉलेजों की नियमित मॉनीटरिंग की जानी चाहिए। डॉक्टर की हर समय उपलब्धता होए दवाओं की कमी न रहे। गर्मी का मौसम प्रारम्भ हो चुका है। विंध्य और बुंदेलखंड क्षेत्र में सुचारु जलापूर्ति सुनिश्चित कराई जाए। कहीं भी आम आदमी को पानी की किल्लत नहीं होनी चाहिए। महाकुम्भ प्रयागराज के आयोजन ने प्रदेश के हॉस्पिटैलिटीए टूरिज्म और ट्रांसपोर्ट सेक्टर को बड़ा बूस्ट किया है। अर्थव्यवस्था पर इसका गहरा असर पड़ा है। इस वर्ष जीडीपी के अंतिम आंकड़ों को तैयार करते समय महाकुम्भ से जुड़े डेटा को जरूर शामिल किया जाए। ऊर्जा विभाग के शीर्ष अधिकारी फील्ड में उतरें सभी डिस्कॉम की नियमित अंतराल पर समीक्षा की जाए। उपभोक्ताओं से संवाद करें। उनकी व्यवहारिक समस्याओं को सुनें और यथोचित निस्तारण कराएं। यह सीधे तौर पर जनता से जुड़ा हुआ विभाग हैए इसमें जनता से सीधा संवाद होना चाहिए। पुलिस लाइन निर्माण, पुलिस आधुनिकीकरण तथा ढांचागत सुविधाओं से जुड़ी जितनी भी परियोजनाएं स्वीकृत हो चुकी हैंए सभी की मॉनीटरिंग की जाए। टाइमलाइन तय करें और तय समय सीमा के भीतर पूरा करायें। पंचनद परियोजना बुंदेलखंड और आस पास के क्षेत्रों में बड़े बदलाव की वाहक है, इसमें तेजी की अपेक्षा है। औरैया, कानपुर देहात एवं जालौन आदि जिलों में सिंचाई का रकबा बढ़ेगा और बुंदेलखंड में व्याप्त सूखा को मिटाने में मदद मिलेगी। वहीं मत्स्य पालनए पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। पुराने जलाशयों की सफाई और अनुरक्षण की आवश्यकता है। इनकी डीसिल्टिंग कराई जानी चाहिए। जिलों से रिपोर्ट प्राप्त करते हुए इसकी कार्रवाई आगे बढ़ाएं। बचपन संवारने में आंगनबाड़ी केंद्रों की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह आवश्यक है कि सभी जिलों में आंगनबाड़ी का अपना भवन होए राज्य सरकार द्वारा इसके लिए हर तरह का सहयोग दिया जाएगा। इस संबंध में आवश्यक कार्यवाही के लिए प्रस्ताव तैयार करें। उन्होंने कहा कि निर्माणाधीन राज्य विश्वविद्यालयों के निर्माण कार्य की थर्ड पार्टी ऑडिट कराई जाए। गुणवत्ता से समझौता नहीं होना चाहिए। सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अन्तर्गत सब्सिडी वितरण में और प्रगति लाए जाने की आवश्यकता है। प्रदेश के स्टार्ट.अप को चिन्हित कर उन्हें यूनिकार्न की श्रेणी में लाए जाने के लिए प्रयास किए जाएं। ग्राउण्ड ब्रेकिंग सेरेमनी में सम्मिलित इकाइयों से निरन्तर अनुश्रवण एवं समन्वय करते हुए उन्हें क्रियाशील किए जाने की आवश्यकता है। पर्यटन विभाग के स्तर पर वर्तमान में क्रियाशील होटल एवं अन्य अतिथिगृहों के डेटाबेस को तैयार किए जाने की आवश्यकता है। आवास विभाग के अन्तर्गत ऐसी सम्पत्तियां जो विगत कई वर्षों से विक्रय नहीं की जा सकी हैंए उन्हें तत्काल नीति लाकर निस्तारित किए जाने की आवश्यकता है। सप्ताहांत का उपयोग फील्ड विजिट के लिए किया जाना उचित होगा। फील्ड के अधिकारियों को अनावश्यक राज्य मुख्यालय न बुलाएंए बल्कि वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से संवाद करें। उत्तर प्रदेश के सभी शासकीय कार्मिकों को मिशन कर्मयोगी से जोड़ा जाना है। इस संबंध में आवश्यक कार्यवाही की जाए। कार्मिकों के क्षमता संवर्धन में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होने वाली है। मुख्यमंत्री कार्यालय द्वारा इसकी मॉनीटरिंग की जाए। सीडी रेशियो की जनपदवार मॉनीटरिंग की जा रही है। सभी जिलों को इसके लिए काम करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि आगामी 25 मार्च को वर्तमान सरकार के 08 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह 08 वर्ष नए भारत के नए उत्तर प्रदेश के सृजन के रहे हैं। 08 वर्ष पूरे होने के अवसर पर सभी जिलों में तीन दिवसीय मेले का आयोजन किया जाए। इन मेलों में केंद्र सरकार द्वारा विगत 11 वर्ष और राज्य सरकार द्वारा विगत 08 वर्षों में जनता की सेवाए सुरक्षा और प्रदेश में सुशासन स्थापित करने के लिए किए गए प्रयासों और परिणामों से जनता को अवगत कराया जाना चाहिए। सभी विभाग अपने प्रयासों, उपलब्धियों के बारे प्रदर्शनी लगाएं। सायंकाल सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होए इनमें स्थानीय कलाकारों को वरीयता दें। तीन दिवसीय मेलों में लोककल्याणकारी योजनाओं से वंचित लोगों को इसका लाभ दिलाया जाए। जनारोग्य मेलाए ऋण मेला आदि का भी आयोजन हो। सभी जिलों में यह कार्यक्रम किया जाना है। इस संबंध में सभी आवश्यक कार्यवाही समय से पूरी कर ली जाए।

विश्वविद्यालय की निर्माण सामग्री का न हो दुरुपयोग: राज्यपाल

● राज्यपाल की अध्यक्षता में गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय के निर्माण कार्यों की प्रगति के संबंध में समीक्षा बैठक संपन्न

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल की अध्यक्षता में रविवार को जनपद मुरादाबाद में गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय मुरादाबाद के निर्माण कार्यों की प्रगति संबंधी समीक्षा बैठक संपन्न हुई। बैठक में निर्माण कार्यों की प्रगति संबंधी समीक्षा बैठक संपन्न हुई। बैठक में गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सचिन माहेश्वरी ने महामहिम महोदया को गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय से संबंधित निर्माण कार्यों की प्रगति के बारे में पीपीटी के माध्यम से अवगत कराया।

इस अवसर पर राज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों को किसी प्रकार की समस्या न होने पाये, इसको अधिकारी सुनिश्चित करें। उन्होंने निर्देश दिया कि किसी प्रकार से निर्माण सामग्री का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए तथा बच्चों को सम्पूर्ण सुविधाएं मिलनी चाहिए। कार्यदायी संस्था को प्लान बनाकर कार्य करने के तथा कुलपति एवं प्रशासन के अधिकारियों को आपसी समन्वय बनाकर निर्माण कार्यों की अच्छे से मॉनिटरिंग करने के भी निर्देश दिए।

उन्होंने कहा कि निर्माण कार्यों की प्रगति संबंधी एक ऐप बनाया जाए, जिस पर नियमित रूप से निर्माण कार्यों की प्रगति को अपडेट किया जाये। विश्वविद्यालय के सभी ब्लाकों में एक साथ कार्य शुरू कराने के लिए भी राज्यपाल ने अधिकारियों को निर्देशित किया। इसके साथ ही उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि निर्माणाधीन विश्वविद्यालय के लिए एक इंजीनियर की व्यवस्था की जाए, जिसके माध्यम से निर्माण कार्यों की प्रगति एवं गुणवत्ता को अच्छे से सुनिश्चित करवायी जा सके। उन्होंने बैठक में उपस्थित पुलिस उप महानिरीक्षक मुनिराज को गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय के प्रांगण में बन रहे पुलिस बूथ के निर्माण एवं गुणवत्ता संबंधी कार्यों को नियमित रूप से स्थलीय निरीक्षण कर मॉनिटरिंग करने के निर्देश दिए। राज्यपाल जी ने कार्यदायी संस्था के संबंधित अधिकारी को बाउंड्रीवाल के साथ ही पौधारोपण को भी साथ-साथ करवाने के निर्देश दिए।

उन्होंने कुलपति से जम्भेश्वर विश्वविद्यालय में बनने वाले हॉस्टल की क्षमता के बारे में भी जानकारी ली। इसके साथ ही उन्होंने कुलपति को निर्देश दिए कि विश्वविद्यालय में कितने प्रोफेसरों की आवश्यकता होगी, इसका एक सिस्टमैटिक प्लान बनाकर कार्यवाही को अमल में लायें। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में विभिन्न पदों की नियुक्तियों के लिए नियुक्ति निर्देशों का कड़ाई से पालन करें, इसमें किसी भी प्रकार की शिथिलता न बरती जाये। बैठक में विश्वविद्यालय के सिंबल, मोटो, जैम पोर्टल, यूजीसी लिस्टिंग सहित अन्य विषयों पर विस्तार से चर्चा की गयी, जिस पर राज्यपाल ने संबंधित अधिकारी को उचित कार्यवाही को अमल में लाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के निर्माण कार्यों की गुणवत्ता में लापरवाही न बरती जाये और निर्धारित समयावधि के अन्तर्गत एवं गुणवत्तापूर्ण ढ़ंग से कार्यों को कराया जाये। उन्होंने कुलपति को विश्वविद्यालय में हो रहे निर्माण कार्यों की समीक्षा नियमित रूप से करने के भी निर्देश दिए।

बैठक से पूर्व राज्यपाल ने भ्रमण कार्यक्रमानुसार जैन मेटल शिल्पग्राम, मारक्यू इम्पेक्स, जेएस इंटरनेशनल हैंडीक्राफ्ट, मार्टको एक्सपोर्ट फैक्ट्रीज का भ्रमण किया। उन्होंने प्रदर्शित धातुओं से निर्मित मूर्तियों, धार्मिक प्रतीकों और कलात्मक शिल्प कार्यों का अवलोकन किया और कारीगरों की उत्कृष्ट कृतियों की सराहना की। उन्होंने कहा कि मुरादाबाद की यह समृद्ध धरोहर भारत की पारम्परिक कला एवं संस्कृति को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

बैठक में मण्डलायुक्त आन्जनेय कुमार सिंह, पुलिस उप महानिरीक्षक मुनिराज, जिलाधिकारी अनुज सिंह, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल, कुलपति सचिन माहेश्वरी, मुख्य विकास अधिकारी सुमित यादव, मुख्य चिकित्साधिकारी डा कुलदीप सिंह, क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी डा संध्या रानी शाक्य, वित्त अधिकारी भृवू नारायण झा, कुलसचिव शशि भूषण, उप कुल सचिव दिनेश कुमार, अपर जिलाधिकारी प्रशासन गुलाब चन्द सहित अन्य संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

निशातगंज गोमती बंधे पर हुए अतिक्रमण के विरुद्ध मुख्यमंत्री से की शिकायत

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

हिन्द समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष कुलदीप तिवारी ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखकर निशातगंज गोमती बंधे पर हो रहे कब्जे की शिकायत की है। कुलदीप तिवारी ने मुख्यमंत्री को भेजे पत्र के माध्यम से कहा कि प्रदेश की राजधानी लखनऊ स्थित निशातगंज गोमती बंधे पर कुछ दिनों के अंदर ही एक तथाकथित मस्जिद कमेटी के द्वारा करीब 8 फीट ऊंची और 40 फीट लंबी दो दीवारें बना दी गई हैं और वहां मौजूद गोमती बंधे की कई बीघा जमीन को मस्जिद की जमीन घोषित करते हुए अवैध कब्जेदारों को बसा कर मस्जिद का वाहन स्टैंड घोषित कर दिया गया और आस पास की खाली जमीन पर गाड़ियां बनाने के कई अवैध कारखाने भी खुल गए हैं। उन्होंने कहा कि नदी के किनारे किनारे बंधे पर कई अवैध दुकानें भी संचालित हैं । सबसे बड़ी विडंबना यह है कि इस अवैध निर्माण से महज 200 मीटर की दूरी पर लखनऊ विकास प्राधिकरण द्वारा ग्रीन कॉरिडोर के तहत हनुमान सेतु से निशातगंज होते हुए गोमती रिवर फ्रंट पर एक फ्लाईओवर का निर्माण किया जा रहा है और उसी के पास एक बड़े हिस्से पर अवैध कब्जा हो रहा है । कुलदीप तिवारी ने कहा कि इस मामले में सिंचाई विभाग के कुछ अधिकारियों की स्पष्ट मिलीभगत जाहिर हो रही है क्योंकि सिंचाई विभाग द्वारा नोटिस देने इत्यादि की खाना पूर्ति करते हुए अंदर ही अंदर इस अवैध कब्जे को संरक्षण दिया जा रहा है। प्रदेश सरकार द्वारा अवैध निर्माण के खिलाफ एक सराहनीय अभियान चलाया गया था परंतु राजधानी लखनऊ में ही सरकारी तंत्र की नाक के नीचे लगातार ऐसे अवैध निर्माण इस अभियान की वास्तविक स्थिति बताने के लिए काफी हैं। कुलदीप तिवारी ने मुख्यमंत्री से कहा कि निस्संदेह सरकार के मुखिया होने के नाते अवैध निर्माण को लेकर आपकी मंशा और कर्मठता पर कोई प्रश्न नहीं उठता परंतु यदि प्रशासन में बैठे भ्रष्ट और अकर्मण्य लोगों तथा संबंधित विभागों की जवाबदेही तय नहीं की जाती तो ऐसे अभियानों का कोई लाभ नहीं है बल्कि यह भ्रष्ट अधिकारियों की कमाई का जरिया बन जाते हैं।

छह झोपड़ियों में लगी आग, परिवार सुरक्षित

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मानकनगर में छह झोपड़ियों में आग लगने से क्षेत्र में दहशत फैल गयी। गनीमत रही कि सो रहा परिवार बाल बाल बच गया। आनन फानन में फायर ब्रिगेड की गाड़ियों द्वारा आग बुझाने में जुट गए। वहीं पौन घंटे के अंदर आग पर काबू पा लिया गया।

राजधानी के मानकनगर में रविवार तड़के छह झोपड़ियों में आग लग गई। एक झोपड़ी में सो रहा परिवार बाल बाल बच गया। दमकलकर्मियों ने दो गाड़ियों से आग पर काबू पा लिया। भोलाखेड़ा में रेलवे ओवरब्रिज के नीचे उन्नाव के बीघापुर में पूर्वा तकिया गांव निवासी रेशम, उन्नाव में असोहा में कंधरपुर निवासी बागेश्वर, सुल्तानपुर के जामो में बलभददेपुर गांव में रहने वाले हरिकेश, बंथरा के त्रिलोचन खेड़ा निवासी विजय शंकर, बंथरा के त्रिलोचन खेड़ा निवासी कन्हैयालाल और धर्मपती झोपड़ी बना कर रहते हैं। होली पर रेशम को छोड़कर सभी अपने गांव गए हुए थे। रविवार तड़के रेशम परिवार के साथ झोपड़ी में सो रही थीं तभी धुएं और आग की तपिश के कारण आंख खुल गई। उन्होंने देखा की उनकी झोपड़ी में आग लगी थी। आननफानन वह अपने परिवार के साथ बाहर भागी। लोग आग बुझाने में जुट गए। इस बीच एफएसओ आलमबाग धर्मपाल सिंह दो गाड़ियों और टीम के साथ मौके पर पहुंच गए। 45 मिनट में दमकल ने आग पर पूरी तरह से काबू पा लिया। एफएसओ के मुताबिक हादसे में कोई जनहानि नहीं हुई है। आग लगने का कारण पता नहीं चल सका है।

डीएम की फटकार पर खतौनी पर दर्ज किए गए साढ़े तीन हजार परवाने

● सम्पूर्ण समाधान दिवस में वकीलों ने जिलाधिकारी विशाख जी से की थी शिकायत

मोहनलालगंज। डीएम की फटकार के बाद आरके दफ्तर में महीनों से धूल खा रहे कोर्ट के परवानों को खतौनी पर दर्ज करने का अभियान चलाया जा रहा है। अब तक तकरीबन साढ़े तीन हजार परवानों की खतौनी पर अमलदरामद की जा चुकी है। शेष एक हजार परवाने भी अगले दस दिन में दर्ज करने का टारगेट रखा गया है। मोहनलालगंज तहसील में तकरीबन साढ़े चार हजार परवाने आरके दफ्तर में धूल खा रहे थे। 15 फरवरी को अधिवक्ताओं ने सम्पूर्ण समाधान दिवस में डीएम विशाख जी से पूरे मामले की शिकायत कर किसानों को हो रही परेशानी का मुद्दा जोर शोर से उठाया था। जिसके बाद डीएम ने सिटी मजिस्ट्रेट को जांच सौंपकर पूरे मामले की रिपोर्ट तलब की थी। डीएम की फटकार के बाद तहसील प्रशासन ने परवानों की बढ़ती तादात को देखते हुए आरके दफ्तर में राजस्व निरीक्षक अशोक पाण्डेय के साथ ही आरके ज्ञानेन्द्र की भी डिजिटल की बनवा दी। दो लोगों की अगुवाई में परवानों की अमलदरामद का अभियान शुरू किया गया। तहसीलदार शशांक नाथ उपाध्याय ने बताया एक माह में तकरीबन साढ़े तीन हजार परवाने खतौनी पर दर्ज किए जा चुके हैं। जिससे निगोहां और गोसाईंगंज क्षेत्र में परवानों का बोझ काफी कम हो गया है। जबकि मोहनलालगंज में अभी लगभग एक हजार परवाने खतौनी पर अंकित किए जाने शेष हैं। जिसके लिए दोनों टीम युद्धस्तर पर जुटी हुई हैं।

तहसीलदार शशांक नाथ उपाध्याय ने बताया अब तहसील की किसी भी कोर्ट से आदेश होते ही ई परवाने अपने आप जेनरेट हो जाएंगे। फिर यह ई परवाने अब से सीधे आरके के पोर्टल पर पहुंच जाएंगे। जहां बिना किसी तामझाम के आरके की डिजिटल की लगते ही खतौनी पर परवाने की अमलदरामद हो जाएगी। इस तरह अब परवाने लटके रहने से उनके अमल दरामद के लिए किसानों को कोई समस्या नही होगी। अधिवक्ताओं को भी इस कार्य के लिए पैरवी नही करनी पड़ेगी।

कार्रवाई में लापरवाही बरतने पर दो चौकी प्रभारी लाईन हाजिर

मोहनलालगंज। युवती से गैंगरेप की शिकायत पर कार्रवाई में लापरवाही बरतने के आरोप में दो चौकी इंचार्ज लाइन हाजिर कर दिए गए। डीसीपी ने गैंगरेप की जांच एसीपी मोहनलालगंज को सौंपी है। हालांकि पुलिस अब तक आरोपियों को गिरफ्तार नही कर सकी है। गोसाईंगंज के एक गांव में 14 मार्च को दुकान जा रही मंदबुद्धि युवती को अगवा कर दो युवकों ने सुनसान जगह पर ले जाकर उसके साथ गैंगरेप किया। फिर लोगों तो आता देख वहां से भाग निकले। बेटी के साथ हुई हैवानियत की शिकायत लेकर पीड़ित पिता नई जेल और खुझौली पुलिस चौकी के चक्कर काटता रहा लेकिन सीमा विवाद में उलझी पुलिस एक दूसरे पर जिम्मेदारी डालकर पीड़ित परिवार को टरकाती रही। थकहार कर पीड़ित पिता ने शनिवार को सम्पूर्ण समाधान दिवस पहुंचकर एडीएम सिविल सप्लाई ज्योति गौतम से पूरे मामले की शिकायत दर्ज कराई। मामला सोशल मीडिया में वायरल होते ही हड़कंप मच गया। पुलिस कर्मियों की लापरवाही बेपर्दा हुई तो डीसीपी साउथ निपुण अग्रवाल ने पीड़ित परिवार से जानकारी लेने के बाद नई जेल चौकी इंचार्ज और खुझौली चौकी इंचार्ज दोनों को लाइन हाजिर कर दिया। गोसाईंगंज में पीड़ित परिवार की तहरीर पर एफआईआर दर्ज कराने के बाद डीसीपी ने एसीपी रजनीश वर्मा को पूरे मामले की जांच सौंपी है। एसीपी ने बताया कुछ लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए तीन टीम गठित की गई है। दोषियों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी।

'सार्वभौमिक मानव मूल्यों' पर ऑनलाइन लघु अवधि पाठ्यक्रम का शुभारंभ आज से

लखनऊ। लविवि, विवि अनुदान आयोग के निर्देशानुसार एवं सार्वभौमिक मानव मूल्य पर इंडक्शन कार्यक्रम के लिए राष्ट्रीय समन्वय समिति के सहयोग से 17 मार्च से 22 मार्च 2025 तक छह दिवसीय ऑनलाइन लघु अवधि पाठ्यक्रम का आयोजन कर रहा है। यह कार्यक्रम कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय के नेतृत्व में मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र द्वारा मूल्य-आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने की पहल के तहत आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के निदेशक प्रो. कमल कुमार एवं कार्यक्रम समन्वयक डॉ. मनीषा शुक्ला हैं। कार्यक्रम का उद्घाटन 17 मार्च को यूजीसी के अध्यक्ष प्रो. एम. जगदीश कुमार ममिडाला मुख्य अतिथि के रूप में करेंगे। साथ ही, यूजीसी, एआईसीटीई एवं एनसीसीआईपी के वरिष्ठ अधिकारी भी प्रमुख वक्ता के रूप में कार्यक्रम में भाग लेंगे। पाठ्यक्रम का उद्देश्य शिक्षा में सार्वभौमिक मानव मूल्यों का एकीकरण करना है, जो नैतिक, मानवीय एवं समग्र शिक्षण को बढ़ावा देने की यूजीसी की पहल के अनुरूप है। इस बात पर चर्चा की जाएगी कि शिक्षण और अकादमिक प्रणाली में मानवीय मूल्यों को कैसे समाहित किया जाए और इन्हें व्यावसायिक शिक्षण प्रथाओं का हिस्सा बनाया जाए।

डिस्टेंस एजुकेशन के तहत एलयू में दाखिले के लिए आवेदन आज से

लखनऊ। लविवि के आनलाइन एवं दूरस्थ शिक्षा केन्द्र में सत्र फरवरी 2025 हेतु बीकाम, बीबीए, एमकाम, एमए संस्कृत, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, अंग्रेजी, एमएसडब्ल्यू की प्रवेश प्रक्रिया 17 मार्च से आरंभ होने जा रही है। बीबीए पाठ्य क्रम 3 वर्ष (6 सेमेस्टर) का तथा शेष परास्नातक पाठ्यक्रम 2 वर्ष (4 सेमेस्टर) की अवधि के हैं। इसके अतिरिक्त केन्द्र में इस सत्र से एम बी ए पाठ्यक्रम में भी प्रवेश प्रक्रिया आरंभ हो रही है, यह पाठ्यक्रम भी द्विवर्षीय (चार सेमेस्टर)है। इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्रक्रिया 30 मार्च तक पूर्ण की जानी है। इस संबंध में कार्रवाई शीघ्र आरंभ होने वाली है। पूर्व में सत्र 2023-24 से लखनऊ विश्वविद्यालय आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया प्रारंभ कर चुका है। 2023-24 के लिए फरवरी 2024 से बीकॉम तथा एमकॉम पाठ्यक्रम ऑनलाइन माध्यम से संचालित हो रहे है। नवंबर 2024 से बीबीए, तथा परास्नातक स्तर पर अंग्रेजी, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र , एम एस डब्ल्यू आदि पाठ्यक्रम भी आनलाइन माध्यम से संचालित हो रहे हैं। फरवरी 2024 सत्र के प्रथम सेमेस्टर की परीक्षाएं सितंबर 2024 में आफलाइन संपन्न करवाई जा चुकी हैं तथा द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षाएं और नवंबर में नवप्रवेशित छात्र छात्राओं की प्रथम सेमेस्टर की परीक्षाएं अप्रैल में प्रस्तावित हैं।

मेधावियों को 'गाँव की शान' कार्यक्रम के तहत किया गया सम्मानित

● 111वां 'आपका विधायक आपके द्वार' शिविर का आयोजित

लखनऊ। सरोजनी नगर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह द्वारा रविवार को ग्राम पंचायत बेंती के मजरा नरेरा में 111वें साप्ताहिक 'आपका विधायक . आपके द्वार' जन सुनवाई शिविर का आयोजन किया गया। इस दौरान क्षेत्रीय जनता की समस्याओं को सुना गया और उनके समाधान के लिए आवश्यक कदम उठाए गए। शिविर के दौरान ग्रामीणों ने बिजली, पानी, सड़क, स्ट्रीट लाइट, आवास योजना, पीएम सम्मान निधि, आयुष्मान योजना का लाभ जैसी समस्याओं और आवश्यकताओं से अवगत कराया, जिनमें से कुछ समस्याओं का समाधान मौके पर ही किया गया। 'गाँव की शान' मेधावियों का सम्मान, ग्राम के होनहार छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विधायक द्वारा 'गाँव की शान' पहल संचालित है। शिविर के दौरान इस पहल के अंतर्गत इंटरमीडिएट मधुलता 81 प्रतिशतऔर राहुल यादव 61 प्रतिशत तथा हाईस्कूल अंशू कुमार 73.5 प्रतिशत और श्रीयाशी 71.5 प्रतिशत को साइकिलए घड़ी व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गयाए ताकि वे और अधिक मेहनत से आगे बढ़ें और दूसरे छात्र . छात्राओं के लिए प्रेरणा बनें।

ग्राम के वरिष्ठ व प्रबुद्ध जनों का सम्मान गाँव की संस्कृति और समाज को संवारने वाले वरिष्ठ नागरिकों एवं प्रबुद्ध जनों को विधयाक डॉण् राजेश्वर सिंह की ओर से अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वाले गणमान्य व्यक्तियों में रामरती, उषा, लक्ष्मी, राजरानी, बेबी शुक्ला, सोनी, गुलाबदेई, राजू शुक्ला, चन्द्रकांत, पुत्तीलाल, चंचल, चन्द्र भान, विजय यादव, हरि प्रसाद यादव, रामदेव, सूरजपाल, जानकी, छेछ्ना, रेखा, धनीराम, विकास यादव, ओमप्रकाश, नन्हेलाल, मुन्नी सहित कई अन्य सम्मानित लोग शामिल रहे।

खेल संसाधनों के विकास की दिशा में कदम रू ग्राम के युवाओं को खेलकूद की सुविधाएँ उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 68वें गर्ल्स यूथ क्लब का गठन किया गया। इस क्लब के माध्यम से आउटडोर एवं इंडोर खेलों की स्पोर्ट्स किट प्रदान की गईए जिससे क्षेत्र की खेल प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का अवसर मिल सके।

'ताराशक्ति नि:शुल्क रसोई' 20 महीनों से सेवा में समर्पित . विगत 20 महीनों से ताराशक्ति नि:शुल्क रसोई लगातार जरूरतमंदों को ताजा और पौष्टिक भोजन उपलब्ध करा रही है। इस शिविर के दौरान भी सभी उपस्थित क्षेत्रवासियों को भोजन कराया गया। 'आपका विधायक . आपके द्वार' सिर्फएक कार्यक्रम नहीं, बल्कि सेवा, समाधान और समर्पण का संकल्प है। यह पहल जन.जन तक पहुँचकर उनकी समस्याओं का निस्तारण सुनिश्चित कर रही है।

प्रदूषण से जंग, रिंग रोड धूल मुक्त होगा : सीएम

मुख्यमंत्री ने विशेष अभियान चलाने के लिए नगर निगम और पीडब्ल्यूडी को दिए निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली सरकार ने राजधानी में वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने और पर्यावरण सुधार के लिए बड़े स्तर पर अभियान शुरू कर दिया है। इस अभियान के तहत पूरी रिंग रोड को डस्ट फ्री बनाने और सड़कों के किनारे पौधे लगाने तथा ट्रैफिक जाम को कम करने के लिए व्यापक योजना तैयार की गई है। इस संबंध में मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने रविवार को कई ठोस कदम उठाने के साथ ही सभी संबंधित एजेंसियों को दिशा निर्देश जारी किए हैं।

सीएम रेखा गुप्ता ने बताया कि दिल्ली में वायु प्रदूषण की समस्या से निपटने के लिए सरकार ने ठोस और कड़े कदम उठाने शुरू कर दिए हैं। सरकार ने विभिन्न उपायों की समीक्षा करते हुए सभी संबंधित विभागों को तत्काल प्रभाव से प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। सीएम रेखा गुप्ता ने वायु प्रदूषण नियंत्रण कार्ययोजना के बारे में अधिक जानकारी देते हुए बताया कि दिल्ली को स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त बनाना हमारी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। सरकार वैज्ञानिक और सतत उपायों के माध्यम से वायु गुणवत्ता में सुधार के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। सड़क किनारे हरित पट्टी विकसित करने, आधुनिक तकनीकों से धूल नियंत्रण करने और सार्वजनिक परिवहन को सुदृढ़ बनाने के साथ, हम दिल्लीवासियों को एक साफ़, स्वस्थ और हरा-भरा भविष्य देने के लिए तत्पर हैं। इसी दिशा में सरकार ने एमसीडी, पीडब्लूडी , डीडीए और अन्य सम्बंधित रोड ओनिंग एजेंसियो को रोड के किनारे पौधे लगाने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री ने बताया कि दिल्ली में धूल प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए पूरी रिंग रोड को डस्ट फ्री बनाया जाएगा। जिसके लिए रिंग रोड पर रेगुलर मैकेनाइज्ड रोड स्वीपिंग के साथ ही सड़क किनारे धूल के जमाव को रोकने के लिए वॉटर स्प्रिंकलर्स का इस्तेमाल होगा। इसके साथ ही निर्माण स्थलों पर डस्ट कंट्रोल मैनेजमेंट को सख्ती से लागू किया जाएगा और पीयूसी के सघन जांच के निर्देश भी दिए गए है।

सीएम रेखा गुप्ता ने कहा कि दिल्ली में ट्रैफिक जाम की समस्या को हल करने के लिए राजधानी की 250 प्रमुख सड़कों को चिन्हित किया गया है और सभी सम्बंधित विभागों को निर्देश दिए गए है वह दिल्ली ट्रैफिक पुलिस की मदद से ट्रैफिक जाम के कारणों का निदान करने के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही प्रमुख जंक्शनों पर ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम को बेहतर किया जाएगा। इसके साथ ही दिल्ली में सार्वजनिक परिवहन को अधिक कुशल बनाने के लिए डीटीसी बसों की रूट रेशनलाइजेशन योजना पर भी काम किया जाएगा। इससे सार्वजनिक परिवहन को अधिक सुविधाजनक बनाया जाएगा और निजी वाहनों पर निर्भरता कम होगी, जिससे प्रदूषण में कमी आएगी। सार्वजनिक बसों की रियल टाइम मॉनिटरिंग के लिए कन्ट्रोल रूम बनाया जा रहा है। सीएम ने बताया, दिल्ली को स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त बनाना हमारी प्राथमिकता है। सरकार इसके लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। सड़क किनारे हरित पट्टी विकसित करने, ट्रैफिक सुधार और सार्वजनिक परिवहन को अधिक सुचारू बनाने से राजधानी की वायु गुणवत्ता में बड़ा सुधार होगा। दिल्ली सरकार पर्यावरण सुधार और प्रदूषण नियंत्रण के लिए केंद्र सरकार, विभिन्न एजेंसियों और आम जनता के सहयोग से ठोस कदम उठाने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

नालों की सफाई के लिए बनेगी रणनीति

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने रविवार को उपराज्यपाल वीके सक्सेना संग प्रमुख नालों का निरीक्षण किया। फोटो: रंजन डिमरी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने रविवार को शहर के प्रमुख नालों की स्थिति का निरीक्षण किया और अधिकारियों को मानसून से पहले इनकी सफाई सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। मुख्यमंत्री के साथ उपराज्यपाल वी के सक्सेना, लोक निर्माण विभाग मंत्री प्रवेश वर्मा और अन्य अधिकारी भी थे।

गुप्ता ने निकासी प्रणाली की अनदेखी करने के लिए पिछली सरकारों की आलोचना करते हुए कहा कि इसके कारण सड़कों पर जलभराव हुआ। मुख्यमंत्री ने कहा, पिछली सरकारों ने इन नालों को गंभीरता से नहीं लिया। जब इन जैसे बड़े नालों की सफाई नहीं की जाती तो जल-मल का सड़कों पर बहना स्वाभाविक है। उन्होंने बरसात के मौसम में सड़कों पर पानी भरने से रोकने के लिए तत्काल कदम उठाए जाने की आवश्यकता पर जोर दिया। गुप्ता ने सुनहरी, बारापुला और कुशक नालों की स्थिति का निरीक्षण किया तथा पाया कि उनके रखरखाव के लिए जिम्मेदार विभिन्न एजेंसी के बीच समन्वय की कमी है।

● सीएम रेखा ने अधिकारियों को मानसून से पहले सफाई सुनिश्चित करने के दिए निर्देश

उन्होंने कहा, विभिन्न एजेंसी के बीच इस बात को लेकर कोई स्पष्टता नहीं थी कि नालों की सफाई और रखरखाव कौन करेगा। हमने अब यह जिम्मेदारी बाढ़ और सिंचाई विभाग को दे दी है। नालों से समय पर गाद निकालने की जिम्मेदारी इसी एजेंसी की होगी। इस काम के लिए एक योजना बनाई जाएगी और बजट आवंटित किया जाएगा।

गुप्ता ने कहा कि पहले से तैयारी करना महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा, इन नालों को मानसून से पहले साफ किया जाना चाहिए, ताकि उनमें बारिश के दौरान पानी न भरे। एक दिन में कुछ नहीं होता। हमें प्रदूषण से निपटने के लिए गर्मियों की कार्ययोजना और सर्दियों की योजना आज से ही शुरू करनी होगी।

उन्होंने कुशल शासन सुनिश्चित करने के लिए अपनी सरकार की रणनीति को भी रेखांकित किया। गुप्ता ने कहा, सभी मंत्रियों को मिशन दिए गए हैं और हमारे सभी विधायकों को लोक कार्यों में लगाया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि उन्होंने सुनिश्चित किया है कि जलभराव को रोकने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएंगे। उन्होंने कहा कि यह एक ऐसी समस्या है जिसके कारण पिछले मानसून में शहरवासियों को काफी समस्याओं का सामना करना पड़ा था। दिल्ली की जल निकासी व्यवस्था की स्थिति हाल के विधानसभा चुनाव में एक प्रमुख मुद्दा थी। इस चुनाव में भाजपा ने आम आदमी पार्टी (आप) को हराया था। भाजपा ने 70 में से 48 सीट जीतीं जबकि आप को केवल 22 सीट पर जीत मिली।

आवारा सांड के हमले में फल विक्रेता की मौत

नई दिल्ली। नई दिल्ली बाहरी-उत्तरी दिल्ली के नरेला इलाके में एक आवारा सांड के हमले में 54 वर्षीय फल विक्रेता की मौत हो गई। पुलिस ने यह जानकारी दी।

पुलिस ने बताया कि मृतक की पहचान सनाउल्ला के रूप में हुई है। उनके परिवार में उनकी पत्नी, चार बेटियां और दो बेटे हैं। वह इसी इलाके में रहते हैं। मृतक के भाई खुर्शीद अनवर ने बताया कि जब वह शाम करीब चार बजे पॉकेट 13 के पास अपना ठेला ले जा रहे थे तो उस दौरान कुछ आवारा पशु वहां से गुजर रहे थे।

पुलिस ने बताया कि अचानक एक सांड ने सनाउल्लाह पर हमला कर दिया, जिससे वह हवा में उछल गए, उनके सिर पर गंभीर चोट लगी और बहुत खून बहने लगा। उसने बताया कि स्थानीय लोगों ने जानवरों को भगाया और सनाउल्लाह को पास के अस्पताल ले गए जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और जांच शुरू कर दी है।

निगम ने स्कूलों को 8.5 करोड़ की राशि जारी की

● कहा, शिक्षा का अधिकार अधिनियम के अंतर्गत अपनी हर जिम्मेदारी का करेंगे निर्वहन

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली नगर निगम ने शिक्षा का अधिकार अधिनियम के अंतर्गत अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए निगम के अधिकार क्षेत्र में आने वाले मान्यता प्राप्त निजी सहायता रहित विद्यालयों को आर्थिक रूप से कमजोर एवं वंचित वर्ग से आने वाले छात्रों के लिए प्रति छात्र खर्च की प्रतिपूर्ति के लिए लगभग 8.5 करोड़ की राशि जारी कर दी है। दिल्ली नगर निगम ने शहरी सदर पहाड़गंज क्षेत्र के 4, केशवराम क्षेत्र के 7, नजफगढ़ क्षेत्र के 23, रोहिणी क्षेत्र के 17, दक्षिणी क्षेत्र के 10, नरेला क्षेत्र के 17 एवं पश्चिमी क्षेत्र के 47 मान्यता प्राप्त निजी सहायता रहित विद्यालयों को राशि आवंटित की है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम के अंतर्गत प्राथमिक विद्यालयों के लिए वार्षिक फीस के लिए प्रति छात्र 26908 रुपए एवं 1100 रुपए वर्दी अथवा विद्यालय द्वारा इस मद में किए गए वास्तविक खर्च, इनमें से जो भी राशि कम हो का भुगतान विद्यालय को किया जाता है। दिल्ली नगर निगम शिक्षा का अधिकार अधिनियम के अंतर्गत छात्रों के शिक्षा के मौलिक अधिकार के सफल निष्पादन हेतु अपनी जिम्मेदारी के प्रति प्रतिबद्ध है।

दिल्ली में आगामी सप्ताह से शुरू होगा संगठन पर्व : वीरेंद्र सचदेवा

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा है की दिल्ली भाजपा की संगठनात्मक पुनर्गठन की प्रक्रिया जिसे हम संगठन पर्व के रूप में देखते हैं वह आगामी सप्ताह से प्रारम्भ होगी।

इसके लिए राष्ट्रीय चुनाव अधिकारी ने दिल्ली के लिए महेंद्र नागपाल को चुनाव अधिकारी नियुक्त किया है और साथ ही दो सह चुनाव अधिकारी डा. योगेश आत्रेय एवं विजय सोलंकी को भी नियुक्त किया है। वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की भाजपा सामूहिक नेतृत्व से चलने वाली पार्टी है पर इसी के हम पार्टी में आंतरिक लोकतंत्र भी सुनिश्चित करते हुए हर कार्यकर्ता को संगठनात्मक संरचना से जुड़ने का अवसर देते हैं। सचदेवा ने कहा की संगठनात्मक संरचना प्रक्रिया के अंतर्गत बूथ समिति, मंडल समिति, जिला समिति से होते हुए प्रदेश समिति तक का चुनाव अवसर दिया जायेगा।

केजरीवाल की जमानत को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई आज

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय आबकारी नीति से जुड़े कथित धन शोधन मामले में पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की जमानत को चुनौती देने वाली प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की याचिका पर सोमवार को सुनवाई करेगा। यह याचिका न्यायमूर्ति रविंदर डुडेजा के समक्ष सुनवाई के लिए सूचीबद्ध है। इससे पहले जांच एजेंसी के वकील द्वारा अनुरोध किए जाने पर अदालत ने सुनवाई स्थगित कर दी थी।

केजरीवाल के वकील ने दलील दी थी कि उनकी जमानत बरकरार रखी जाए क्योंकि अन्य सभी आरोपियों को धनशोधन मामले में पहले ही जमानत मिल चुकी है। उच्चतम न्यायालय ने पिछले साल 12 जुलाई को धनशोधन मामले में केजरीवाल को अंतरिम जमानत दी थी।

गांधी नगर में कपड़े की दुकान में लगी आग

नई दिल्ली। पूर्वी दिल्ली के गांधी नगर बाजार में रविवार को एक कपड़े की दुकान में आग लग गई। दिल्ली अग्निशमन सेवा विभाग के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि घटना में कोई घायल नहीं हुआ।

उन्होंने बताया, हमें सुबह दस बजकर 20 मिनट पर कपड़े की एक दुकान में आग लगने की सूचना मिली, जिसके बाद दो दमकल गाड़ियां मौके पर भेजी गईं। अधिकारी ने बताया कि आग बुझाने में अग्निशमन कर्मियों को लगभग आधे घंटे का समय लगा।

दुर्व्यवहार पर वकील को निशुल्क सेवा देने का आदेश

● अदालत ने कहा, अनावश्यक आक्रामक और ऊंची आवाज में बात करना बर्दाश्त नहीं किया जाएगा

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली उच्च न्यायालय ने निचली अदालत के समक्ष दुर्व्यवहार करने वाले एक वकील को यौन अपराधों से बाल संरक्षण (पॉक्सो) अधिनियम के कम से कम दो मामलों में निशुल्क सेवा देने का निर्देश देते हुए कहा कि अनावश्यक आक्रामकता और ऊंची आवाज में बात करना बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। न्यायमूर्ति प्रतिभा एम. सिंह की अध्यक्षता वाली पीठ ने वकील के खिलाफ शुरू की गई अवमानना कार्यवाही पर विचार करते हुए यह निर्देश दिया, जिन्होंने बाद में बिना शर्त माफी मांगी थी। माफी स्वीकार करते हुए पीठ ने कहा, हालांकि, प्रतिवादी को एएसजे (पॉक्सो के लिए विशेष अदालत) दक्षिण पूर्व जिला, साकेत अदालत में कम से कम दो आरोपियों/पीड़ितों को निशुल्क सेवाएं प्रदान करनी होंगी। अदालत ने कहा कि संबंधित न्यायाधीश निशुल्क सेवाएं प्रदान करने के लिए कम से कम दो मामलों में उन्हें वकील नियुक्त करेंगे। पीठ ने 12 मार्च के अपने आदेश में कहा, अदालत में अनावश्यक आक्रामकता और तेज आवाज में बात करना बर्दाश्त नहीं किया जा सकता, जो अनादर दर्शाता है। वकीलों को अदालत कक्ष में शिष्टाचार बनाए रखना चाहिए।

दिल्ली विधानसभा को कल संबोधित करेंगे ओम बिरला

● दो दिवसीय प्रशिक्षण में विधायकों के विधायी कौशल का होगा विकास : विजेंद्र

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली विधान सभा को मंगलवार 18 मार्च को लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला नवनिर्वाचित विधायकों के दो दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम का उद्घाटन करेंगे और कार्यक्रम को संबोधित करेंगे।

कार्यकम का उद्देश्य विधायकों को संसदीय प्रक्रिया, आचार संहिता और सुशासन की सर्वोत्तम प्रथाओं की जानकारी प्रदान करना है। यह कार्यक्रम विधानसभा सदन के सभागार में होगा। इस उद्घाटन सत्र में विधान सभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता, उपाध्यक्ष मोहन सिंह बिष्ट, मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और नेता प्रतिपक्ष आतिशी समेत कई गणमान्य लोग मौजूद रहेंगे। कार्यक्रम के महत्व पर प्रकाश डालते हुए विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि यह अभिविन्यास कार्यक्रम हमारे विधायकों की विधायी क्षमताओं को सुदृढ़ करने की एक महत्वपूर्ण पहल है। इससे उन्हें संसदीय प्रक्रियाओं, विधायी मसौदा तैयार करने और सार्थक बहसों की महत्ता को समझने में सहायता मिलेगी, जिससे वे विधानसभा में प्रभावी रूप से भाग ले सकें।

कॉलेजों में प्रबंध समिति के लिए सीएम से नाम भेजने की मांग

नई दिल्ली। फोरम ऑफ एकेडेमिक्स फॉर सोशल जस्टिस (शिक्षक संगठन) के चेयरमैन डॉ. हंसराज सुमन ने मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता व शिक्षा मंत्री आशीष सूद को पत्र लिखकर दिल्ली सरकार के वित्त पोषित 28 कॉलेजों की गवर्निंग बॉडी बनाने के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलसचिव/ कुलपति को नाम भेजने की मांग की है।

हंसराज सुमन ने कहा कि इसके बाद दिल्ली सरकार के 12 कॉलेजों में प्रबंध समिति बनने के बाद शिक्षकों की स्थायी नियुक्ति की प्रक्रिया शुरू की जा सके। बता दें कि इन कॉलेजों में लगभग 600 शिक्षकों की स्थायी नियुक्ति की जानी है। दिल्ली सरकार अपने चार कॉलेज अदिति महाविद्यालय , भाष्कराचार्य कॉलेज , दीनदयाल उपाध्याय कॉलेज व आचार्य नरेंद्रदेव कॉलेज ने शिक्षकों के पदों को भरने के लिए विज्ञापन जारी कर चुकी हैं। बाकी कॉलेजों ने अभी तक अपना रोस्टर पास नहीं कराया है , रोस्टर पास होने के बाद ही पदों को विज्ञापित किया जाता है ।

नेपाल में मोबाइल की तस्करी करने वाले गिरोह का भंडाफोड़, एक धरा

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

दिल्ली पुलिस ने चोरी के मोबाइल फोन की नेपाल में तस्करी करने वाले एक गिरोह में शामिल एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। एक अधिकारी ने रविवार को यह जानकारी दी।

अधिकारी ने बताया कि आरोपी की पहचान उत्तराखंड के बनबसा निवासी नदीम (45) के रूप में हुई है और उसे शनिवार को नेपाल जाने वाली बस में चढ़ने की कोशिश करते समय आईएसबीटी आनंद विहार से पकड़ा गया।

उसके कब्जे से एप्पल आईफोन और सैमसंग गैलेक्सी मॉडल सहित कुल 32 उच्च गुणवत्ता वाले मोबाइल फोन बरामद किए गए। पुलिस अधिकारी के अनुसार, नदीम चोरी के फोनों के लिए कूरियर का काम करता था। वह दिल्ली में झपटमारों से चुराए गए फोन नेपाल पहुंचाता था। अधिकारी ने बताया, नेपाली बस परिचालक नरेंद्र भट नदीम के काम में मदद करता था।

नरेन्द्र उसे यात्रा खर्च के साथ-साथ प्रति फोन 200 रुपए देता था। पिछले कई महीनों में नदीम ने सीमा पार तस्करी से पहले करोल बाग और आस-पास के इलाकों से चोरी किए गए फोन इकट्ठा करने के लिए दिल्ली की कई यात्राएं कीं। उन्होंने कहा कि दिल्ली पुलिस इस गिरोह पर नजर रख रही थी। उन्होंने कहा कि गिरोह के अन्य सदस्यों की पहचान के लिए आगे की जांच जारी है।

संक्षिप्त समाचार

रविवार को खिली धूप, वायु गुणवत्ता संतोषजनक

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी में रविवार सुबह धूप खिली रही और शहर की वायु गुणवत्ता संतोषजनक श्रेणी में दर्ज की गई। वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) के अनुसार, सुबह नौ बजे वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 89 रहा। वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने बताया कि दिल्ली में शनिवार को पिछले तीन वर्ष में एक जनवरी से 15 मार्च के बीच किसी भी दिन की तुलना में सबसे स्वच्छ वायु गुणवत्ता रही। मौसम विभाग ने बताया कि रविवार को दिल्ली का न्यूनतम तापमान 18 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो इस मौसम के औसत तापमान से 2.9 डिग्री सेल्सियस अधिक है। इसने कहा कि आज दिन में बादल छाए रहने, हल्की बारिश होने तथा अधिकतम तापमान 32 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने का अनुमान है।

विदेशी ई-कॉमर्स के खिलाफ कार्रवाई को सराहा

नई दिल्ली। कंफेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय महामंत्री और चांदनी चौक से सांसद प्रवीन खांडेलवाल ने भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) द्वारा अमेज़न, फ्लिपकार्ट और बिगबास्केट जैसे प्रमुख ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के खिलाफ गैर-अनुपालन वाले उत्पादों की बिक्री पर की गई सख्त कार्रवाई की सराहना की है। बीआईएस की इस कड़ी प्रवर्तन कार्रवाई की सराहना करते हुए, खंडेलवाल ने इन विदेशी पूंजी से संचालित ई-कॉमर्स कंपनियों की आलोचना की, जो बार-बार भारतीय कानूनों का उल्लंघन कर रही हैं। उन्होंने क्रिक कॉमर्स कंपनियों पर भी नियमों के उल्लंघन और देशभर के छोटे व्यापारियों को नुकसान पहुंचाने का आरोप लगाया। खंडेलवाल ने घोषणा की कि वह जल्द ही केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल और उपभोक्ता मामलों के मंत्री प्रह्लाद जोशी से मुलाकात करेंगे। वह सरकार से ई-कॉमर्स और क्रिक-कॉमर्स दोनों के लिए ठोस नीतियों और सख्त नियमों को लागू करने की मांग करेंगे ताकि भारतीय कानूनों का पूरी तरह से अनुपालन सुनिश्चित हो। उन्होंने उपभोक्ता सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता बताते हुए कहा कि जो भी कंपनी अनिवार्य बीआईएस मानकों की अवहेलना करती है, उसे कठोर दंड मिलना चाहिए।

अजीमगंज सराय के जीर्णोद्धार में देरी

नई दिल्ली। दिल्ली के राष्ट्रीय प्राणी उद्यान (चिड़ियाघर) में स्थित मुगलकालीन स्मारक अजीमगंज सराय के जीर्णोद्धार के प्रयासों में चिड़ियाघर प्राधिकारियों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों के कारण देरी हो गई है। कला, संस्कृति और भाषा विभाग (एसीएल) के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। एक अधिकारी ने बताया कि स्मारक की मरम्मत के लिए कई बार अनुमति मांगी गई, लेकिन संरक्षण कार्य शुरू नहीं हो सका, जिसके कारण इसकी स्थिति बदतर होती जा रही है। हालांकि, चिड़ियाघर प्रशासन ने इन दावों को खारिज करते हुए कहा कि उन्हें इस संबंध में कोई प्रस्ताव नहीं मिला है। चिड़ियाघर के एक अधिकारी ने कहा, हमें कोई नया अनुरोध या प्रस्ताव नहीं मिला है। अजीमगंज सराय को दिल्ली सरकार के पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित स्मारक घोषित किया गया है।

नई पहल: यात्रियों के साथ माल ढुलाई भी करेगी दिल्ली मेट्रो

● डीएमआरसी और ब्लू डार्ट के बीच शहरी लॉजिस्टिक्स सेवा के लिए हुआ समझौता

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

समझौता हस्ताक्षर के दौरान दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन और ब्लू डार्ट के अधिकारी।

दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन (डीएमआरसी) और भारत में ब्लू डार्ट के बीच शहरी लॉजिस्टिक्स सेवा के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

यह सेवा डीएमआरसी और भारत के प्रमुख एक्सप्रेस लॉजिस्टिक्स सेवा प्रदाता ब्लू डार्ट के बीच होने वाले महत्वपूर्ण सहयोग का हिस्सा है। अपनी तरह की पहली यह अभिनव पहल, पूरे दक्षिण एशिया प्रशांत क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण और अधिक टिकाऊ लॉजिस्टिक्स समाधानों को बढ़ावा देने के लिए डीएमआरसी और ब्लू डार्ट दोनों की प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करती है। इस सहयोग के तहत, ब्लू डार्ट कम भीड़भाड़ वाले घंटों के दौरान मेट्रो ट्रेनों के माध्यम से कार्गो का परिवहन करते हुए, समय-पर पहुंचाने वाले शिपमेंट की तीव्र और अधिक विश्वसनीय मूवमेंट सुनिश्चित करने के लिए उपलब्ध क्षमता का उपयोग करेगा। इस अभिनव समाधान से सड़क परिवहन पर निर्भरता कम होगी, भीड़भाड़ कम होगी और वाहनों से होने वाले उत्सर्जन पर अंकुश लगेगा। साथ ही, डीएमआरसी पर्यावरण के अनुकूल परिवहन समाधानों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत करते हुए अपने संसाधनों का अनुकूलन करेगी। मेट्रो प्रणालियां, वैश्विक स्तर पर स्थिरता को बढ़ावा देते हुए राजस्व उत्पन्न करने के लिए अपनी अतिरिक्त क्षमता का उपयोग करने के तरीके खोज कर रही हैं। उदाहरण के लिए, मेड्रिड मेट्रो ने मेट्रो ट्रेनों के माध्यम से पार्सल परिवहन के लिए लॉजिस्टिक पार्टनर्स के साथ मिलकर पायलट प्रोजेक्ट की शुरूआत की है, जिससे सड़क यातायात और प्रदूषण में कमी आएगी।

डीएमआरसी अर्बन फ्रेट ट्रांसपोर्टेशन की जानकारियों और श्रेष्ठ कार्यप्रक्रियाओं का आदान-प्रदान करने के लिए मेड्रिड मेट्रो के साथ सक्रिय रूप से जुड़ रही है। मेट्रो-सक्षम लॉजिस्टिक्स समाधानों और माइक्रो पार्सल हब के माध्यम से फर्स्ट-माइल और लास्ट-माइल कनेक्टिविटी को एकीकृत करके यह परियोजना सड़कों पर होने वाली भीड़भाड़ और शहरी प्रदूषण को कम करते हुए सप्लाई चेन की दक्षता को बढ़ाती है। इस पहल के तहत, डीएमआरसी दिल्ली-एनसीआर में एक स्थायी अर्बन फ्रेट नेटवर्क स्थापित करने के लिए अपने स्टेशनों और ट्रैक्स का लाभ उठा रहा है। यह सहयोग परिचालनिक चुनौतियों पर काबू पाने और अर्बन कार्गो मूवमेंट को सुदृढ़ करने के लिए सर्वश्रेष्ठ वैश्विक कार्यप्रक्रियाओं को अपनाने के महत्व पर प्रकाश डालता है। परियोजना के प्रभाव को बढ़ाने में विशेषज्ञता और बेंचमार्किंग का आदान-प्रदान महत्वपूर्ण होगा। इसका उद्देश्य परिचालन दक्षता को बढ़ावा देना, डिलीवरी की समय-सीमा को कम करना और मेट्रो परिसरों को लॉजिस्टिक्स हब में बदलकर कम कार्बन उत्सर्जन के साथ अर्बन फ्रेट सिस्टम्स को सपोर्ट करना है। अपने दीर्घकालिक दृष्टिकोण के तहत, डीएमआरसी इस कार्गो नेटवर्क को अन्य मेट्रो स्टेशनों तक विस्तारित करने की योजना बना रही है, जो स्थायी और निर्बाध फ्रेट ट्रांसपोर्टेशन में नए मानक स्थापित करेगा। डीएमआरसी और ब्लू डार्ट स्थिरता को नवाचार के साथ एकीकृत करके अर्बन लॉजिस्टिक्स को पुन: परिभाषित करेंगे, जिससे महानगरीय क्षेत्रों में कार्गो मूवमेंट के लिए एक हरित और अधिक कुशल भविष्य सुनिश्चित होगा।

भाजपा ने घोषित किए नवनिर्वाचित जिलाध्यक्षों के नाम

●प्रयागराज महानगर संजय गुप्ता, गंगापार निर्मला पासवान एवं यमुनापार राजेश शुक्ला हुए भाजपा के नए जिला अध्यक्ष

संवाददाता। प्रयागराज

भारतीय जनता पार्टी के द्वारा जिला पंचायत सभागार में नवनिर्वाचित जिलाध्यक्षों की सुनियोजित घोषणा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महामंत्री एमएलसी एवं संगठन पर्व के जिले के पर्यवेक्षक अनूप गुप्ता के नेतृत्व में प्रदेश संगठन के द्वारा जारी किए गए प्रयागराज महानगर से जिले के चुनाव अधिकारी राम शंकर कठेरिया ने संजय गुप्ता को गंगापार जिले के चुनाव अधिकारी विनोद राय ने गंगापार से निर्मला पासवान एवं यमुनापार के जिला चुनाव अधिकारी हरिचरण कुशवाहा ने यमुनापार से राजेश शुक्ला को नवनिर्वाचित जिला अध्यक्ष की घोषणा की।

इस अवसर नव निर्वाचित जिलाध्यक्षों को बधाई देते हुए प्रदेश महामंत्री अनूप गुप्ताने कहा कि भारतीय जनता पार्टी एकमात्र ऐसा राजनैतिक दल है जो लोकतांत्रिक प्रक्रिया को निष्ठा के साथ अपनाती है और लोकतांत्रिक व्यवस्था के अनुरूप संगठन का चुनाव बूथ से लेकर राष्ट्रीय अध्यक्ष तक का चयन करती है और कहा कि भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ताओं का दल है जिसे कार्यकर्ता ही सींचता है और कार्यकर्ताओं के बल पर विश्व की सबसे बड़ी पार्टी बनकर खड़ी है। जिसका राष्ट्र के प्रति बलिदान देने का इतिहास है। उन्होंने इस अवसर पर डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी पंडित दीनदयाल उपाध्याय पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई के विचारों को याद किया।

कहा कि नवनिर्वाचित सभी जिलाध्यक्ष सभी का साथ लेकर और सभी का विश्वास के साथ पार्टी को आगे बढ़े भारतीय जनता पार्टी के विचारों को आगे बढ़ाएं और आगामी 2027 में होने वाले विधानसभा के चुनाव में प्रचंड बहुमत के साथ भारतीय जनता पार्टी की विजय यात्रा रुकने न दे। इसके पूर्व प्रदेश मंत्री अनामिका चौधरी सांसद प्रवीण पटेल पूर्व सांसद रीता बहुगुणा जोशी नीरज त्रिपाठी विधायक हर्षवर्धन बाजपेई पीयूष रंजन निषाद दीपक पटेल गुरु प्रसाद मौर्य जिला पंचायत अध्यक्ष डॉ वी के सिंह निवर्तमान जिलाध्यक्ष गंगा पार कविता पटेल यमुनापार विनोद प्रजापति एवं प्रयागराज महानगर के निवर्तमान जिला अध्यक्ष राजेंद्र मिश्रा एवं पूर्व महापौर अभिलाषा गुप्ता नंदी पूर्व एमएलसी निर्मला पासवान ने कहा कि हमें पार्टी के निर्णय का स्वागत करते हुए एक होकर पार्टी के विचारधारा को आगे बढ़ाना है और नव निर्वाचित जिला अध्यक्षों के नेतृत्व में 2027 का चुनाव जिताना है।

कार्यक्रम का संचालन क्षेत्रीय उपाध्यक्ष एवं प्रदेश के शहर चुनाव अधिकारी कमलेश कुमार गौतम ने किया। कार्यक्रम के उपरांत प्रयागराज महानगर के अध्यक्ष संजय गुप्ता गंगापार जिलाध्यक्ष निर्मला पासवान एवं यमुनापार जिलाध्यक्ष राजेश शुक्ला पार्टी कार्यालय सिविल लाइन पहुंचकर कार्यभार संभालते हुए पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रतिमा पार्क पहुंचकर उनका आशीर्वाद लिया और मां गंगा का एवं लेटे हुए हनुमान जी का दर्शन किया और शीर्ष नेतृत्व के प्रति आभार जताया। जिला प्रवक्ता राजेश केसरवानी ने बताया कि नवनिर्वाचित प्रयागराज महानगर के अध्यक्ष संजय गुप्ता 55 वर्ष के हैं और वर्तमान में भाजपा पिछड़ा वर्ग मोर्चा के क्षेत्रीय महामंत्री रहे इसके पूर्व प्रयागराज महानगर के दो बार उपाध्यक्ष मंत्री और राजापुर से भाजपा के पार्षद रह चुके और 2019 में उनका नाम जिला अध्यक्ष के रूप में चल रहा था पर पार्टी ने उस समय गणेश केसरवानी को जिलाध्यक्ष बनाया था और 2023 में भी इनका नाम जिला अध्यक्ष के पद पर था पर राजेंद्र मिश्र को पार्टी ने जिला अध्यक्ष बनाया गया था।

गंगापार के मीडिया प्रभारी बृजेश त्रिपाठी ने बताया कि गंगापार की नवनिर्वाचित जिलाध्यक्ष निर्मला पासवान की उम्र 54 वर्ष है। इसके पूर्व वह विधान परिषद सदस्य रही क्षेत्र की उपाध्यक्ष रही एवं पार्षद रही और 2012 में चुनाव विधानसभा से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी रही।

विद्युतीकरण से बढ़ी रफ्तार, एनसीआर का अत्याधुनिक अवतार

संवाददाता। प्रयागराज

भारतीय रेलवे ने विद्युतीकरण की अपनी सौ साल की गौरवशाली यात्रा पूरी कर ली है। इस ऐतिहासिक सफर की शुरुआत तीन फरवरी 1925 को हुई थी। जब पहली बार बॉम्बे वीटी अब छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस से कुर्ला हार्बर तक 16 किलोमीटर की दूरी पर पहली विद्युत रेलगाड़ी चली। यह क्षण भारतीय रेलवे में इलेक्ट्रिक ट्रैक्शन की नींव रखने वाला साबित हुआ। हाल के वर्षों में भारतीय रेलवे ने ब्रॉडगेज विद्युतीकरण में ऐतिहासिक उपलब्धियां हासिल की हैं। जनवरी 2025 तक 64,547 रूट किलोमीटर का विद्युतीकरण पूरा कर लिया गया है और रेलवे सौ फीसद ब्रॉडगेज विद्युतीकरण के लक्ष्य की ओर तेज़ी से बढ़ रहा है।

उत्तर मध्य रेलवे ने अपने विद्युतीकरण की शुरुआत मुगलसराय डगमगपुर सेक्शन से की थी। इस 34 किलोमीटर लंबे सेक्शन को 25 मार्च 1965 को विद्युत ट्रैक्शन से जोड़ा गया था। यह उत्तर मध्य रेलवे के लिए एक महत्वपूर्ण कदम था। जिसने आगे चलकर रेलवे के इंफ्रा को औरअधिक सशक्त बनाया। उत्तर मध्य रेलवे भारतीय रेलवे की तीन सबसे महत्वपूर्ण हाई डेन्सिटी रेल मार्गों दिल्ली हावड़ा दिल्ली मुंबई और दिल्ली चेन्नई को जोड़ने में अहम भूमिका निभाता है। गाजियाबाद प्रयागराज मुगलसराय सेक्शन का विद्युतीकरण 1965 से 1976 के बीच पूरा हुआ। जिससे इस महत्वपूर्ण कॉरिडोर पर निर्बाध विद्युत संचालन संभव हुआ। इसके बाद 1984 में पलवल मथुरा सेक्शन का और 1984 से 1988 के बीच मथुरा झांसी बिना सेक्शन का विद्युतीकरण किया गया। जिससे रेलवे की परिचालन दक्षता में जबरदस्त सुधार हुआ।

उत्तर मध्य रेलवे सौ फीसद विद्युतीकरण हासिल करने वाला 5वां रेलवे ज़ोन विद्युतीकरण के इस सफर में एक और ऐतिहासिक उपलब्धि 21 अक्टूबर 2022 को प्राप्त हुई जब उत्तर मध्य रेलवे ने झांसी मंडल के ईशानगर उदयपुरा सेक्शन 76 रूट किलोमीटर का विद्युतीकरण पूरा कर लिया। इसके साथ ही उत्तर मध्य रेलवे भारतीय रेलवे का पांचवां पूर्ण विद्युतीकृत ज़ोन बन गया। इस उपलब्धि के तहत उत्तर मध्य रेलवे के सभी नए ब्रॉडगेज सेक्शन जिनमें गेज कन्वर्ज़न डबलिंग ट्रिपलिंग और क्वाड्रपलिंग प्रोजेक्ट शामिल हैं। इलेक्ट्रिक ट्रैक्शन के तहत लाए गए हैं। परिणामस्वरूप फरवरी 2025 तक इस ज़ोन में कुल 3293.49 रूट किलोमीटर और 7614.34 ट्रैक किलोमीटर का विद्युतीकरण पूरा किया जा चुका है।

नैनी में आयोजित होली मिलन समारोह में शामिल हुए मंत्री नंदी

प्रयागराज। प्रदेश के औद्योगिक विकास मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नन्दी ने रविवार को प्रयागराज शहर दक्षिणी विधानसभा क्षेत्र के नैनी मंडल के महेवा गंगोत्री नगर एडीए कॉलोनी रामलीला पार्क में होली मिलन समारोह के आयोजन में शामिल हुए। होली के रंग अपनों के संग भाजपा पदाधिकारियों सेक्टर संयोजकों बूथ अध्यक्षों पन्ना प्रमुखों एवं स्थानीय लोगों को अबीर गुलाल लगाकर होली के पावन पर्व की बधाई एवं शुभकामनाएं दी। मंत्री नन्दी ने कहा कि होली का यह पावन पर्व सभी के जीवन में सुख समृद्धि एवं वैभव लेकर आए यही कामना है। कार्यकर्ताओं और परिजनों के साथ होली खेली। इस अवसर पर लोगों ने एक दूसरे को अबीर गुलाल लगाकर होली की शुभकामना दी। मंत्री नंदी ने कहा कि शहर ही मेरा परिवार है। परिवार के साथ रंग पर्व की खुशियां मनाना बहुत सुखद है। उन्होंने कहा कि रंगों के पर्व होली को सामाजिक सौहार्द्र के प्रतीक के तौर पर मनाएं। अनिल केसरवानी किशोरी लाल जायसवाल सुमित वैश्य राघवेंद्र मिश्रा रणविजय सिंह मंडल अध्यक्ष रजत दुबे पूर्व मंडल अध्यक्ष दिलीप केसरवानी सेक्टर संयोजक प्रेम नारायण भारतीय विनोद दुबे धर्मेंद्र भारतीय मनोज गुप्ता एवं अन्य गणमान्य उपस्थित रहे।

होलिकोत्सव के उपलक्ष्य में कवि गोष्ठी का हुआ आयोजन

संवाददाता। सोनभद्र

गौरैया उत्सव ट्रस्ट सोनभद्र की ओर से संयोजक एडवोकेट आशीष पाठक के नगर स्थित आवास पर होलिकोत्सव कवि गोष्ठी का आयोजन डा श्री प्रकाश पाठक की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। वाणी वंदना करते हुए दिवाकर द्विवेदी मेघ ने मां शारदे वर दे हमें तव स्मरण करते रहें सुनाकर वंदना किया साथ ही वसंतोत्सव पर अपनी रचना शतरूपा के श्रृंगार दिवस मधुमास तेरा है, अभिनंदन सुनाकर वाहवाही बटोरी। ओज की सशक्त कवयित्री कौशल्या कुमारी चौहान ने, दुनियां में है सबसे प्यारा भारत देश हमारा सुनाकर राष्ट्र वंदना किया।

संचालक अशोक तिवारी ने जकड़ रहे हैं सवाल मुझको निगल न जाए ए जाल हमको सुनाया। कवि प्रदुम्न त्रिपाठी ने श्रृंगार की रचना,मीरा मोहन सी प्रीत लिख देना सबके होंठों पर गीत लिख देना मार मादक मगन वियोगिनि हिय साथ साजन हो जीत लिख देना सुनाया। जै राम सोनी ने अइसन होली के मौसम फागुनाहट फगुन में बुढ़वा देवर लागै सुनाया और देर तक हंसाते रहे। दयानंद दयालू ने समसामयिक रचना विरहन की पीर विरहन विरह में पड़ निहारे हो रामांअइले ना सजनवा सुनाकर करुण रस का संचार किया।

सुधाकर पांडेय स्वदेश ने आओ मेरी बाहों में समां मेरी बाहों में होली पर रचना सुनाकर श्रोताओं को लुभाया। धर्मेश चौहान एडवोकेट ने सदा ही चमके आफ्ताब सा अपना देश महान सुनाया और भारत भारती को नमन किया। अध्यक्षता करते हुए श्री प्रकाश पाठक ने होलिका दहन प्रहलाद का संदर्भ लेकर समसामयिक व्याख्यान देकर बुराई पर अच्छाई की जीत की उपयोगिता से सदभाव एकता राष्ट्रीयता समरसता का संदेश दिया और सभी कवियों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर फारुख अली हाशमी रिषभ त्रिपाठी पुरुषोत्तम कुशवाहा देवेन्द्र कुमार त्रिपाठी इंजीनियर डाक्टर चंद्रभूषण देव पाण्डेय उमानाथ पांडेय डा संतोष केसरी समेत अन्य लोग देर शाम तक जमे रहे।

बाथम वैश्य सभा ने आयोजित किया होली मिलन समारोह

शाहजहांपुर। बाथम वैश्य सभा ने होली मिलन समारोह का आयोजन किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने कार्यक्रम में मौजूद लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि होली का त्यौहार आपसी बुराई को बुलाकर मनाना चाहिए और गले लगकर गिले शिकवे भुला देना चाहिए। एवं उन्होंने सभी को होली की शुभकामनाएं दी। जिलाध्यक्ष ज्योति गुप्ता ने वित्त मंत्री को बुके देकर स्वागत किया। महानगर अध्यक्ष शिल्पी गुप्ता का स्वागत महामंत्री रजनी गुप्ता ने किया। ग्राम प्रधान अनिल गुप्ता को सम्मानित किया गया। बाथम वैश्य होली मिलन में महिलाओ ने फूलो की होली खेली। सभी वैश्य बंधुओ ने आपस में गले मिलकर होली की बधाइयां दीं।

नारायण फाउंडेशन ने किया होली स्नेह मिलन व अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन

अंबेडकर नगर। उत्तर प्रदेश की प्रमुख समाजसेवी संस्था नारायण फाउंडेशन के तत्वाधान में अकबरपुर के बीएन इंटर कॉलेज के मैदान में होली स्नेह मिलन व अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ। संस्था के संरक्षक श्री विवेक मौर्य के आमंत्रण पर इस कवि सम्मेलन में देश के प्रसिद्ध कवियों ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। जिलाधिकारी अविनाश सिंह, अंजाम, विकास बौखल, प्रतीक गुप्ता व धीरेंद्र क्षणिक के शानदार प्रस्तुति की गवाह बनी। सभी कवियों ने शहर के बीचों बीच आयोजित इस शानदार कार्यक्रम व श्री विवेक मौर्य के सामाजिक क्षेत्र में बहुमूल्य योगदान की मुक्तकंठ प्रशंसा की।

देर रात तक चले इस कार्यक्रम में विकास बौखल की हास्य कविताओं ने श्रोताओं को खूब हंसाया। अजय अंजाम और अभय निर्भीक की देशभक्ति से ओतप्रोत रचनाओं ने श्रोताओं में जोश भर दिया। कार्यक्रम के अंत में अनामिका जैन अम्बर ने अपनी रचनाओं से समां बांध दिया। उनकी %दिल्ली के सिंघासन पर राज करेगा राम भक्त और अयोध्या के बाद काशी और मथुरा की बारी है% जैसी रचनाओं पर युवाओं ने जमकर नृत्य किया। इस कार्यक्रम में जनता की विशाल भागीदारी से सभी कविगण खूब गदगद नज़र आए और हर थोड़ी देर में उत्साहित जनता की भागीदारी की सराहना करते नज़र आये। नारायण फाउंडेशन और उसके संरक्षक विवेक मौर्य द्वारा इतने बड़े स्तर पर आयोजित इस कवि सम्मेलन की चारों ओर सराहना हो रही है।

कार्यक्रम में विवेक मौर्य ने सभी अतिथियों का अभिनंदन किया व अपने स्वागत भाषण में कहा कि यह कवि सम्मेलन होली के अवसर पर किया जा रहा है होली हमारे देश की परंपराओं की संवाहक है और एकता और अनेकता का अद्भुत संगम यह होली है।हम लोगों के यहां पर एकत्र होने का उद्देश्य भी समाज में एकता भाईचारा राष्ट्र के प्रति प्रेम को उत्पन्न करने की इच्छा है।

राज्य स्तरीय सीनियर महिला हैंडबॉल प्रतियोगिता का हुआ भव्य शुभारम्भ

संवाददाता। अंबेडकर नगर

खेल निदेशालय यूपी के तत्वावधान में,राजकीय एकलव्य स्पोर्ट स्टेडियम में राज्य स्तरीय आमंत्रण ओपन महिला हैंडबॉल प्रतियोगिता का भव्य शुभारंभ किया गए प्रतियोगिता का शुभारंभ मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद अपर जिलाधिकारी सदानंद गुप्ता और अपर पुलिस अधीक्षक विशाल पांडे द्वारा किया गई।

अपर जिलाधिकारी ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि बड़े ही हर्ष का विषय है कि प्रदेश के खिलाड़ी हमारे जनपद में आकर खेल रहे हैं, खेल के क्षेत्र में अच्छा प्रयास हो रहा है लेकिन जनसंख्या के हिसाब से पदक तालिका में पीछे होना यह बताता है कि खेल के क्षेत्र में और कड़ी मेहनत की आवश्यकता है। कुछ छोटे छोटे देश है जो पदक तालिका में हमसे काफी आगे रहते है, आज हमे संकल्प लेना होगा कि खेल के क्षेत्र में अच्छा करना है। विशिष्ट अतिथि अपर पुलिस अधीक्षक विशाल पांडे ने कहा उच्चता का शिखर कभी रिक्त नहीं होता, बारी बारी लोग भरते रहते है। कहा भी गया है वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या जिस पथ में बिखरे शूल न हों, नाविक की धैर्य कुशलता क्या जब धारा प्रतिकूल न हो। कार्यक्रम आयोजक जिला क्रीड़ाधिकारी शीला भट्टाचार्य ने अतिथियों का स्वागत करते हुए खेल की रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन ओलिंपिक संघ और हैंडबॉल संघ के सचिव डा. हनुमान प्रताप सिंह ने खिलाड़ियों का उत्साह वर्धन किया।

यूपी हैंडबॉल संघ के आयोजन सचिव अमित पांडे ने खिलाड़ियों का उत्साह वर्धन करते हुए आगे के लिए शुभकामनाएं दी। इस दौरान हैंडबॉल के अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी संजय राय भी मौजूद रहे। प्रथम दिन का पहला मैच अयोध्या मुजफ्फरनगर के बीच खेला गया। जिसमें अयोध्या ने 18-11 से मुजफ्फरनगर को पराजित किया।

नन्दलाल बने दूसरी बार भाजपा के जिलाध्यक्ष

सोनभद्र। भारतीय जनता पार्टी के जिलाध्यक्ष नन्दलाल गुप्ता को पुन: भाजपा का जिलाध्यक्ष बनाया गया है। रविवार को जनपद मुख्यालय स्थित पार्टी कार्यालय पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महामंत्री, विधान परिषद सदस्य व जिले के चुनाव प्रभारी गोविन्द नारायण शुक्ला ने जब सोनभद्र भाजपा जिलाध्यक्ष के लिए नन्दलाल गुप्ता का नाम घोषित किया तो पुरा परिसर नारों से गुज उठा। इस दौरान उपस्थित भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष डा0 धर्मवीर तिवारी, अशोक मिश्रा अजीत चौबे भाजपा नेता श्रवण गोंड नगर पालिका परिषद अध्यक्ष रुबी प्रसाद महामंत्री कृष्ण मुरारी गुप्ता समेत बड़ी संख्या में उपस्थित नेताओं कार्यकर्ताओं ने नंदलाल को मालाओं से लाद दिया।

अखिल भारतीय कायस्थ महासभा का होली मिलन समारोह सम्पन्न

मीरजापुर। अखिल भारतीय कायस्थ महासभा मिर्ज़ापुर शाखा के तत्वाधान में होली मिलन जिलाध्यक्ष श्री रत्नेश श्रीवास्तव की अध्यक्षता में सम्पन हुआ जिसकी मुख्य अतिथि पद्म श्री उर्मिला श्रीवास्तव रहीं, संचालन महामंत्री सुजीत श्रीवास्तव व सांस्कृतिक मंच का संचालन मनीष श्रीवास्तव नें किया, लोक गायक श्री शिवलाल गुप्ता श्री ओम प्रकाश, श्रीमती सैला नें होली गीत से होली मिलन में चार चांद लगाने का कार्य किया, पद्म श्री उर्मिला जी में कहां कि महिलाओ को समस्त कार्यक्रम में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिए सिर्फ घर तक सिमित न रहें जिस तरह महिलाये घर चलाने में आगे रहती अब समाज में भी उनकी अग्रणी भूमिका रहती हैं, वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ डी एल श्रीवास्तव नें कायस्थ समाज नें देश में हर क्षेत्र में विशिष्ट योगदान दिया हैं, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ अरविंद श्रीवास्तव नें कहा कि आगामी 12 अप्रैल को सृष्ठि के 84 लाख योनियों के पाप पुण्य का लेखा जोखा रखने वाले सर्व समाज के भगवान श्री चित्रगुप्त के प्रकटॉउत्सव दिवस पर मिर्ज़ापुर में एक शोभा यात्रा का आयोजन किया जा रहा हैं जिसके समस्त सनातन धर्मी परिवारों की उपस्थिति प्रार्थनीय हैं, राष्ट्रवादी मंच के संस्थापक श्री मनोज जी नें कहा कि समाज में युवाओं नें सदैव क्रांति करने का कार्य किया उनको सदैव उचित मार्गदर्शन बड़ो को करना चाहिए, कायस्थ संगठित परिवार अध्यक्ष डॉ शक्ति जी नें कहा कि आगामी स्नातक एम एल सी चुनाव हेतु समस्त स्नातक महिला व पुरुष गण को अति शीघ्र मतदाता बनने का कार्य करें! जिला इकाई नें पद्म श्री उर्मिला जी व मंचासीन अतिथियों को अंगवस्त्र व स्मृति चिन्ह भेंट किया! कार्यक्रम में प्रमुख रूप से श्री के बी लाल, आनंद स्वरुप, वीरेंद्र श्रीवास्तव, सतीश सिन्हा, विजय, संजय, विनय, दुर्गेश, आलोक, रेनू आरती मौजूद रहे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के ज़िला प्रमुख ओम प्रकाश काबरा, देश के प्रतिष्ठित समाचार चैनल भारत समाचार के चेयरमैन ब्रजेश मिश्रा व नारायण फ़ाउंडेशन के संरक्षक विवेक मौर्य ने दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

इसके बाद श्री विवेक मौर्य के आये अतिथियों व कविगणों का पुष्प, शॉल व स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया। ज़िले के कोने कोने से आई भारी भीड़ से उमड़े जनसैलाब से बीएन इण्टर कॉलेज का ग्राउंड खचाखच भर गया जो देर रात्रि तक अनामिका अंबर के गाने पर झूमता रहा। शहर के प्रबुद्धजनों, शिक्षकों, विख्यात डॉक्टरों, पत्रकारों, प्रशासनिक अधिकारियों व आम जनमानस ने मनोयोग से सभी कवियों का काव्य पाठ सुना। कटेहरी से भाजपा विधायक धर्मराज निषाद व खलीलाबाद से भाजपा विधायक अंकुरराज तिवारी ने कार्यक्रम में प्रमुखता से शिरकत की।

नारायण फ़ाउंडेशन के इस कवि सम्मेलन में उमड़ी ऐतिहासिक भीड़ राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कवियत्री अनामिका जैन अम्बर, अभय निर्भीक, सर्वेश अस्थाना, अजय

ओम प्रकाश राय बने भाजपा के नए जिलाध्यक्ष

संवाददाता। गाजीपुर

भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यालय पर आयोजित कार्यक्रम में जिला प्रभारी राकेश त्रिवेदी ने जिला चुनाव अधिकारी राज्य सभा सांसद गीता शाक्य की अनुपस्थिति में उनसे टेलीफ़ोन पर वार्ता कर जिलाध्यक्ष पद पर जिला महामंत्री ओमप्रकाश राय के नाम की घोषणा किया। कार्यकर्ताओं तथा नेताओं से भरे सभा कक्ष मे कार्यकर्ताओं ने एक स्वर से हर हर महादेव के नारे के साथ नये जिलाध्यक्ष का स्वागत किया। ओमप्रकाश राय उम्र लगभग 57 है इनके पिता का नाम स्व कमला प्रसाद राय व माता स्व शिवकुमारी राय है।

ये दो भाइयों एवं तीन बहनों मे एक बहन से बड़े है। इनकी शिक्षा बीएससी बीएड,एम ए है। ये आर एस एस में खंड कार्यवाह, भाजपा मे रेवतीपुर बूथ अध्यक्ष, शक्ति केन्द्र संयोजक, जिला कार्यसमिति सदस्य, एक बार जिला मंत्री, दो बार जिला उपाध्यक्ष, व 2015 से अब तक तीन कार्यकाल जिला महामंत्री रह चुके है। इस अवसर पर निवर्तमान जिलाध्यक्ष सुनील कुमार सिंह ने शीर्ष नेतृत्व को बधाई देते हुए कहा कि संगठन के बहुत पुराने कार्यकर्ता को जिले का नेतृत्व सौंप कर नेतृत्व ने कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया है।

उन्होंने कहा कि मै भरोसे और विश्वास के साथ कह सकता हूं कि नवनियुक्त जिलाध्यक्ष संगठन हितों के हर चुनौती पर खरे उतरेंगे। इस अवसर पर ओमप्रकाश राय ने कहा कि मै संगठन का एक समर्पित कार्यकर्ता और सेवक रहा हूं और हर कार्यकर्ता संगठन के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि अपने महामनिषीयों एवं नेतृत्व वर्ग को प्रणाम करते हुए संगठन निष्ठा पर कार्यकर्ताओं के सम्मान और मातृभूमि को परमवैभव पर स्थापित करने के लिए काम करूंगा।

जिलाध्यक्ष ओमप्रकाश राय ने जिला संगठन के सभी नेतृत्वकर्ताओं,मा मनोज सिन्हा,कलराज मिश्र, महेन्द्र नाथ पांडेय आदि संगठन के वरिष्ठ एवं नेतृत्व वर्ग के प्रति आभार धन्यवाद व्यक्त करते हुए उनके पद चिन्हों पर चलने के संकल्प को दोहराया। इस अवसर पर राज्य सभा सांसद डा संगीता बलवंत, विधान परिषद सदस्य विशाल सिंह चंचल, सपना सिंह,भानु प्रताप सिंह, कृष्ण बिहारी राय, विजय शंकर राय, पारसनाथ राय, सरिता अग्रवाल, कालीचरन राजभर, सुनीता सिंह,सरिता अग्रवाल,जय प्रकाश गुप्ता, रामराज बनवासी, राजेश राजभर, दयाशंकर पांडेय, श्याम राज तिवारी ओमप्रकाश राम संकठा प्रसाद मिश्रा, अच्छे लाल गुप्ता, शशिकांत शर्मा,शैलेश राम, अनिल यादव, सुरेश बिन्द, संपूर्णानंद उपाध्याय, विनोद अग्रवाल,संतोष जायसवाल, संतोष चौहान, अविनाश सिंह, जितेंद्र नाथ पांडेय,शिव जी गुप्ता, उत्कर्ष राय, कार्तिक गुप्ता, विष्णु प्रताप सिंह, साधना राय, लालसा भारद्वाज, माया सिंह सहित सभी मंडल अध्यक्ष वरिष्ठ,कनिष्ठ नेता तथा कार्यकर्ताओं ने माल्यार्पण और पुष्प गुच्छ भेंट कर बधाई दिया।

साइबर धोखाधड़ी का शिकार होने पर पुलिस को दें जानकारी

सोनभद्र। बालिकाओं व महिलाओं की सुरक्षा व महिला जागरूकता एवं सशक्तिकरण के दृष्टिगत चलाये जा रहे मिशन शक्ति फेज-5 अभियान के तहत पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा के निर्देशन में महिलाओं व बालिकाओं की सुरक्षार्थ जनपद में गठित एण्टी रोमियो स्क्वाड द्वारा प्रतिदिन मंदिर भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर गश्त कर बालिकाओं व महिलाओं से वार्ता कर महिला सुरक्षा के सम्बन्ध में जागरूक एवं चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है। उक्त निर्देश के क्रम में नारी सुरक्षा व नारी सम्मान हेतु चलाये जा रहे मिशन-शक्ति अभियान के अन्तर्गत जनपद के समस्त थानों मे गठित एण्टी रोमियो स्क्वाड टीम द्वारा स्कूलों कॉलेजों, मंदिर भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर चेकिंग की गई तथा बालिकाओं व महिलाओं से वार्ता कर महिला सुरक्षा सम्बन्धी उपायों के बारे में जागरूक किया गया तथा उपस्थित महिलाओं,बालिकाओं व छात्राओं को यूपी पुलिस द्वारा चलाई जा रही सुरक्षा संबंधित सेवाओं व सीयूजी नम्बरों के बारे में विस्तृत जानकारी देकर जागरुक किया। साथ ही यह भी बताया गया कि अपने आस पास के लोगों को साइबर अपराधों के बारे में जागरुक करें और उन्हें बतायें कि यदि कोई व्यक्ति साइबर धोखाधड़ी का शिकार हो जाता है तो उसकी सूचना तत्काल हेल्पलाइन नम्बर 1930 व 112 पर दें जिससें समय रहते ही अग्रिम कार्रवाई की जा सके।

दरोगा व सिपाही लाइन हाजिर

चंदौली। मुगलसराय थाना क्षेत्र के कूड़ा बाजार पुलिस चौकी के अंदर कुछ लोगो का शराब पीकर होली के गीत पर ठुमके लगाने का वीडियो वायरल होने के बाद पुलिस की बहुत किरकिरी होने लगी। ऐसे में पुलिस अधीक्षक चंदौली ने वायरल वीडियो का संज्ञान लेते हुए दरोगा संतोष कुमार व सिपाही शिवांशु सिंह को तत्काल प्रभाव से लाइन हाजिर कर दिया। होली की खुमारी में युवकों का एक झुंड ने ऐसी हिमाकत की, जिसका वीडियो सोशल मीडिया में तेजी से वायरल हो गया। जिसको संज्ञान में लेकर पुलिस अधीक्षक ने कार्रवाई की।

केसी मिश्रा जिलाध्यक तो शिल्पी गुप्ता बनीं महानगर अध्यक्ष

शाहजहांपुर। भाजपा कार्यालय पर नई नियुक्तियों की घोषणा की गई। केसी मिश्रा को जिलाध्यक्ष और शिल्पी गुप्ता को महानगर अध्यक्ष बनाया गया है। कार्यक्रम में वित्त मंत्री सुरेश खन्ना, सांसद अरुण सागर और अन्य विधायक उपस्थित रहे। नियुक्ति की घोषणा के बाद दोनों नेताओं के समर्थकों में खुशी का माहौल छा गया। वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने नवनियुक्त पदाधिकारियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि नए पदाधिकारी सभी को साथ लेकर चलेंगे। पार्टी के %सबका साथ सबका विकास% के नारे को आगे बढ़ाएंगे।केसी मिश्रा दूसरी बार जिलाध्यक्ष बने हैं। उन्होंने कहा कि पार्टी के दिशा-निर्देशों का पालन पूरी निष्ठा से करेंगे। सभी कार्यकर्ताओं को साथ लेकर चलेंगे। उन्होंने केंद्रीय और प्रदेश नेतृत्व का आभार व्यक्त किया। शिल्पी गुप्ता भी दूसरी बार महानगर अध्यक्ष बनी हैं। उन्होंने शीर्ष नेतृत्व, वित्त मंत्री और स्थानीय कार्यकर्ताओं का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि पार्टी के प्रति वफादार रहकर काम करेंगी।

होली मिलन समारोह में पीडीए की अपील बांटी

शाहजहांपुर। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के निर्देशा पर पी डी ए चर्चा के अंतर्गत शुरुआत हुई जो होली मिलन समारोह के अवसर पर जनपद शाहजहांपुर के 135 नगर विधानसभा क्षेत्र के जोन नंबर 01 के सेक्टर नंबर 04 के ग्राम तिलक में चर्चा कार्यक्रम आयोजित की गई जिसमे ग्राम वासियों से होली मिलकर पी डी ए की अपील भी बांटी गई। इस मौके पर सपा जिला अध्यक्ष एवं पूर्व चेयरमैन तनवीर खां,सपा नगर विधानसभा अध्यक्ष अतिउल्ला सिद्दीकी, सेक्टर प्रभारी लल्ला सिंह यादव, सपा पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष विनोद कुमार वर्मा, करुणा शंकर दीक्षित, बड़े सिंह पूर्व प्रधान, धनपाल यादव,परमजीत, सेक्टर सह प्रभारी प्रमोद मौर्या,महेश पाल शर्मा,राजेंद्र मौर्य,डॉक्टर नेहाल दीक्षित,सोनू पाल,अंकित यादव,अरविंद कुमार,सरोज गौतम,संजय अवस्थी, फैयाज अली,बूथ प्रभारी तरुण शर्मा,बबल शर्मा,जगतपाल शर्मा, मौज़्ज़म खान, अनिल यादव, आदि मौजूद रहे।

बलूचिस्तान में संघर्ष

ट्रेन हाइजैकिंग

बलूचिस्तान में ट्रेन हाइजैकिंग ने इस क्षेत्र के संघर्ष को उजागर कर दिया है। बलूचिस्तान में जाफ़र एक्सप्रेस की हालिया हाइजैकिंग बलूच स्वतंत्रता के लिए दशकों लंबे संघर्ष में एक और घातक प्रकरण है। बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी-बीएलए द्वारा किए इस हमले से पाकिस्तान के सबसे बड़े, पर सर्वाधिक अनदेखी के शिकार प्रांत में विद्रोह में वृद्धि उजागर की है। हालांकि, अपहरणकर्ताओं के खिलाफ पाकिस्तानी सेना की त्वरित कार्रवाई से तत्काल यह संकट दूर हो गया है, पर यदि समस्या का कारण बनने वाली कठिनाइयां दूर न की गईं तो वे बलूच राष्ट्रवादी आंदोलन को शक्ति देती रहेंगी। 11 मार्च को सशस्त्र विद्रोहियों ने क्वेटा से पेशावर जाने वाली पैसेंजर ट्रेन जाफ़र एक्सप्रेस पर निशाना लगाया। बीएलए ने पाकिस्तानी सुरक्षा बलों द्वारा कथित रूप से अपहरण कर जेलों में बंद राजनीतिक कैदियों और लोगों की रिहाई की मांग की है। पाकिस्तानी सेना ने बचाव के लिए तुरन्त कार्रवाई शुरू की। इस सफल कार्रवाई से बलूचिस्तान में खराब होती सुरक्षा स्थिति तथा अलगाववादी समूहों की बढ़ी हुई हिम्मत स्पष्ट होती है। यह हाइजैकिंग कोई अलग-थलग घटना न होकर स्वशासन की खोज में बलूच जनता के लंबे संघर्ष की निरंतरता है। प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध, पर ऐतिहासिक रूप से हाशियाकृत बलूचिस्तान में 1947 में पाकिस्तान की स्थापना के बाद से अनेक विद्रोह हुए हैं। इस टकराव की जड़ें बलूचों द्वारा पाकिस्तान के संस्थापक मुहम्मद अली जिन्ना द्वारा दिए कथित धोखे में निहित हैं। विभाजन के समय कलात की देशी रियासत ने स्वतंत्रता का रास्ता चुना जो वर्तमान बलूचिस्तान का बड़ा हिस्सा थी। लेकिन 1948 में पाकिस्तान के दबाव तथा अंतरराष्ट्रीय समर्थन न मिलने के कारण कलात का जबरन अधिग्रहण कर लिया गया। इससे अंग्रेजों के खिलाफ भारी गुस्सा पैदा हुआ जिसके चलते सशस्त्र विद्रोह हुआ जो पिछले दशकों में अनेक रूपों में उभर कर सामने आता रहा है।

सोना, तांबा और प्राकृतिक गैस जैसे संसाधनों से समृद्ध होने के बावजूद बलूचिस्तान पाकिस्तान का सबसे गरीब प्रांत है। बलूच राष्ट्रवादियों का तर्क है कि केन्द्र सरकार क्षेत्र की संपदा का दोहन करती है और स्थानीय जनता को कोई लाभ नहीं मिलता है। चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारे-सीपीईसी ने तनाव और बढ़ा दिया है क्योंकि बलूच विद्रोही चीनी निवेशों और ढांचागत परियोजनाओं को स्थानीय समस्याओं को संबोधित किए बिना उनकी जमीन पर पाकिस्तान के बढ़ते नियंत्रण का माध्यम मानते हैं। व्यापक मानवाधिकार उल्लंघन के आरोपों ने निराशा को और बढ़ावा दिया है जिनमें एक्टिविस्टों और नागरिकों को जबरन गायब कर उनकी न्यायेत्तर हत्यायें शामिल हैं। पाकिस्तान राज्य ने अक्सर कठोर सैनिक कार्रवाइयां की हैं जिससे विद्रोह और व्यापक हुआ है। हालांकि, पिछले वर्षों में बलूच राष्ट्रवादी आंदोलन में उतार-चढ़ाव आते रहे हैं, पर हालिया घटनायें इसके तेज होने का संकेत देती हैं। बीएलए तथा बलूचिस्तान लिबरेशन फ्रंट-बीएलएफ जैसे अन्य संगठनों ने सुरक्षा बलों, सरकारी ढांचागत संरचनाओं तथा सीपीईसी से जुड़ी परियोजनाओं पर हमले तेज किए हैं। पाकिस्तान में कार्यरत चीनी नागरिकों पर लक्षित हमलों से विदेशी निवेशों को अस्थिर करने तथा पाकिस्तान पर दबाव डालने की रणनीति स्पष्ट होती है। जाफ़र एक्सप्रेस की हाइजैकिंग विद्रोहियों की विकसित होती रणनीतियों तथा बढ़ती भयंकरता की प्रतीक है। सिविलियन ढांचों पर निशाना लगा कर तथा बंधक बना कर बीएलए ने अपनी क्षमता प्रदर्शित कर दी है कि वह बड़े पैमाने पर कार्रवाइयां कर सकता है। इससे अलगावादी आंदोलन की मजबूती का संकेत मिलता है।

केवल पाकिस्तानी सैनिक प्रतिक्रिया से बलूचिस्तान में विद्रोह समाप्त नहीं होगा। इस प्रांत में व्याप्त राजनीतिक अलगाव, आर्थिक हाशियाकरण तथा मानवाधिकार उल्लंघनों जैसे मूल कारणों को संबोधित करना दीर्घकालीन समस्या समाधान हेतु जरूरी है। बलूचिस्तान में जारी संघर्ष नस्ली व क्षेत्रीय शिकायतों की अनदेखी का परिणाम है। बिना सार्थक संवाद और राजनीतिक समाधानों के पाकिस्तान के सर्वाधिक संसाधन संपन्न, पर अस्थिर प्रांत में राजनीतिक अस्थिरता का खतरा और बढ़ जाएगा। हालिया ट्रेन हाइजैकिंग से भले ही निपट लिया गया हो, पर बलूच विद्रोह अभी समाप्त नहीं हुआ है।

मोदी की महत्वपूर्ण स्वास्थ्य पहल

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हाल ही मुटापे तथा तेल के अत्यधिक उपयोग से निपटने की पहल की है। इससे रोग निवारक स्वास्थ्यरक्षा तथा भोजन में सुधार की आवश्यकता स्पष्ट होती है।

विश्वरूपा भट्टाचार्या
(लेखिका, राज्यसभा सचिवालय से संबद्ध हैं)

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हाल में मुटापे से मुकाबला करने तथा तेल के अत्यधिक उपभोग से बचने की पहल की है। इस पहल ने पूरे देश में स्वास्थ्य और पोषण पर चर्चा छेड़ दी है। इस अभियान से रोग निवारक स्वास्थ्यरक्षा तथा भोजन में परिवर्तनों का महत्व स्पष्ट किया है जो भारत में मुटापे के बढ़ते संकट से निपटने के लिए जरूरी हैं। दुनिया भर में मुटापा खतरनाक रूप से बढ़ने की प्रवृत्ति को देखते हुए यह पहल बहुत सामयिक और जरूरी है। इसे स्वास्थ्यरक्षा पेशेवरों, खिलाड़ियों तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन का व्यापक समर्थन मिल रहा है।

भारत में मुटापे में तेजी से वृद्धि हो रही है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-एनएफएचएस 5 के अनुसार भारत में अब 23 प्रतिशत पुरुषों व 24 प्रतिशत महिलाओं का वजन अधिक है या वे मुटापे का शिकार हैं। शहरी क्षेत्रों में आरामतलब जीवनशैली तथा अस्वास्थ्यकर भोजन के कारण यह संख्या और अधिक है। अब हम सभी जानते हैं कि मुटापे से मधुमेह, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप और कुछ किस्म के कैंसरों का खतरा बढ़ जाता है। इन बीमारियों से भारत की स्वास्थ्यरक्षा व्यवस्था पर भारी बोझ पड़ता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार मुटापा एक प्रमुख वैश्विक स्वास्थ्य संकट है और भारत भी अब तेजी से पश्चिमी देशों में व्याप्त मुटापे की दर के निकट पहुंचता जा रहा है।

लेकिन जीवनशैली परिवर्तनों के माध्यम से मुटापे की समस्या का मुकाबला करने के साथ ही ज्यादा महत्वपूर्ण तात्कालिक चिन्ता खाद्य पदार्थों में मिलावट की चुनौती का सामना करना है। 2018-19 में 'फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्डस अथारिटी आफ इंडिया'-एफएसएसएआई ने पता लगाया कि भारत में मिलावट के कारण खाद्य पदार्थों के लगभग एक तिहाई परीक्षित नमूने गुणवत्ता मानकों पर खरे उतरने में विफल रहे। मीडिया रिपोर्टों से पता चलता है कि खाद्य पदार्थों में खतरनाक तत्वों की मिलावट हो रही है। उदाहरण के लिए, दूध में यूरिया, स्टार्च तथा डिटर्जेंट, फलों में सिंथिटिक रंगों और कृत्रिम रूप से जल्दी पकाने वाले तत्वों, खाने के नमक में खड़िया, मसालों में नकली रंग, मछलियों में फार्मेलीन, चाय में लोहे का बुरादा या रंगी पत्तियां, चावल और गेंहूं में सिंथिटिक व्हाइटनर, खड़िया या सोपस्टोन तथा दालों में लेड क्रोमेट की मिलावट पाई गई। इन मिलावटी चीजों से स्वास्थ्य को गंभीर खतरा पैदा हो सकता है। इन खतरों में फूड प्वाइजनिंग, किडनी को नुकसान, कैंसर तथा तंत्रिका तंत्र की विकृतियां शामिल हैं। खाद्य पदार्थों में मिलावट अब इतनी व्यापक हो गई है कि कभी-कभी इसका पता लगाने के लिए हमें खाद्य निरीक्षकों की भी जरूरत नहीं पड़ती है। किसी सब्जी मंडी से गुजरते हुए आप अप्राकृतिक रूप से चमकदार सेव, गहरे हरे रंग की मटर, चमकदार बैंगन तथा नोकीली लौकियां देख सकते हैं। ये सब फल सब्जियों के ताजे होने के लक्षणों के बजाय उनमें हानिकारक रसायनों, जैसे मोम, कृत्रिम रंग तथा कीटनाशकों की मिलावट का नतीजा हैं। इन सब्जियों को पानी में भिगोने पर रंग निकलता साफ-साफ दिखता है जो स्पष्ट रूप से मिलावट का प्रमाण है।

जहां तक भारत में व्यापक रूप से फैल रहे मुटापे का सवाल है, इसका प्रबंधन जनता में जागरूकता फैलाने के माध्यम से किया जा सकता है। हमें जनता में प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों तथा खाने वाले तेल के अधिक उपयोग से पैदा खतरों के साथ ही जीवनशैली परिवर्तनों की पैरवी करनी होगी। इसके साथ ही मिलावटी खाद्य पदार्थों का प्रयोग बंद करना होगा, हालांकि यह काम ज्यादा चुनौतीपूर्ण है। मिलावट का पता लगाना कठिन है और इसका गहरा संबंध खाद्य पदार्थों के उत्पादन तथा उनके नियंत्रण में व्यवस्थागत कमियों से भी है। जब तक खाद्य पदार्थों में मिलावट से प्रभावी ढंग से निपटा नहीं जाता है तब तक भोजन के तथाकथित 'स्वस्थ' विकल्प भी खतरनाक हो सकते हैं। मिलावटी खाद्य पदार्थों से ग्राहकों को हानिकारक तत्वों का सामना करना पड़ता है, भले ही वे पोषक आहार बनाए रखने के लिए अपने सर्वोत्तम प्रयास ही क्यों न करें।

वास्तव में खाद्य पदार्थों में व्यापक मिलावट सर्वोत्तम स्वास्थ्य-सचेतन प्रयासों को नुकसान पहुचाती है। इससे ग्राहक अच्छा खाने के इरादे के बावजूद हानिकारक तत्वों के शिकार हो जाते हैं। रोजमर्रा के भोजन में हानिकारक रसायनों की उपस्थिति फलों व सब्जियों से लेकर डेरी व स्टेपल उत्पादों तक है जो स्वास्थ्य पर गंभीर जोखिम का कारण है।

खाद्य पदार्थों में व्यापक मिलावट के कारण बहुत से लोगों ने फलों या उनके छिलकों को या कच्चे सलादों को खाना बंद कर दिया है। उनको डर है कि इनमें मौजूद कीटनाशकों के बचे अंशों या रासायनिक पर्तों के कारण नुकसान होगा। भोजनशैली में इस परिवर्तन से स्पष्ट है कि मिलावट के कारण लोगों को प्राकृतिक व स्वास्थ्यवर्धक भोजनशैलियों से भी समझौता करना पड़ता है। इससे अंतत: मुटापे से मुकाबला करने के लिए संतुलित भोजन को प्रोत्साहित करने में कठिनाइयां सामने आती हैं। मिलावट के इतने व्यापक होने के बाद कोई आश्चर्य नहीं कि लोग अब 'आर्गेनिक' फूड पसंद करने लगे हैं। आर्गेनिक फूड की बाजार का दुनिया भर में तेजी से विस्तार हो रहा है। भारत में 2023 में आर्गेनिक फूड का मूल्य 1.5 बिलियन डालर था जिसके 2032 में 8.9 बिलियन डालर तक पहुंचने की आशा है। लेकिन भारत में परंपरागत रूप से उगाए खाद्य पदार्थों की तुलना में आर्गेनिक फूड का उत्पादन बहुत महंगा है जिसे यह मध्यवर्गीय व निम्न आय वर्ग वाले लोगों की ज्यादा पहुंच में नहीं रहता है। मामला इस तथ्य से और बिगड़ जाता है कि फर्जी आर्गेनिक लेबिल चिन्ता बढ़ा रहे हैं। मांग बढ़ने के साथ अनेक ब्रांड और विक्रेता 'आर्गेनिक' पहचान का दुरुपयोग कर रहे हैं। इससे आर्गेनिक उत्पाद के रूप में परंपरागत रूप से उगाए खाद्य पदार्थों को महंगे दामों पर बेचने का मौका मिल जाता है। यदि इस प्रवृत्ति पर लगाम न लगाई गई तो आर्गेनिक खाद्य पदार्थों को प्रोत्साहित करने का उद्देश्य ही विफल हो जाएगा और हम फिर से पहले वाली स्थिति में आ जाएंगे।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अतीत में अनेक सफल अभियानों को जन्म दिया है। इनमें 'स्वच्छ भारत अभियान' तथा 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' के माध्यम से योग को प्रोत्साहित करना शामिल है। इनसे सार्वजनिक सहभागिता को लामबंद करने में मोदी की क्षमता प्रदर्शित हुई है जो सार्थक परिवर्तन का कारण बनी है। उम्मीद है कि मुटापे से लड़ने के लिए उनका नवीनतम अभियान भी जनता के साथ मजबूती से जुड़ जाएगा। लेकिन जहां उनकी पिछली पहलों ने सार्वजनिक स्वास्थ्य तथा वैश्विक स्वास्थ्य प्रवृत्तियों को सफलतापूर्वक प्रभावित किया है, वहीं मुटापे के खिलाफ नवीनतम अभियान का सार्थक प्रभाव केवल तभी अनुभव किया जा सकेगा जब खाद्य पदार्थों में मिलावट के मुद्दे से सफलतापूर्वक निपटा जा सके। मुटापे से मुकाबले में खाद्य पदार्थों में मिलावट सबसे बड़ी चुनौती है। इससे निपटने के लिए पहले यह सुनिश्चित करना होगा कि जब भारतीय स्वास्थ्यवर्धक विकल्प चुनें तो उनको सचमुच सुरक्षित और पोषक भोजन मिले। मुटापे से मुकाबला तथा खाने के तेल के अत्यधिक उपभोग को घटाने का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का अभियान भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य सुधारने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

वास्तव में खाद्य पदार्थों में व्यापक मिलावट सर्वोत्तम स्वास्थ्य-सचेतन प्रयासों को नुकसान पहुचाती है। इससे ग्राहक अच्छा खाने के इरादे के बावजूद हानिकारक तत्वों के शिकार हो जाते हैं। रोजमर्रा के भोजन में हानिकारक रसायनों की उपस्थिति फलों व सब्जियों से लेकर डेरी व स्टेपल उत्पादों तक है जो स्वास्थ्य पर गंभीर जोखिम का कारण है। प्रधानमंत्री के पहले के अभियानों ने सफल व्यावहारिक परिवर्तन पैदा किए हैं और उनका मुटापा-विरोधी अभियान भी ऐसा ही कर सकता है।

लेकिन इसकी सफलता खाद्य सुरक्षा विनियमनों के प्रति दृष्टिकोण पर निर्भर है जिनमें मिलावट के बारे में जन जागरूकता तथा सचमुच स्वास्थ्यवर्धक भोजन तक सबकी पहुंच सुनिश्चित करना शामिल है। नियामक ढांचा मजबूत करने खाद्य मिलावट के लिए कठोर दंड सुनिश्चित करने तथा सुस्पष्ट आर्गेनिक व्यवहारों का प्रयोग ये कमियां दूर कर सकते हैं।

चार दिवसीय कार्य सप्ताह की अवधारणा

भारत के श्रम बाजार में अलग-अलग जटिलताएं हैं, जिससे चार दिवसीय कार्य सप्ताह एक तत्काल प्राप्त करने योग्य समाधान की तुलना में एक आकांक्षा अधिक बन गया है।

रचना लखपति
(लेखिका, स्तम्भकार हैं)

चार दिवसीय कार्य सप्ताह की अवधारणा ने दुनिया भर में हलचल मचा दी है, जिससे कार्य-जीवन संतुलन और दक्षता में वृद्धि का वादा किया गया है। हालांकि, भारत जैसे विषम और आबादी वाले देश में इस तरह के मॉडल को लागू करना - जहां 1.4 बिलियन से अधिक लोग रहते हैं - महत्वपूर्ण चुनौतिया प्रस्तुत करता है। भारत के श्रम बाजार में अलग-अलग जटिलताएं हैं, जिससे चार दिवसीय कार्य सप्ताह एक तत्काल प्राप्त करने योग्य समाधान की तुलना में एक आकांक्षा अधिक बन गया है। देश की अर्थव्यवस्था में उभरते ज्ञान उद्योगों के साथ-साथ अनौपचारिक क्षेत्र भी शामिल हैं, जो कार्यशैली और रोजगार पैटर्न में एक बड़ा अंतर पैदा करते हैं। अनौपचारिक अर्थव्यवस्था, जो भारत के लगभग 90 प्रतिात कार्यबल को रोजगार देती है, पारंपरिक रोजगार प्रतिमानों से परे काम करती है। कृषि मजदूर, छोटे व्यवसाय के मालिक और दैनिक वेतन भोगी आम तौर पर एक निश्चित समय-सारिणी के बजाय मांग के आधार पर काम करते हैं। ऐसे श्रमिकों के लिए, चार दिवसीय कार्य सप्ताह का कोई महत्व नहीं हो सकता है, क्योंकि उनकी कमाई सीधे काम किए गए घंटों की संख्या से जुड़ी होती है। इसके विपरीत, भारत के विस्तारित सेवा और प्रौद्योगिकी क्षेत्र संकुचित कार्य सप्ताह के साथ प्रयोग करने के लिए बेहतर स्थिति में हो सकते हैं। कुछ ई-कॉमर्स संगठनों ने पहले ही चार-दिवसीय कार्य सप्ताह का परीक्षण किया है, जिसमें कर्मचारियों की संतुष्टि और उत्पादकता में आशाजनक परिणाम सामने आए हैं। हालाँकि, ये मानक के बजाय अपवाद बने हुए हैं।

भारत में काम की सांस्कृतिक धारणाएं एक और महत्वपूर्ण बाधा प्रस्तुत करती हैं। यह गहरी जड़ जमाई हुई मान्यता कि लंबे घंटे प्रतिबद्धता और समर्पण को दर्शाते हैं, कार्य सप्ताह को कम करने के प्रति प्रतिरोध को बढ़ावा देती है। यह सांस्कृतिक मानसिकता बताती है कि भले ही नीतियाँ बदल जाएं, लेकिन दृष्टिकोण बदलने में काफी समय लग सकता है। आधारभूत संरचना की चुनौतियां चार-दिवसीय कार्य सप्ताह की व्यवहार्यता को और जटिल बनाती हैं। अपर्याप्त परिवहन नेटवर्क और शहरी भीड़भाड़ के कारण कई भारतीय कर्मचारी लंबी यात्राएँ करते हैं। परिणामस्वरूप, संकुचित कार्य शेड्यूल के साथ भी, अवकाश और व्यक्तिगत गतिविधियों के लिए उपलब्ध वास्तविक समय सीमित रह सकता है। इन चुनौतियों के बावजूद, भारत में चार-दिवसीय कार्य सप्ताह शुरू करने की दिशा में मार्ग तलाशने के लिए आकर्षक कारण हैं। शोध संभावित लाभों का सुझाव देते हैं, जिसमें कम बर्नआउट, कम अनुपस्थिति और बेहतर मानसिक स्वास्थ्य-कारक शामिल हैं जो वर्तमान में भारतीय नियोक्ताओं को प्रभावित करने वाले प्रमुख कार्यस्थल मुद्दों को संबोधित कर सकते हैं।

क्षेत्र-विशिष्ट दृष्टिकोण सबसे व्यवहार्य मार्ग प्रदान कर सकता है। ज्ञान-गहन उद्योगों में पायलट कार्यक्रम परीक्षण के आधार के रूप में काम कर सकते हैं, जिससे सफल मॉडलों को धीरे-धीरे अन्य क्षेत्रों में विस्तारित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, ऐसे कार्यक्रमों को अपनाने के इच्छुक व्यवसायों के लिए सरकारी प्रोत्साहन व्यापक स्वीकृति में तेज़ी ला सकते हैं।

महामारी ने पहले ही भारत सहित दुनिया भर में कार्य व्यवस्था को नया रूप दे दिया है। दूरस्थ और हाइब्रिड कार्य मॉडल ने प्रदर्शित किया है कि उत्पादकता आवश्यक रूप से शारीरिक उपस्थिति या कठोर शेड्यूल पर निर्भर नहीं है। दृष्टिकोण में यह बदलाव कार्यस्थल नवाचारों के लिए अवसर पैदा करता है, जिसमें संकुचित कार्य सप्ताह भी शामिल है। चार दिवसीय कार्य सप्ताह को एक सार्वभौमिक, अल्पकालिक समाधान के रूप में देखने के बजाय, भारत इसे अधिक लचीले, श्रमिक-उन्मुख रोजगार प्रथाओं की ओर एक व्यापक आंदोलन में एकीकृत कर सकता है। जबकि उद्योगों में पूर्ण पैमाने पर कार्यान्वयन एक दूर का लक्ष्य हो सकता है, विशिष्ट क्षेत्रों में चयनात्मक अपनाने से व्यापक स्वीकृति के लिए आधार तैयार हो सकता है क्योंकि अर्थव्यवस्था और बुनियादी ढाँचा विकसित होता रहता है।

भारत में कार्य सप्ताह सुधार की यात्रा लंबी, सांस्कृतिक रूप से जटिल और देश के आर्थिक परिदृश्य से निकटता से जुड़ी होगी। हालांकि, बातचीत शुरू करना सही दिशा में पहला महत्वपूर्ण कदम है।

चार दिवसीय कार्य सप्ताह भारत के लिए अवसर और चुनौतियाँ दोनों प्रस्तुत करता है। जबकि इसकी अनौपचारिक अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक धारणाएं बाधाएं खड़ी करती हैं, बढ़ते सेवा और प्रौद्योगिकी क्षेत्र इसकी व्यवहार्यता के लिए परीक्षण का आधार प्रदान करते हैं। बुनियादी ढांचे की सीमाएं और गहरी जड़ें जमाए हुए कार्य परंपराएं व्यापक रूप से अपनाने में देरी कर सकती हैं, लेकिन पायलट कार्यक्रम और सरकारी प्रोत्साहन धीरे-धीरे स्वीकृति को बढ़ावा दे सकते हैं। महामारी ने पहले ही कार्य मॉडल को नया रूप दे दिया है, जो लचीलेपन की क्षमता को उजागर करता है। तत्काल, सार्वभौमिक समाधान के बजाय, एक क्षेत्र-विशिष्ट दृष्टिकोण व्यापक कार्यान्वयन का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

आप की बात

राष्ट्र-विरोधी हरकत

तमिलनाडु सरकार ने राज्य के बजट के लोगो के रूप में भारतीय रुपए के आधिकारिक प्रतीक चिन्ह के स्थान पर तमिलनाडु भाषा में प्रस्तुत करने की हिमाकत की है । यह आग में पेट्रोल डालने वाली हरकत है। संविधान के अनुसार देश में मौद्रिक नियंत्रण पूर्णत: केन्द्र सरकार के अधिकार क्षेत्र में आता है, इसलिए यह हरकत राष्ट्र-विरोधी है। भाषावाद की भड़काऊ राजनीति को विभाजन की हद तक बढ़ाने का यह निंदनीय प्रयास है। मुख्यमंत्री स्टालिन भले ही आगामी चुनाव में वोट पाने के लिए यह ओछी हरकतें कर रहे हों, मगर यह संघीय राष्ट्र पर प्रहार है। केंद्र को कठोर नियम जारी करने चाहिए ताकि राष्ट्रीय प्रतीकों में किसी भी प्रकार की छेड़छाड़ करने को राष्ट्रद्रोह माना जाए। इस संबंध में चंद्रबाबू नायडू के इस कथन को सही संदर्भ में देखा जाना चाहिए कि भारत में 8-10 भाषाओं में पढ़ाई का विकल्प होना चाहिए ताकि छात्र देश या दुनिया के किसी भी कोने में कार्य करने में सक्षम हो सके। मोदी सरकार ने देश की सभी भाषाओं में प्राइमरी से लेकर उच्च शिक्षा देने के प्रयास शुरू किए हैं। अमित शाह ने भी स्टालिन का आह्वान किया है कि वे तमिलभाषियों को डाक्टरी और इंजीनियरिंग की शिक्षा तमिल में देने की दिशा में कदम उठाएं। इस मामले का संबंध चुनावी राजनीति से ज्यादा है।

-सुभाष बुड़ावन वाला, रतलाम

सभी भाषाओं का सम्मान

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम. के. स्टालिन ने पहले केंद्र की शिक्षा में त्रिभाषा-अंग्रेजी, हिंदी व स्थानीय भाषा फार्मूले की योजना का विरोध किया और अब उन्होंने बजट में रूपये के हिंदी चिन्ह के स्थान पर तमिल भाषा के चिन्ह का उपयोग करके विरोध जताया। कोई भी भाषा बातचीत और भावना से एक-दूसरे को अवगत कराने के लिए होती है। जो भाषा-बोली जहाँ सरल हो उसका उपयोग करना ठीक है किन्तु किसी भाषा का राजनीतिक दृष्टिकोण से विरोध करना उचित नहीं है। आखिर हिंदी से उन्हें इतनी चिढ़ क्यों हो रही है? केंद्र ने सभी स्थानीय भाषा का सम्मान करते हुए उसे शिक्षा में उपयोग हेतु नीति बनाई है। उसने किसी भाषा की अवमानना नहीं की है, फिर उससे इतना परहेज क्यों जताया जा रहा है? स्टालिन अपनी संकुचित चुनावी राजनीति के लिए भले ही हिंदी-विरोध की रणनीति अपनायें, पर तमिलनाडु के आम लोग किसी प्रकार भी हिंदी-विरोधी नहीं हैं। महात्मा गांधी द्वारा स्थापित दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा आज भी तमिलनाडु समेत पूरे दक्षिण भारत में सक्रिय है और हजारों तमिल नौजवान बहुत प्रेम से हिंदी भाषा सीख रहे हैं। स्टालिन की संकुचित नीति तमिलनाडु को देश की मुख्यधारा से अलग कर सकती है।

- शकुंतला महेश नेनावा, इंदौर

अमानवीयता की पराकाष्ठा

अमानवीयता की पराकाष्ठा है कि मध्य प्रदेश के शिवपुरी में हादसे में घायल एक वृद्ध की एमएम हॉस्पिटल में उपचार के अभाव में मौत हो गई। मरीज के परिजन इलाज के लिए अग्रिम रुपए जमा नहीं कर पाए थे। इससे डॉक्टर और उसके स्टाफ ने उपचार शुरू नहीं किया और स्वजनों के साथ मारपीट भी की। पुलिस ने अस्पताल संचालक पर केस दर्ज कर लिया है, वहीं सीएमएचओ ने अस्पताल का लाइसेंस निरस्त कर दिया है। निजी अस्पतालों की मनमानी व अमानवीयता की यह कोई पहली खबर नहीं है। इसके पहले भी रुपए न मिलने के लिए ऐसी कई अमानवीय व संवेदनहीन खबरें आती रही हैं। यह सिलसिला थमने वाला नहीं है। रुपए नहीं होने पर शव नहीं देना, उपचारित व्यक्ति की मौत के बाद भी पैसों के लिए झूठा दिलासा दे कर इलाज जारी रखा जाना, रुपए न होने पर एम्बुलेंस मुहैया नहीं करवाना तथा कंधों पर उठाकर या साइकिल पर रखकर शव लेकर जाने की खबरें तक आती रही हैं। निजी अस्पतालों की ऐसी हरकतों पर डाक्टरों व अस्पतालों का लाइसेंस रद्द करने के साथ ही उनके खिलाफ कठोरतम दंडात्मक कार्रवाई भी की जानी चाहिए। राज्य सरकारों को पीड़ितों की तत्काल सहायता की व्यवस्था भी करनी चाहिए।

-हेमा हरि उपाध्याय, उज्जैन

तलाक के बढ़ते मामले

हाल के वर्षों में तलाक के मामलों में वृद्धि ने समाज के सभी वर्गों को सोचने पर मजबूर कर दिया है। यह सिर्फ आम लोगों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि बड़े-बड़े सेलेब्रिटीज़ भी इससे प्रभावित हो रहे हैं। तलाक के बढ़ते मामलों से यह तो साफ हो जाता है कि केवल धन, दौलत शोहरत और बाहरी स्थिति से जीवन में सुख और संतुष्टि नहीं मिल सकती। एक स्थिर और खुशहाल वैवाहिक जीवन के लिए सबसे जरूरी है आपसी समझ, परस्पर विश्वास और भावनात्मक समर्थन। आजकल भले ही लोग बाहरी सफलता को ज्यादा प्राथमिकता देते हों, लेकिन अंत में मानसिक और भावनात्मक संतुलन ही जीवन में असली सुख लाता है। पहले जहाँ विवाह को एक दीर्घकालिक यात्रा और पारिवारिक जिम्मेदारी माना जाता था, वहीं अब लोग जल्दी-जल्दी अपने रिश्तों को खत्म करने में संकोच नहीं कर रहे। लोग अब अपने जीवनसाथी की संतुष्टि से ज्यादा अपनी स्वतंत्रता और सुख की तलाश में रहते हैं, जिससे कई बार संबंधों में खटास आ जाती है। इससे बचने के लिए रिश्तों को आपसी समझ के आधार पर संजोना जरूरी हो गया है।

-नितिन रावत, फिरोजाबाद

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

सूने घर का ताला तोड़कर चोरों ने दिया चोरी की घटना को अंजाम

●5-6 तोला सोना व डेढ़ किलो चांदी सहित कीमती सामान चोरी

संवाददाता। उरई, जालौन

उरई कोतवाली अंतर्गत अंबेडकर नगर चुरखी रोड ओडीए कार्यालय समीप शनिवार की देर रात और रविवार की सुबह अज्ञात चोरों ने घर को सूना पाकर ताले तोड़े और चोरी की घटना को अंजाम दे दिया जानकारी मिलने पर मौके पर पहुंची सीओ सिटी व कोतवाली प्रभारी निरीक्षक, चौकी प्रभारी के साथ पुलिस टीम और फोरेंसिक टीम ने मामले की जांच पड़ताल शुरू कर दी है। प्रारंभिक जानकारी के मुताबिक लगभग 5-6 तोला सोने व डेढ़ किलो चांदी के जेवरात सहित नकदी चोरी चले जाने की आशंका जताई जा रही है। पीड़िता ने चोरी के मामले की लिखित तहरीर उरई कोतवाली पुलिस को दे दी है।

मिली जानकारी के अनुसार सुनीता रानी पत्नी स्वर्गीय शिवप्रसाद निवासी अंबेडकर नगर चुर्खी रोड ओडीए कार्यालय समीप पिछले कई वर्षों से करेरा मध्य प्रदेश में आइटीबीपी में नौकरी करती हैं उनका देवर िशवकुमार जो की घर के बाहर दुकान चलाता है वह भी होली का त्यौहार मनाने अपने गांव पृथ्वीपुर गया हुआ था बताया जाता है कि बीती देर रात अज्ञात चोर उनके घर चोरी की मनसा से आए और वह बाहर का ताला तोड़कर अंदर घुस गए और उन्होंने चोरी की घटना को अंजाम दे दिया सुबह जब शिवकुमार अपने गांव से वापस लौटा तो उसने घर का दरवाजा खुल पाया तो वह चौंक गया भीतर जाकर देखा तो अन्य कमरों के ताले भी टूटे हुए पड़े थे और घर का सामान भी इधर-उधर बिखरा पड़ा हुआ था जिस तरह से घर के सभी कमरों में अस्त-व्यस्त समान दिखाई दे रहा था उसको देखते हुए सहज ही चोरी का अंदाज लगा लिया शिवकुमार ने घटना की जानकारी पास ही में रह रहे सुनीता के भाई वरिष्ठ पत्रकार सुरेश खरकिया को दी तो उन्होंने भी मौके पर पहुंचकर घटना के संबंध में कोतवाली पुलिस को सूचित किया तत्पश्चात क्षेत्राधिकार अर्चना सिंह अपने दलबल के साथ मौके पर पहुंची इसी बीच फोरेंसिक टीम भी पहुंच गई पुलिस और फोरेंसिक टीम ने मामले की सिलसिले बार ढंग से जांच पड़ताल शुरू कर दी है।

श्रीमद्भभागवत महापुराण कथा से पूर्व निकाली गई कलश यात्रा

मुसाफिरखाना, अमेठी। कस्बे के वार्ड नं में साप्ताहिक श्रीमद्भभागवत महापुराण कथा से पूर्व रविवार को गाजे बाजे के साथ कलश यात्रा निकाली गई। कलश यात्रा कथा स्थल से प्रारम्भ होकर कस्बा भ्रमण व विभिन्न गांवों से होते हुए आदि गोमती के तट पर स्थित दंडेश्वर धाम पहुंची जहाँ मुख्य यजमान ब्रजेश शुक्ल सपत्नीक एवं राजेश शुक्ल सपत्नीक यज्ञाचार्य डाक्टर श्यामधर तिवारी के द्वारा विधि विधान से पूजन अर्चन की। तथा महिलाएं कलश में जल भरकर कलश यात्रा में शामिल महिलाएं सिर पर मंगल कलश रखकर संकीर्तन करते चल रहीं थीं। कलश यात्रा का कई स्थानों पर लोगों ने पुष्पवर्षा कर स्वागत किया। कलश यात्रा सम्पन्न होने के पश्चात श्री धामअयोध्या से पधारे कथा प्रवक्ता स्वामी शशिधराचार्यजी महाराज ने अपने मुखारविंद से श्रीमद्भागवत कथा के महात्म्य को विस्तार से श्रवण करायेंगे। कार्यक्रम के आयोजक कर्ता ब्रजेश शुक्ल एवं राजेश शुक्ल ने बताया कि श्रीमद्भागवतमहापुराण कथा 17 से लेकर 23 मार्च तक प्रतिदिन सायं 3 बजे से 6 बजे तक चलेगी। 24 मार्च को पूर्णाहुति के पश्चात भंडारे के साथ कार्यक्रम सम्पन्न होगा।

भाजपा ने महिला के हाथ में सौंपी जिले की कमान, नीतू सिंह बनीं जिलाध्यक्ष

संवाददाता। संतकबीरनगर

काफी प्रतीक्षा के बाद भाजपा शीर्ष नेतृत्व ने जिला अध्यक्षों की सूची रविवार को जारी कर दिया। प्रथम बार संत कबीर नगर जनपद के उत्तरांचल में स्थित अति प्राचीन नगर पंचायत मेहदावल के रहने वाली भाजपा सरकार के कद्दावर नेता कल्याण सिंह सरकार में पूर्व मंत्री रहे जनसंघ के संस्थापक सदस्य की पौत्र वधु श्रीमती नीतू सिंह को जिला अध्यक्ष बनाकर भाजपा ने जहां एक तरफ महिला सशक्तिकरण को प्रोत्साहित किया है वहीं दूसरी तरफ क्षत्रीय समाज को वोट बैंक के रूप में साधने का कार्य किया है।

इनके जिला अध्यक्ष बनने पर जहां मेहदावल क्षेत्र में उल्लास की स्थिति है वहीं दूसरी तरफ भाजपा संगठन के पुराने कार्यकर्ताओं ने पार्टी नेतृत्व के प्रति आभार जताया है। मेहदावल नगर पंचायत के सोनबरसा निवासी पूर्व मंत्री स्वर्गीय चंद्रशेखर सिंह जनसंघ पार्टी के संस्थापक सदस्य के साथ ही दो बार उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री रहे।

कल्याण सिंह सरकार में पशुधन दुग्ध मत्स्य राज्य मंत्री के तौर पर उन्होंने मेहदावल क्षेत्र का मान सम्मान बढ़ाया था। उन्हीं के प्रपौत्र संजय सिंह उर्फ बबलू की धर्मपत्नी नीतू सिंह जो स्वर्गीय पूर्व मंत्री चंद्रशेखर सिंह की पौत्र वधू है उन्हें भाजपा शीर्ष नेतृत्व ने संत कबीर नगर जनपद का जिला अध्यक्ष रविवार को घोषित किया।

नीतू सिंह का राजनीतिक घराने से गहरा संबंध है उनके ससुर स्वर्गीय अमरेंद्र सिंह मेहदावल विकासखंड के ब्लॉक प्रमुख रहे। नीतू सिंह स्वत भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश मंत्री के तौर पर संगठन के दायित्वों का निर्वहन ईमानदारी से करते हुए जन-जन तक भाजपा की नीति और रिति को पहुंचाने का कार्य किया। आज उसी का परिणाम है कि पार्टी नेतृत्व ने उन्हें संत कबीर नगर जनपद का भाजपा जिला अध्यक्ष घोषित कर यह साबित कर दिया की पार्टी में जो निष्ठावान रहेगा उसे पदों से नवाजा जाएगा।

कैबिनेट मंत्री ओपी राजभर ने पीड़ितों से भेंट कर जाना हाल

संतकबीरनगर। प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री ओमप्रकाश राजभर रविवार को महुली क्षेत्र के ग्राम करीं पहुंचे। अग्निकांड के शिकार परिजनों से मुलाकात किया। उनके दुरूख दर्द को साझा किया। भरोसा दिया कि अन्याय नही होगा। उत्पात मचाने वालो पर कानूनी शिकंजा कसा जायेगा। उन्होंने समाज के लोगो से किसी के बहकावे नही आने की अपील किया। ज्ञात हो कि रविवार को करीं गांव में मारपीट के बाद झोपड़ी फूंकने से राजनीति हलचल बढ़ गई है। हर पार्टी से जुड़े नेता पहुंचकर पीड़ितों से मिलकर इंसाफ दिलाने का कसीदा पढ़ रहे है। रविवार को कैबिनेट मंत्री ओमप्रकाश राजभर करीं गांव पहुंचे। जली झोपड़ियों का बारी बारी जायजा लिया। अग्निकाण्ड से बर्बाद हो चुके परिजनों से मिलकर घटना क्रम की जानकारी लिया। इसके बाद पत्रकारों से बातचीत करते हुए कैबिनेट मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने कहा कि जिले की पुलिस की त्वरिता के चलते तीन आरोपियों को जेल भेजा जा चुका है। अन्य दोषी बक्शे नही जायेंगे। उनकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस दबिश डाल रही है। प्रशासन पूरी तरह पीड़ित के साथ खड़ा है। न्याय मिलेगा। उन्होंने कहा कि अग्निकांड के शिकार परिजनों को जल्द ही तहसील प्रशासन द्वारा आवास और आवासीय पट्टा मिलेगा।

हेल्पिंग हैंडस सेवा संस्थान 19 मार्च को करेगा महिलाओं का सम्मान

●बतौर मुख्य अतिथि वन एवं पर्यावरण मंत्री करेंगे सहभागिता

संवाददाता। उरई, जालौन

हेल्पिंग हैण्डस सेवा संस्थान के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पखवाड़े के अंतर्गत 19 मार्च को राजकीय मेडिकल कालेज के ऑडिटोरियम में महिला सम्मान समारोह का आयोजन होगा जिसमें बतौर मुख्य अतिथि प्रदेश के वन एवं पर्यावरण मंत्री डा. अरुण कुमार सहभागिता करेंगे।

उक्त जानकारी मीडिया से साझा करते हुये माही पैलेस में हेल्पिंग हैण्डस सेवा संस्थान जालौन के अध्यक्ष अनुराग खरे व सत्येंद्र कुमार श्रीवास्तव झांसी अध्यक्ष ने बताया कि 19 मार्च को राजकीय मेडिकल कालेज के ऑडीटोरियन हॉल में 1100 महिलाओं का सम्मान समारोह आयोजित किया जा रहा है जिसमें बतौर मुख्य अतिथि प्रदेश के वन एवं पर्यावरण मंत्री डा. अरुण कुमार होंगे। जबकि अति विशिष्ट अतिथियों में झांसी के सदर विधायक पं. रवि शर्मा व ओमप्रकाश प्रभारी प्रकोष्ठ एवं विभाग भाजपा उप्र के साथ विशिष्टि अतिथियों में सदर विधायक गौरीशंकर वर्मा, माधौगढ़ विधायक मूलचंद्र निरंजन, ललितपुर सदर विधायक रामरतन कुशवाहा, नगर पालिका परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि विजय चौधरी व जालौन पालिकाध्यक्षा नेहा मित्तल सहित अनेकों जनप्रतिनिधि कार्यक्रम में भागीदारी करेंगे। पत्रकारों से वार्ता के दौरान पदाधिकारियों ने बताया कि 19 मार्च को ही माही पैलेस में 1.30 बजे से प्रबुद्ध जन सभा का आयोजन होगा जबकि शाम 4 बजे से होटल राधिका इन में कायस्थ समाज का होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया है। बातचीत के दौरान हेल्पिनंग हैण्डलस सेवा संस्थान के पदाधिकारियों का कहना था कि वह कर्मयोगी महिलाओं को हर वर्ष सम्मानित कर उनको आत्मनिर्भर बनाने के लिये प्रयासशील हैं।

सुधांशु शुक्ला बने भाजपा के नये जिलाध्यक्ष

गौरीगंज, अमेठी। भाजपा के नये जिलाध्यक्ष की घोषणा रविवार 16 मार्च को गौरीगंज स्थित पार्टी कार्यालय पर की गयी। ज़िला चुनाव अधिकारी अवधेश पाण्डेय ने पर्यवेक्षक प्रदेश मंत्री शिवभूषण सिंह की उपस्थिति में बैठक में नए जिलाध्यक्ष सुधांशु शुक्ला की घोषणा किया। जिलाध्यक्ष की घोषणा एक बैठक में किया गया। बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में ज़िला चुनाव अधिकारी अवधेश पाण्डेय पाण्डेय बादल ने पर्यवेक्षक प्रदेश मन्त्री शिवभूषण सिंह की उपस्थिति में अमेठी के नये ज़िलाध्यक्ष के रूप में सुधांशु शुक्ला की घोषणा किया। बताते चलें कि सुधांशु शुक्ला पूर्व सांसद स्मृति इरानी के करीबी कार्यकर्ताओं माने जाते हैं।

क्विक न्यूज

दुकान के सामने से तेज बाइक निकालने पर मारपीट

जालौन, उरई। दुकान के सामने से तेज रफ्तार बाइक निकालने से मना करने पर बाइक सवारों ने दुकानदार के लाठी, डंडों से मारपीट कर दी। घायल दुकानदार ने मामले की तहरीर कोतवाली में जाकर दी। तथा आरोपियों पर कार्रवाई किए जाने की मांग की। पुलिस मामले की जांच कर रही है। कोतवाली क्षेत्र के कुठौंदा खुर्द निवासी सुल्तान सिंह ने पुलिस को बताया कि उसकी गांव में परचून की दुकान है। दुकान के बाहर रास्ता संकरा है। इसी रास्ते पर गांव के ही आनंद व अशोक अपनी बाइक लेकर तेज रफ्तार से निकलते हैं। जिसके चलते खतरा बना रहता है। रविवार को तेज रफ्तार से बाइक लेकर निकल रहे दोनों को जब उसने रोककर कहा कि दुकान के सामने से तेज रफ्तार में वाहन न निकाला करो। दुकान पर बच्चे भी सामान लेने के लिए आते हैं। कभी भी कोई हादसा हो सकता है। समझाने से नाराज दोनों लोग लाठी, डंडे लेकर आ गए और उसके साथ गाली, गलौज करते हुए मारपीट करने लगे। जिसमें उसके शरीर में चोटें आई हैं। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने मामले की जांच शुरू की।

कार की टक्कर से बाइक सवार तीन लोक गायक घायल

जालौन, उरई। फाग गाकर लौट रहे लोकगायकों की टीम के सदस्यों की बाइक में कार ने टक्कर मार दी। हादसे में तीन व्यक्ति घायल हो गए। जिन्हें सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है। होली के बाद नगर के उरई रोड स्थित बंबा के पास फाग गायन का आयोजन था। फाग गायन में लोक गायकों की टीम बंबा के आयोजित समारोह स्थल पर पहुंची थी। सुबह से ही आयोजित हुआ फाग गायन का कार्यक्रम दोपहर तक चला। अपरान्ह करीब ढाई बजे लोक गायकों की टीम अपने अपने वाहनों से वापस नगर में लौट रही थी। तभी बंबा से आगे कुछ दूर चलते ही लोक गायकों की एक बाइक में उरई की ओर से आ रही कार ने टक्कर मार दी। कार की टक्कर लगते ही उस पर सवार बहादुर सिंह (55), लाखन सिंह (70), वीरेंद्र कुमार (50) निवासीगण मोहल्ला चुर्खीबाल सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। मौके से निकल रहे राहगीरों ने हादसे की सूचना कोतवाली पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने कार को कब्जे में ले लिया है। साथ ही घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है।

पत्रकारिता व हिंदी साहित्य के पुरोधा थे चंद्रप्रकाश पाण्डेय, दी गई श्रद्धांजलि

संवाददाता। लालगंज, रायबरेली

पत्रकार सिरोमणि, अवधी के अनुयायी, नवगीत, गीत, क्षणिका के सिद्वहस्त कवि स्मृतिशेष चंद्रप्रकाश पाण्डेय की प्रथम पुण्यतिथि पर कस्बे के आजाद नगर स्थित सिटी ब्वायज स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में विशाल कवि सम्मेलन के आयोजन के साथ-साथ उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रो0 बैजनाथ विश्वकर्मा ने कहा कि श्रीचंद्र प्रकाश पाण्डेय हिंदी साहित्य के पुरोधा थे। उन्होने अवधी, नवगीत व गीत विधा में बैसवारे की साहित्यिक गरिमा को ऊंचाईयों तक पहुचाया। वरिष्ठ पत्रकार शेरबहादुर सिह ने कहा कि पाण्डैय जी साहित्यकार के साथ-साथ पत्रकारिता जगत के भीष्म पितामह भी थे। जिन्होने हम-सब को पत्रकारिता की एबीसीडी सिखाई। उन्होने लखनऊ से प्रकाशित सभी बड़े अखबारो के साथ आकाशणी में भी कार्य किया। श्री सिंह ने कहा कि आदत के अक्खड़ व स्वभाव के फक्कड़ पाण्डेय जी ने अपने स्वाभिमान को सर्वोपरि माना और यही कारण था कि वह एक स्थान पर अधिक दिनो तक नही टिक पाते थे। इसके अतिरिक्त प्रो0 डॉ.अविनाश सिंह, डॉ. विनय भदौरिया, अवनीश सिंह, हरिनाम सिंह, सतीस कुमार सिह एवं उनके पुत्र अनुराग पाण्डेय ने भी उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के दूसरे चरण में कवि गोष्ठी का प्रारम्भ दीप प्रज्जवलन व डॉ. विनय भदौरिया की वाणी वंदना के साथ हुआ। डॉ. भदौरिया ने अपनी प्रस्तुति में निम्न गीत-हम सुनाते है सुनना नही चाहते, लौह सम्बन्ध बनन नही चाहते। भाई तो चाहते है लखन की तरह किंतु हम राम बनना नही चाहते खूब सराही गई। इसके पश्चात् कवि संतोष निर्मल ने अपनी कविता-मेरे निकट शब्द ब्रम्ह नही है, यदि कुछ है तो मेरा कवि जो जब चाहता है गा लेता है, रचना के लिये उपयुक्त शब्द पा लेता है। डॉ. एमडी सिंह ने अपने भाव प्रकट करते हुए पढ़ा कि-कोपलो की मसृण छुवने, कोयलें की गीतलय, मंजरी की गंध भीनी, बल्लरी श्रंगारमय खूब सराही गई।

ट्रक चालक को कुल्हाड़ी से उतारा मौत के घाट

कुठौंद, जालौन। ग्राम सुरावली में बीती रात मे शाम करीब सात बजे संदीप दोहरे पुत्र बांकेलाल उम करीब 30 बर्ष को पड़ोसी रामजी व पवन पुत्र भिखारी दोहरे आदि ने मिलकर कुल्हाड़ी से सिर पर बार कर दिया जिससे संदीप पुत्र बाकेलाल की इलाज के लिए ले जाते बक्त रास्ते में मौत हो गई। मिली जानकारी के अनुसार संदीप ट्रक ड्राइवर था। संदीप के घर में चार दिन पहले चोरी हो गई थी जिसकी सूचना उसे घर वालों ने फोन द्वारा दी थी घर आने पर संदीप ने पवन पुत्र भिखारी से पूंछतांछ की क्योंकि चोरी पवन के घर रास्ते से हुई थी इसी बात को लेकर विवाद बढ़ गया था इसके बाद पवन व रामजी पुत्र भिखारी व नीरज पत्नी रामजी माधुरी पत्नी पवन, संटी व बंटी पुत्र रामजी ने मिलकर हमला कर दिया जिससे संदीप के सिर में गहरी चोट आ गई । जिसको ईलाज के लिए प्राथमिक स्वास्थ केन्द्र कुठौंद ले गये जहां मरीज को गम्भीर हालत देखकर तुरंत उरई के लिए रिफर किया गया। जख्म गहरा होने के कारण रास्ते में ही मौत हो गई।

कलश यात्रा से किया गया शिव महापुराण का शुभारंभ

शिवगढ़, रायबरेली। क्षेत्र के शिवगढ़ नगर पंचायत स्थित श्री बरखण्डीनाथ महादेव मन्दिर प्रांगण में आयोजित सात दिवसीय श्री शिवमहापुराण कथा का शुभारम्भ कलश यात्रा से किया गया। कलशयात्रा अयोध्या धाम से पधारे नरसिंह दास जी महराज के नेतृत्व में मन्दिर प्रांगण से निकालकर नगर पंचायत क्षेत्र के पदमपुर, सरांय छात्रधारी, सिंहपुर, माधव खेड़ा, शिवगढ़ कस्बा, शिवगंज होते हुए पुन: मन्दिर प्रांगण में जाकर समाप्त हुई। गौरतलब कि शिवगढ़ नगर पंचायत स्थित प्राचीनकालीन श्री बरखण्ड़ीनाथ महादेव मन्दिर प्रांगण में 16 मार्च से 22 मार्च तक शाम 5 बजे से रात्रि साढ़े 10:30 बजे तक सात दिवसीय संगीतमयी दिव्य श्री शिवमहापुराण कथा आयोजित की जायेगी जिसमें अयोध्या धाम से पधारे नरसिंह दास जी महाराज मधरेश जी अपनी अमृतमयी वाणी से श्रोताओं को श्री शिवमहापुराण कथा का रसपान करायेंगे। कथा के दौरान श्रद्धा म्यूजिकल ग्रुप रायबरेली द्वारा भजनोत्सव एवं राहुल झमाझम झांकी ग्रुप लखनऊ द्वारा आकर्षक झांकियां प्रस्तुत की जाएगी। कथा के अंतिम दिन राहुल झमाझम झांकी ग्रुप लखनऊ के मशहूर कलाकारों द्वारा आकर्षक झांकियां प्रस्तुत की जाएंगी।

चित्रगुप्त मंदिर में सामूहिक पूजन के बाद उड़ाया गया गुलाल

जालौन, उरई। रंगों के पर्व के बाद नगर के कायस्थों ने चित्रगुप्त समिति के तत्वावधान में चैत्र मास की द्वितीया को अपने कुल देवता भगवान चित्रगुप्त की सामूहिक पूजा अर्चना की और होली मिलन समारोह मनाया। जिसमें समाज के उत्थान पर चर्चा की गई। नगर के कायस्थों के आयोजित कार्यक्रम में श्याम बाबू ने कहा कि समाज को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक है कि हम लोग अपने 12 उपजाति के उपनामों को छोड़कर कायस्थ लिखना शुरू करें। सुशील श्रीवास्तव ने नई कार्यकारिणी से संगठन को मजबूत करने में हर व्यक्ति द्वारा अपनी क्षमता व स्तर से सहयोग करने की अपील की। उन्होंने सजातीय बन्धुओं से समाज की बेहतरी के लिए एकजुट होने का आवाहन किया। नगर के कायस्थों नारोभास्कर स्थित वीरेंद्र भवन में एकत्रित होकर कुल देवता भगवान चित्रगुप्त की सामूहिक पूजा अर्चना और की। साथ ही युवाओं व बच्चों ने जमकर गुलाल से होली खेली और मस्तिष्क पर अबीर लगाया व गले मिलकर एक दूसरे को शुभकामनाएं दी। इस मौके पर चित्रगुप्त समिति के अध्यक्ष दीपक श्रीवास्तव, मंत्री अरविंद श्रीवास्तव, संरक्षक रमेशचंद्र श्रीवास्तव, विनय निगम, दिलीप श्रीवास्तव, श्रवण कुमार श्रीवास्तव, सुशील श्रीवास्तव, मुकेशचंद्र, विजय निगम, शेखर, नरेंद्र कुमार, अरविंद श्रीवास्तव, अजय, महेंद्र, मृत्युंजय, ऋतिक, अभिनव सक्सेना, हिमांक, अजय, शौर्य, प्रखर, पंकज आदि मौजूद रहे।

ब्लाक क्षेत्र के तेरह गांवों में मॉडल शॉप दुकानों का निर्माण अंतिम चरण में

संवाददाता। जालौन, उरई

उचित दर की दुकानों पर राशन वितरण समेत अन्य अन्य सुविधाओं को ग्रामीणों को मुहैया कराने के लिए उचित दर की मॉडल शॉप बनाई जा रही हैं। लेकिन ब्लॉक क्षेत्र में आठ स्थानों पर बनने जा रही मॉडल शॉप में अभी तक दो ही शुरू हो सकी हैं।

उचित दर विक्रेता अपनी निजी दुकानों, घर आथवा अन्य जगह निर्धारित कर राशन का वितरण कर रहे हैं। कई बार स्थान कम होने अथवा अन्य कोई समस्या होने पर परेशानी भी होती है। लेकिन अब सरकार चाहती है लोगों को सुविधाजनक रूप से राशन मिले। इतना ही नहीं राशन के साथ ही ग्रामीणों को अन्य सुविधाएं भी एक ही स्थान पर मिलें। इससे उचित दर विक्रेताओं की आमदनी भी बढ़ सकेगी। इसके लिए तहसील क्षेत्र में 13 गांवों को चिन्हित कर वहां उचित दर की मॉडल शॉप का निर्माण कराया जा रहा है।

इनमें विकास खंड जालौन के गांव उरगांव, कुदारी, शेखपुरा, जगनेवा, भिटारा, अतरछला, रिनियां व छिरिया सलेमपुर का चयन किया गया है। इनमे छिरिया सलेमपुर, शेखपुर बुजुर्ग संचालित हो रही हैं। पांच दुकानों में लाइट फिटिंग का काम अधूरा है। पूर्ति निरीक्षक अजीत सिंह ने बताया कि दुकानों में लाइट फिटिंग के लिए निर्देश दिए गए हैं। लाइट फिटिंग होते ही दुकानों को शुरू करा दिया जाएगा। रिनिया में फिनिशिंग का काम बाकी है। इसे भी शीघ्र शुरू कराया जाएगा। इन दुकानों के निर्माण के बाद राशन कार्ड धारकों को राशन लेने के लिए डीलर के घर चक्कर नहीं लगाने पड़ेगे। बल्कि उन्हें मॉडल शॉप तक पहुंचना होगा।

मॉडल शॉप पर राशन लेने के साथ ही वह वहां जनसुविधा केंद्र का भी लाभ ले सकेंगे। जिसके अंतर्गत उन्हें वहीं से आय, जाति, जन्म, निवास प्रमाणपत्र, आधार, पेंशन व अन्य सेवाओं के अलावा, विभिन्न प्रकार के बिल जमा किए जाने की सुविधा होगी। इसके अलावा अन्नपूर्णा स्टोर में पांच किग्रा वाले एलपीजी सिलिंडर, ई-स्टाम्प, अग्निशमन यंत्र भी मिलेंगे। माइक्रो एटीएम, बीसी सखी आदि की सेवाएं देने की भी योजना है।

इन दुकानों पर रोजमर्रा के सामान की भी बिक्री की जा सकती है। पूर्ति निरीक्षक अजीत सिंह ने बताया कि ग्राम सभाएं अपने आर्थिक स्रोतों से राशन की दुकानों का निर्माण करा रहीं हैं। गांवों में दुकानों का निर्माण पंचायत भवन आदि के नजदीक किया जा रहा है। ब्लॉक क्षेत्र में सभी दुकानों को जल्द ही शुरू कराया जाएगा।

कोतवाल ने पैदल गश्त कर लोगों से संवाद स्थापित किया

कालपी, जालौन। रमजान शरीफएवं अन्य त्योहारो को कुशलतापूर्वक सम्पन्न को लेकर पुलिस प्रशासन के द्वारा पुख्ता अलर्ट मूड में है।कोतवाली प्रभारी निरीक्षक परमहंस तिवारी के नेतृत्व में पुलिस जवानों के द्वारा प्रतिदिन फुट मार्च करके नागरिकों से संवाद स्थापित किया जा रहा है। पुलिस अधिकारियों ने जनता को सुरक्षा का अहसास कराया है।

क्षेत्राधिकारी अवधेश कुमार सिंह के निर्देश पर शान्ति एवं सुरक्षा के दृष्टिकोण से सुरक्षा व्यवस्थाओं को लेकर रविवार को भी कालपी नगर के सार्वजनिक स्थानों तथा चौराहो में पुलिस तथा पीएससी के जवान तैनात किये गये। कोतवाली प्रभारी निरीक्षक परमहंस तिवारी एडीशनल इंस्पेक्टर मुहम्मद, वरिष्ठ उपनिरीक्षक राजेश कुमार सिंह, चौकी इंचार्जो रणधीर सिंह, जितेंद्र सिंह चंदेल विशाल भड़ाना थानेदारों, पुलिस जवानों ने दुर्गा मंदिर चौराहा, फुल पावर चौराहे, जुलैहटी मार्केट आदि चौराहो तथा सार्वजनिक स्थानों में फुट मार्च किया। इसके अलावा फुट मार्च के दौरान जगह-जगह रुक-रुक कर कोतवाल तथा एडिशनल इंस्पेक्टर के द्वारा सुरक्षा व्यवस्थाओं को लेकर संवाद भी स्थापित किया गया।

जवाबी कव्वाली मुकाबला सुनने को अकीदतमंदों का सैलाब उमड़ा

कालपी, जालौन। 142 वें उर्स में हजरत दीवान औलिया चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह की दरगाह में आयोजित कब्बाली प्रोग्राम में उमड़े अकीदतमंदों के जनसैलाब के बीच अनीस नबाब अहमदाबाद व अदनान अजीम नाजा मुंबई ने कब्बाली सुनाकर पूरी रात्रि समां बांधा। शनिवार की रात्रि हजरत दीवान औलिया चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह की दरगाह में आयोजित 142 वे उर्स में आये कब्बाल अनीस नबाब अहमदाबाद व अदनान अजीम नाजा मुंबई ने कब्बाली से पहले उपस्थित अकीदतमंदों से कहाकि यह अल्लाह का करम है कि मुझे हरजत दीवान औलिया सरकार ने यहां बुलाया मेरी औकात क्या जो इनके फरमान को ना मानूं। कमेटी की ओर से राजा भाई व मौजूद पत्रकारों का स्वागत किया गया तथा पूरी रात्रि कब्बाली का प्रोग्राम पूरी शान शौकत से चलता रहा तथा मौजूद कब्बाली को सुनने वालों ने कब्बालो की कब्बाली में लाखों रूपए देकर उनकी हौसला अफजाई की। इस दौरान प्रमुख रूप से कमेटी के अध्यक्ष मुकीम अंसारी, सैकेट्री महबूब आलम, खजान्ची साजिद खान, शकील अंसारी, इश्तियाक अंसारी बल्लू बहीद अहमद लाला भाई अध्यक्ष हिन्दुस्तान व्यापार मण्डल, बली मुहम्मद, असलम कुरैशी, अकील अंसारी कल्लू, मुहम्मद हसीब अंसारी, राजा इलैक्ट्रानिक्स, मुन्ना अंसारी, आदि बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

कालपी विधानसभा क्षेत्र में 15 सड़कों के निर्माण की मिली मंजूरी

कालपी, जालौन। कालपी सूर्य मंदिर रोड की सड़क सहित 220 कालपी विधानसभा क्षेत्र की 15 मार्गो का निर्माण करने के लिए शासन को प्रस्ताव प्राप्त हो गए हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के द्वारा प्रस्तावों को मंजूरी मिलते ही निर्माण का गतिशीलता से शुरू कर दिए जाएंगे, यह बात विधायक विनोद चतुर्वेदी ने कही। होली पर के अवसर पर नागरिकों से मुलाकात करते हुए उन्होंने बताया कि जोल्हूपुर-मदारीपुर रोड की अवशेष सड़क चौड़ीकरण सहित 13 मार्गो के निर्माण के लिए लोक निर्माण विभाग के द्वारा प्रस्ताव को शासन स्तर पर भेजे गए हैं। जिसमें दो अलग-अलग स्थानों में दो नई सड़कों का निर्माण कार्य भी शामिल है। विधायक ने बताया कि 220 कालपी विधानसभा क्षेत्र में स्थित प्राचीन सूर्य मंदिर में तीर्थाटन की बहुत संभावना है, लेकिन कोई सुगम रास्ता न होने से आवागमनन कठिन है। इसलिए कालपी से सूर्य मंदिर तक की सड़क निर्माण के लिए 54 करोड़ रुपए का स्टीमेट शासन को भेजा जा चुका है। उन्होंने बताया कि इस संबंध में लोक निर्माण विभाग के प्रमुख सचिव सहित शीर्ष अधिकारियों से मुलाकात में सड़कों के निर्माण को लेकर सहमति जता दी गई है।

अज्ञात वाहन की टक्कर से युवक की मौत

जालौन, उरई। रिश्तेदारी से लौट रहे व्यक्ति की अज्ञात वाहन की टक्कर लगने से मौत हो गई थी। मृतक के पिता की तहरीर पर पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू की। एट कोतवाली क्षेत्र के मोहल्ला लक्ष्मीनगर निवासी राजेश शाक्यवार (45) पुत्र राजाराम किसी काम के चलते रिश्तेदारी में गए थे। 12 मार्च को देर रात वह जगनेवा पुल के पास से निकल रहे थे। तभी किसी अज्ञात वाहन ने उनको टक्कर मार दी।

जिला पत्रकार संघ के 13वीं बार अध्यक्ष बने अजय

● आशीष दीक्षित चौथी बार महामंत्री व जयकेश पाण्डेय चौथी बार कोषाध्यक्ष निर्वाचित ● अवनीश सिंह चौहान तीसरी बार बने मंत्री, सभी पदाधिकारियों का हुआ स्वागत

संवाददाता। फतेहपुर

जिला पत्रकार संघ/एसो का द्विवार्षिक चुनाव रविवार को जिला कार्यालय नवीन मार्केट में शांतिपूर्वक ढंग से सम्पन्न हुआ। चुनाव में 25 सालों से लगातार अध्यक्ष पद का दायित्व निभाने वाले अजय सिंह भदौरिया पर पत्रकारों ने भरोसा जताते हुए 13 वीं बार निर्विरोध अध्यक्ष घोषित कराने में एकजुटता प्रदर्शित किया। गौरतलब है कि पूर्व घोषित निर्वाचन कार्यक्रम के अनुसार जिला पत्रकार संघ/एसो का द्विवार्षिक चुनाव रविवार को संपन्न होना तय था। उसी क्रम में आज प्रात: साढ़े नौ बजे से साढ़े बारह बजे तक सभी प्रत्याशियों ने नामांकन पत्र दाखिल किए। इसके उपरान्त नामांकन के सवा बारह बजे से सवा एक बजे तक नामांकन पत्र पर आपत्ति व निस्तारण कार्यक्रम रहा। अपरान्ह तीन बजे से मतगणना उपरान्त परिणाम घोषित किया जाना था, लेकिन सभी पदों पर एक-एक नामांकन पत्र दाखिल होने के कारण मतदान की आवश्यकता नहीं पड़ी।

चुनाव के परिणाम स्वरूप अजय सिंह भदौरिया अध्यक्ष, आशीष दीक्षित महामंत्री, जयकेश पाण्डेय कोषाध्यक्ष, अवनीश सिंह चौहान मंत्री, रोहित गुप्ता मंत्री तथा विमलेश त्रिवेदी वरिष्ठ उपाध्यक्ष पांचवीं बार निर्विरोध रूप से निर्वाचित घोषित किए गए। इसके अलावा रईस उद्दीन सदर, राहुल तिवारी खागा, ललित मिश्रा बिंदकी सभी उपाध्यक्ष तथा कार्यकारिणी सदस्य के रूप में सतवंत सिंह, शैलेष सिंह, बाबूराम सिंह, संजय गुप्ता निर्वाचित घोषित किए गए। इसी तरह सदर तहसील से ओमप्रकाश सिंह बबलू अध्यक्ष, आशीष सिंह महामंत्री, बिन्दकी तहसील से शैलेन्द्र विश्वकर्मा अध्यक्ष, राजेन्द्र सोनी महामंत्री, खागा तहसील से धीरेन्द्र कुमार वाजपेई अध्यक्ष, निरंजन सिंह महामंत्री पद पर निर्वाचित घोषित किए गए।

समस्त कार्यक्रम जिला पत्रकार संघ/एसोसिएशन कार्यालय नवीन मार्केट के हाल नंबर 06 में डॉ. सुहैल अहमद मुख्य पर्यवेक्षक, डॉक्टर सुनील गुप्ता मुख्य निर्वाचन अधिकारी एवं अरुण कुमार द्विवेदी सहायक पर्यवेक्षक व वसीम अख्तर सहायक निर्वाचन अधिकारी की कड़ी निगरानी में लोकतांत्रिक ढंग से संपन्न हुआ। कार्यक्रम में सैकड़ों की संख्या में पत्रकार साथियों ने बढ़ चढ़कर सहभागिता दिखाई। कार्यक्रम के मौके पर सुरक्षा व्यवस्था के सहायतार्थ थाना कोतवाली सदर की पुलिस टीम भी मौजूद रही।

10 दिन तक बंद रहेगा लखीमपुर सीतापुर हाईवे 99 रेलवे क्रॉसिंग होगा पुल निर्माण

ओयल। लखीमपुर सीतापुर हाईवे 10 दिन तक बंद रहेगा! कारण यह है की 2017 में ओयल सीमा से सटे हुए पुल जो की लखीमपुर सीतापुर को आपस में जोड़ता है उसका निर्माण कार्य पूर्ण होना है! 2017 से लटके हुए इस पुल निर्माण कार्य दो सीफ्टो में किया जाएगा! पहले चरन में 20 मार्च से 24 मार्च तक व अप्रैल माह में 8 से 12 अप्रैल तक कार्य किया जाएगा! पुल का निर्माण कार्य 18 मार्च से शुरू हो जाएगा इस दौरान 10 दिन के लिए यातायात बाधित रहेगा! इन दो चरनो जो कार्य किया जाएगा उसमें 49 मीटर जो खुला हुआ हिस्सा है उसको बनाया जाएगा! पूर्वोत्तर गोरखपुर के उप मुख्य इंजीनियर आनंद वर्धन ने प्रशासन को पत्र लिखकर सूचित किया है। निर्माण कार्य के दौरान के दौरान10 दिन के हाईवे बंद रहेगा, लखीमपुर से सीतापुर जाने वाले व सीतापुर से लखीमपुर जाने वाले लोगों को किसी प्रकार की दिक्कत ना हो इसके लिए डायवर्जेन व्यवस्था लागू करने के लिए कहा गया।

सात घंटे के भीतर हत्या का खुलासा, तीन गिरफ्तार

● आला कत्ल चाकू व खूनालूद कपड़े भी बरामद

फतेहपुर। बिंदकी पुलिस ने शनिवार को ग्राम कोरइया में मिले एक युवक के हत्यायुक्त शव का खुलासा करते हुए इस मामले में संलिप्त एक बाल आपचारी सहित तीन अभियुक्तों को सात घंटे के भीतर गिरफ्तार कर लिया। उनकी निशानदेही पर आला कत्ल चाकू के साथ खूनालूद कपड़े भी बरामद किए हैं।

बताते चलें कि बिंदकी कोतवाली क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम कोरइंया में 24 वर्षीय युवक का हत्यायुक्त शव पुलिस ने बरामद किया है। इसके संबंध में मु0अ0सं0 101/2025 धारा 103(1) बीएनएस पंजीकृत किया था। पुलिस घटना के अनावरण में लगी थी और मात्र सात घंटे के भीतर सफल अनावरण करते हुए घटना में संलिप्त बाल अपचारी सहित राम कृपाल सोनकर पुत्र स्व0 बाबूलाल सोनकर व कुलदीप सोनकर पुत्र राम कृपाल सोनकर निवासीगण ग्राम कोरइंया थाना कोतवाली बिन्दकी को गिरफ्तार कर लिया। अभियुक्त की निशांदेही पर आलाकत्ल चाकू एवं घटना के समय पहने खूनालूद कपडे भी बरामद कर लिए। पुलिस ने तीनों के खिलाफ विधिक कार्यवाही कर न्यायालय भेज दिया। गिरफ्तारी करने वाली टींम में बिंदकी कोतवाली प्रभारी निरीक्षक सुनील कुमार सिंह, हेड कांस्टेबल सुमेर यादव, कांस्टेबल मनीष सिंह, महिला कांस्टेबल उन्नति सिंह शामिल रहीं।

विधायक ने होली पर पकृति संरक्षण का दिया संदेश

बिंदकी (फ्तेहपुर)। बिंदकी तहसील के विभिन्न स्थानों में होली के फाग गाते, अलग अलग अंदाज में होली मनाते वीडियो सामने आ रहे है। विधायक फूलों की होली खेलकर प्रकृति संरक्षण का संदेश देते नजर आये। अमौली विकास खंड के इच्छापुर गांव मे बिंदकी विधायक जय कुमार सिंह जैकी पहुंचे और लोगों से मिले। इस दौरान वह गांव में आयोजित फाग गायन में पहुंचे। उन्होंने यहां पर फूलों की होली खेली। ग्रामीणों ने फूल बरसाए। मोर पंख लेकर लहराते हुए नजर आये विधायक ने बड़ों का आशीर्वाद भी लिया। विधायक ने कहा कि होली रंगों का त्योहार और एकजुटता का प्रतीक है। इस दिन सभी लोग अपने गिले-शिकवे भूलकर रंग लगाना चाहिए। पारंपरिक अंदाज में होली के रंगो की जगह फूलों की होली खेली और उन्होंने संदेश दिया कि हर्बल रंगो मे उपयोग व प्रकृति का संरक्षण जरूरी है। बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष राकेश वर्मा सहित तमाम लोग रहे।

नाबालिग प्रेमी जोडे के पेड पर लटके मिलने पर फैली सनसनी

कानपुर देहात। रसूलाबाद थाना क्षेत्र के पूरनपुरवा में जामुन के पेड़ पर नाबालिग प्रेमी के जोड़े के शव लटकते हुए मिले। एक साथ गाँव मे दो लोगों की मौत से इलाके में सनसनी फैल गई। सूचना पर मौके पर पुलिस बल व फोरेंसिक टीम पहुंची और शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया।

थाना क्षेत्र के ग्राम पूरनपुरवा में लालजी तिवारी की 17 वर्षीय पुत्री रामप्रकाश का 17 वर्षीय पुत्र ने गाँव के बाहर जामुन के पेड़ पेड़ से फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना से इलाके में हड़कंप मच गया। सूचना मिलने पर मौके पर पुलिस पहुंची और फोरेंसिक टीम भी बुलाई गई। फॉरेंसिक टीम ने मौके पर साक्ष्य जुटाए और शव को पेड़ से उतारकर पंचनामा भरने के बाद पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। गत 13 मार्च से दोनों किशोर और किशोरी लापता थे। दोनों के प्रेम प्रसंग की चर्चा होती रही।

एक बार पुन: मनोनीत हुये वीर सिंह भाजपा जिलाध्यक्ष

नवमनोनीत जिलाध्यक्ष का स्वागत करते राजीव ठाकुर व सागर अग्रवाल।

कन्नौज। कन्नौज में भारतीय जनता पार्टी ने वीर सिंह भदौरिया को एक बार फिर जिलाध्यक्ष नियुक्त किया है। रविवार को पार्टी हाईकमान ने उनके नाम की घोषणा की है। जिला कार्यालय में कार्यकर्ताओं ने फूल मालायें माला पहनाकर और आतिशबाजी छडाकर व मिष्ठान खिलानें के साथ जश्न मनाया।

भाजपा जिलाध्यक्ष वीरसिंह भदौरिया ठठिया थाना क्षेत्र के वीरहार गांव के निवासी हैं। उन्होंने 25 वर्ष पहले कन्नौज के पीएसएम डिग्री कॉलेज से छात्र राजनीति की शुरुआत की। वह छात्रसंघ अध्यक्ष रहे और भाजपा समर्थित छात्र गुट का नेतृत्व किया। भदौरिया पार्टी में जिला महामंत्री और जिला उपाध्यक्ष के पदों पर रहे चुके हैं।

वह विधानसभा क्षेत्र अध्यक्ष और लोकसभा क्षेत्र अध्यक्ष भी रहे। उन्होंने जिला पंचायत सदस्य का चुनाव भी लड़ा था। वह भाजपा के पूर्व सांसद सुब्रत पाठक, मंत्री असीम अरुण और तिर्वा विधायक कैलाश राजपूत के करीबी माने जाते हैं। रविवार को जिला कार्यालय में यूपी सरकार की मंत्री प्रतिभा शुक्ला वारसी और किसान मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष कामेश्वर सिंह मौजूद थे। लखनऊ से घोषणा होते ही दोनों नेताओं ने भदौरिया को नियुक्ति पत्र सौंपा। उधर पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष राजीव ठाकुर एव व्यापारी नेता सागर अग्रवाल लकी नें मनोनयन की घोषणा होते ही भाजपा जिलाध्यक्ष को फूल मालायें पहनाकर एवं आतिशबाजी छुडाकर व मिष्ठान वितरित कर खुशी का इजहार किया।

क्विक न्यूज

बिजली का तार जोड़ रहे युवक को लगा करेंट, मौत

हुसेनगंज (फतेहपुर)। राम पुर पिलही गांव के दुर्गेश यादव उर्फअब्बू पुत्र राजबहादुर 25 वर्ष की बिजली का करेंट लगने से दर्द नाक मौत हो गई ये परिवार का सबसे बड़ा था इसका छोटा भाई अभिषेक यादव है। पत्नी सरला देवी के अनुसार मेरे पति को अग्निहोत्री का पुरवा मजरे भदसरी के अमित त्रिवेदी पुत्र अवधेश त्रिवेदी के समरसेबिल में कटे कनेक्शन को जोड़ने गए थे, इनके कनकेशन को 03 लाख रुपया बकाया होने के कारण कनेक्शन काट दिया गया था।

सूत्रों का कहना है 11 हजार बोल्ट की विद्युत लाइन में चढ़े दुर्गेश दो तार जोड़ चुका था, तीसरी तार जोड़ रहा था, तभी करेंट आ गया जिससे यह गिर पड़ा और मुँह से खून निकलने लगा। आनन फानन इसको जिला चिकित्सालय ले जाया गया लेकिन उसने रास्ते मे ही दम तोड़ दिया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम भेज दिया गया है।

अनियंत्रित बाइक खंती में गिरने से एक मौत, दूसरा घायल

फतेहपुर। थरियांव थाना क्षेत्र के एकारी मोड़ लिंक रोड में रविवार की सुबह अनियंत्रित होकर बाइक खंती में जा गिरी जिससे 50 वर्षीय अधेड़ की मौत हो गई वहीं दूसरा गंभीर रूप से घायल हो गया। जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र के कौडर गांव निवासी शम्भू का पुत्र भिक्खू व रामकृपाल का 40 वर्षीय पुत्र शेखर रविवार की सुबह बाइक से शहर किसी काम से आ रहे थे। तभी एकारी मोड लिंक रोड में अनियंत्रित होकर बाइक खन्ती में जा पलटी जिससे दोनो गंभीर रूप से घायल हो गये। सरकारी एम्बुलेंस ने घायलों को उपचार के लिए जिला चिकित्सालय पहुंचाया जहां चिकित्सक ने भिक्खू को मृत घोषित कर दिया। वहीं शेखर की हालत चिन्ताजनक देखते हुये कानपुर मेडिकल कालेज के लिए रेफर कर दिया। पुलिस ने शव को विच्छेदन गृह भेज दिया।

ई-रिक्शा बाइक की भिड़ंत में मां बेटा घायल

फतेहपुर। बिन्दकी कोतवाली क्षेत्र के पहरूआपुर के समीप रविवार की सुबह ई-रिक्शा बाइक की भिडन्त में मां बेटा घायल हो गये। जिन्हे उपचार के लिए जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया गया। जानकारी के अनुसार बिन्दकी कस्बे के मोहल्ला लोहारी निवासी राजेश का 22 वर्षीय पुत्र हिमांशु अपनी 45 वर्षीय मां गीता देवी को बाइक में बैठा कर कहीं जा रहा था। जब वह पहरूआपुर के समीप पहुंचा तभी तेज रफ्तार आ रहे ई-रिक्शा ने बाइक मे टक्कर मार दिया। जिससे मां बेटे घायल हो गये। सरकारी एम्बुलेंस ने घायल मां बेटे को सीएचसी पहुंचाया जहां चिकित्सीय उपचार के बाद दोनो को जिला चिकित्सालय के लिए रेफर कर दिया गया।

बाइकों की भिड़ंत में वृद्ध घायल

फतेहपुर। खखरेरू थाना क्षेत्र के ग्राम उमरा के समीप रविवार की सुबह बाइकों की भिडन्त में 60 वर्षीय बाइक सवार वृद्ध घायल हो गये। जिसे उपचार के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया। थाना क्षेत्र के पुरमई गांव निवासी स्व0 रफीक उल्ला का पुत्र मो0 हफीज उल्ला बाइक से किसी काम से जा रहे थे। जब वह उमरा गांव के पास पहुंचा तभी सामने से आ रही बाइक से भिडन्त हो गयी। जिससे वह घायल हो गया। एम्बुलेंस ने घायल को जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया।

बाइकों की भिड़ंत में युवक की मौत

फतेहपुर। हथगाम थाना क्षेत्र के शाहपुर के समीप शनिवार की देर शाम बाइकों की हुयी भिड़ंत में 22 वर्षीय बाइक सवार की युवक की मौके पर ही मौत हो गयी। वहीं साथी मामूली रूप से चुटहिल हो गया। जानकारी के अनुसार कौशांबी जनपद के थाना सैनी गांव परास निवासी छैला बाबू का पुत्र दुर्गेश पासवान अपने साथ के साथ बाइक से हथगाम थाना क्षेत्र के अर्न्तगत रिश्तेदारी में आ रहा था। बताते है कि जैसे ही यह लोग शाहपुर के समीप पहुंचे तभी सामने से आ रही बाइक से भिडन्त हो गयी। जिससे दुर्गेश की घटना स्थल पर ही मौत हो गयी। वहीं उसका साथी चोटहिल हो गया। पुलिस ने शव को विच्छेदन गृह भेज दिया।

दो ने फांसी लगा की आत्महत्या

फतेहपुर। जनपद के अलग-अलग थाना क्षेत्रो के अर्न्तगत शनिवार को गांव के बाहर जंगल में पेड से फांसी लगाकर दो लोगो ने अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। जानकारी के अनुसार बिन्दकी कोतवाली क्षेत्र के ग्राम सैरपुर मजरे डीघ निवासी फूलचन्द्र रैदास का पुत्र शिवभोला ने गांव के बाहर जंगल में गूलर के पेड में रस्सी का फंदा डाल फांसी लगाकर आत्म हत्या कर ली। वहीं पोस्ट मार्टम हाउस में मृतक का भाई धर्मेन्द्र ने बताया कि चौदह मार्च होली के पर्व पर शाम को गांव से ही पंकज, राजू उर्फसटल्ला ने उसे मारा पीटा था। जिससे वह शाम को घर से निकल गया और वापस नहीं लौटा काफी खोजबीन करने के बाद शनिवार की दोपहर लगभग ढाई बजे गांव के बाहर गूलर के पेड से उसके भाई का शव लटका मिला।

ग्यारह हजार बिजली लाइन से सुअर की शिकार करने वालों ने ले ली एक व्यक्ति की जान एक अस्पताल में भर्ती

मोहम्मदी खीरी। तहसील के उचौलिया थाना क्षेत्र के अन्तर्गत शिकारियों की लापरवाही के चलते ग्यारह हजार बिजली की लाइन से जमीन मे कटिया डालकर शिकार करने वालों ने ले ली एक व्यक्ति की जान गयी, एक अस्पताल में भर्ती,घटना शुक्रवार की करीब रात की घटना बताई जा रही है गांव के दर्जनों लोग होली के लिए लकड़ी लेने जा रहे थे तभी पहले से ही जमीन पर पडी ग्यारह हजार की लाइन से कटिया की चपेट में आने से राघवेंद्र कुशवाह पुत्र जयपाल उम्र 28 वर्ष की दर्दनाक मौत हो गई सचिन पुत्र मुंशी काफी गम्भीर अवस्था मे है जिसको आस्पताल मे भर्ती कराया गया दोनों व्यक्ति कमलापुर गंगा सिंह के रहने वाले हैं सूत्र बताते है जिम्मेदारों की लापरवाही बताई जा रही है फिलहाल पुलिस ने कई लोगों को हिरासत मे लेकर पूछताछ की जा रही है।

ठगी पीड़ित जमाकर्ता परिवार ने मनाया होली मिलन

● डीएम-एसपी को धरनास्थल पर आने के लिए किया आमंत्रित

फतेहपुर। नहर कॉलोनी परिसर में ठगी पीड़ित जमाकर्ता परिवार की एक आवश्यक बैठक संपन्न हुई। संगठन के प्रदेश सचिव रामदेव सिंह परिहार की अध्यक्षता में संगठन के राष्ट्रीय संरक्षक सूरजदीन विश्वकर्मा मुख्य अतिथि एवं संगठन के जिलाध्यक्ष अमृतलाल व विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। सभी वक्ताओं ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। नहर कॉलोनी में होली मिलन समारोह का भी भव्य आयोजन किया गया। संगठन द्वारा एक सितंबर 2024 से लगातार धरना नहर कॉलोनी परिसर में 197 दिन से चल रहा है। जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक को आगामी 23 मार्च को आमंत्रण दिया गया है। 23 मार्च को संगठन द्वारा हजारों पीड़ित भगवा वस्त्र धारण करेंगे जो कि भारत सरकार द्वारा बॉन्ड एक्ट अधिनियम जमा पाबंदी योजना कानून 2019 की अनु पालन सुनिश्चित करके सभी ठगी पीड़ितों का भुगतान सुनिश्चित करें। बैठक में मुख्य रूप से रामशरण दास, राकेश कुमार साहू, अंबिका प्रसाद, राजकुमार गुप्ता, सतीश कुमार, दयाराम, प्रदीप कुमार शर्मा, रामसहाय, बिंदा प्रसाद, राम अवतार, अवधेश कुमार, रामकरण, विनोद कुमार मौर्या, चंद्रभूषण, जगमोहन, फूल कुमार, अरुण कुमार, रुद्रपाल शर्मा, प्रेम कुमार, चंद्रशेखर प्रजापति, हरिओम प्रजापति, हिमाचल आदि ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

रेणुका सचान बनी भाजपा जिलाध्यक्ष

पायनियर समाचार सेवा। कानपुर देहात

भाजपा ने जनपद में पिछडा कार्ड खेलते हुये अनुभवी व तेजतर्रार भाजपा नेता रेणुका चौहान को जिलाध्यक्ष के पद पर मनोनीत किया है। देश की आधी आबादी को सॅगठन में महत्वपूर्ण दायित्व मिलने पर भाजपाईयों ने खुशी जतायी है।

नवमनोनीत भाजपा जिलाध्यक्ष किसी परिचय की मोहताज नहीं है, वह पार्टी में वर्ष 2014 में मण्डल कोषाध्यक्ष,, 2015 में उज्जवला योजना की जिला सॅयोजक, 2016 में ही एनजीओ प्रकोष्ठ की सॅयोजक, 2018 में महिला मोर्चा की महामंत्री, 2020 में महिला मोर्चा की जिला सॅयोजक, 2021 में महिला मोर्चा के जिलाध्यक्ष पद की सेवाओं के निर्वहन में अपनी स्पष्टता कार्यकुशलता से पार्टी को महिलाओं में लोकप्रिय करवाने में सफल रही। रेणुका पिछडा वर्ग का प्रमुख चेहरा होने के अलावा जिलाध्यक्ष के रूप में पहली महिला है, भाजपा ने एक तीर से दो निशाने साधे है एक तो एक महिला को पहली बार भाजपा का जिलाध्यक्ष मनोनीत किया है वहीं पिछडे वर्ग को भी लम्बे अर्से बाद पार्टी के जिलाध्यक्ष के रूप में प्रभावी प्रतिनिधित्व मिला है। रेणुका सचान को जिलाध्यक्ष बनाये जाने पर कैबिनेट मंत्री राकेश सचान, राज्यमंत्री प्रतिभा शुक्ला, राज्यमंत्री अजीत पाल, सॉसद देवेन्द्र सिंह भोले, निर्वतमान जिलाध्यक्ष मनोज शुक्ला, विधायक नीलम कटियार, विधायक पूनम सॅखवार, एएमएलसी व पूर्व जिलाध्यक्ष अविनाश चौहान, एएमएलसी अरूण पाठक, रूरा चैयरमैन रामजी गुप्ता, पूर्व जिलाध्यक्ष मदन पाण्डेय, कमलेश पाण्डेय, रजोल शुक्ला, शैलेन्द्र राजावत, मण्डल अध्यक्ष रूरा पुच्चू अवस्थी, विनोद सक्सेना सहित अन्य भाजपाईयों ने हर्ष व्यक्त करते हुये नवनियुक्त जिलाध्यक्ष को बधाई दी है।

जिला कारागार में हुआ साक्षरता मूल्यांकन का आयोजन

प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते बंदी।

● पॉच दर्जन बंदियों ने किया प्रतियोगिता में प्रतिभाग

गुरसहायगंज, कन्नौज। जिला कारागार कन्नौज में सम्पूर्ण साक्षरता मिशन चलाया जा रहा है। इसका उद्देश्य है कि कोई भी बंदी निरक्षर नहीं रहेगा। कारागार में प्रतिदिन साक्षरता कक्षायें दो घण्टे तक लगती हैं। इन कक्षाओं में निरक्षर बंदियों को पढ़ना लिखना सिखाया जाता है। यह जानकारी रविवार को जिल कारागार अधीक्षक मो. अकरम खॉ ने दी। इससे पूर्व उनके नेतृत्व में ट्रुथ मिशन स्कूल फ्तेहपुर के सौजन्य से लेविल 01, 02 व 03 की मूल्यांकन परीक्षा (पढना, लिखना व गणना) का आयोजन कराया गया। जिसमें 04 महिला बंदी तथा 55 पुरूष बंदी सम्मिलित हुये। प्रश्न पत्र ट्रुथ मिशन स्कूल फ्तेहपुर द्वारा कारागार को उपलब्ध कराये गये। जिसमें हिन्दी पढने, लिखने एवं संख्या सम्बन्धी प्रश्नो के उत्तर दिया जाना अंकित किया गया। उक्त परीक्षा के लिये समय 01 घण्टा निर्धारित किया गया। मूल्यांकन परीक्षा के समय ट्रुथ मिशन स्कूल फ्तेहपुर के फादर व उनकी टीम तथा जेल प्रशासन के सम्बन्धित कर्मचारीगणों ने उपस्थित रह कर सहयोग किया। इस आयोजन से सभी बन्दी विद्यार्थी खुश व उत्साहित थे।

विश्व टीकाकरण पर संगठन ने चलाया जागरूकता अभियान

फतेहपुर। विश्व टीकाकरण दिवस पर नेहरू युवा केंद्र व युवा विकास समिति ने वृद्धाश्रम में टीकाकरण के बारे में महिलाओं के लिए जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। युवा विकास समिति के अध्यक्ष ज्ञानेंद्र मिश्रा ने बताया कि टीकाकरण से कई जानलेवा बीमारियों से बचा जा सकता है। उन्होंने कहा कि अस्पताल में नि:शुल्क टीके लगाए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि प्रत्येक वर्ष 16 मार्च को विश्व टीकाकरण दिवस मनाया जाता है। इसके महत्व थीम और इतिहास के बारे में जानकारी दी गई। बताया गया कि टीकाकरण संक्रामक रोगों को रोकने के लिए उपलब्ध सबसे शक्तिशाली साधनों में से एक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा यह विश्व प्रतिरक्षण दिवस स्थापित किया गया है। डॉ. महेन्द्र मिश्रा भी उपस्थित रहे।

चिकित्सकों ने बताया कि यह दिन वैश्विक स्तर पर कार्रवाई के लिए आह्वान के रूप में कार्य करता है, जिसमें लोगों, स्वास्थ्य कर्मियों, सरकारों और संगठनों से घातक बीमारियों के प्रसार को रोकने और समुदायों की रक्षा के लिए टीकाकरण प्रयासों को प्राथमिकता देने का आग्रह किया जाता है। टीकाकरण सार्वजनिक स्वास्थ्य सुनिश्चित करने के सबसे प्रभावी तरीकों में से एक है, और विश्व टीकाकरण दिवस दुनिया भर में इस संदेश को बढ़ावा देने का अवसर प्रदान करता है।

शैलेन्द्र साहित्य सरोवर की 376वीं साप्ताहिक काव्य गोष्ठी संपन्न

● प्राकट्य चित्त चतुरानन के, चातुर्वर्णों में जो ललाम। संगणक शुभाशुभ कर्मों के, श्रीचित्रगुप्त जी को प्रणाम

फतेहपुर। मुराइन टोला स्थित हनुमान मंदिर में शैलेन्द्र साहित्य सरोवर के बैनर तले 376वीं साप्ताहिक रविवासरीय सरस काव्य गोष्ठी का आयोजन के.पी.सिंह कछवाह की अध्यक्षता एवं शैलेन्द्र कुमार द्विवेदी के संचालन में हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में मंदिर के महंत स्वामी रामदास उपस्थित रहे। काव्य गोष्ठी का शुभारंभ करते हुए श्री कछवाह ने वाणी वंदना मे अपने भाव प्रसून प्रस्तुत करते हुए कहा- मातु शारदे वंदना, धर चरणों में शीश। अंतर्मन निर्मल बने, दो ऐसा आशीष।। पुन: कार्यक्रम को गति देते हुए काव्य पाठ में कुछ इस प्रकार से अपने अंतर्भावों को प्रस्तुत किया- किसलिए तन मिला, यह मनन कीजिए। दिव्य कर्मों के खातिर जतन कीजिए।। डा. सत्य नारायण मिश्र ने अपने भावों को एक छंद के माध्यम से कुछ इस प्रकार व्यक्त किया- स्वागत स्वागत मधुमय वसंत, तुमसे प्रमुदित हैं दिग् दिगंत। अमरावलियां हैं बौराईं, हैं प्रेम पुलक से पूर्ण कंत।।

दिनेश कुमार श्रीवास्तव ने अपने भावों को मुक्तक में कुछ इस प्रकार पिरोया- प्राकट्य चित्त चतुरानन के, चातुर्वर्णों में जो ललाम। संगणक शुभाशुभ कर्मों के, श्री चित्रगुप्त जी को प्रणाम।। प्रदीप कुमार गौड़ ने अपने क्रम में काव्य पाठ में कुछ इस प्रकार भाव प्रस्तुत किये- निशि दिन है बढ़ रहा प्रदूषण, बनें हुए हैं हम अनजान। पालीथिन अब है प्रतिबंधित ,चलन बंद कर बनो सुजान।। विनय कुमार दीक्षित ने काव्यपाठ में अपने भावों को कुछ इस प्रकार से शब्द दिए - मस्त है तू सब भुलाकर, कुछ तनिक तो ध्यान कर ले। जिसलिए आया यहां पर, राम का गुणगान कर ले।। कवि सुन्दरम सोनी ने पढ़ा- ष्होली के त्योहार का, उड़ता फागुआ रंग। धरती पुलकित हो रही, मिली हवा में भंग।। काव्य गोष्ठी के आयोजक एवं संचालक शैलेन्द्र कुमार द्विवेदी ने अपने भाव एक गीत के माध्यम से कुछ यों व्यक्त किए- तुमको पाया, मुस्कुराया, जिंदगी अच्छी लगी। दिल लगाया,सिर झुकाया, बंदगी अच्छी लगी।। रोशनी में भी तुम्हीं और तीरगी में भी हो तुम, दिल से दिल की गुफ्तगू और आशिकी अच्छी लगी।। कार्यक्रम के अंत में स्वामी जी ने सभी को आशीर्वाद प्रदान किया ।आयोजक ने आभार व्यक्त किया ।

पायनियर
लखनऊ, सोमवार, 17 मार्च , 2025

संभल में शाही जामा मस्जिद की बाहरी दीवार की पुताई का काम हुआ शुरू

संभल (भाषा) उत्तर प्रदेश के संभल जिले में शाही जामा मस्जिद की बाहरी दीवार की पुताई का काम रविवार सुबह शुरू हो गया। शाही जामा मस्जिद-हरिहर मंदिर मामले में मस्जिद पक्ष के वकील शकील वारसी ने रविवार को पीटीआई-भाषा को बताया,‘संभल में शाही जामा मस्जिद की बाहरी दीवार की पुताई का काम शुरू हो गया’। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने 12 मार्च को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) को एक सप्ताह के भीतर मस्जिद की पुताई कराने का निर्देश दिया था। उच्च न्यायालय के आदेश के बाद, एएसआई की एक टीम ने 13 मार्च को मस्जिद की पुताई के लिए जरूरी सामान और श्रमिकों की संख्या का आकलन किया था। शाही जामा मस्जिद प्रबंध समिति के सचिव मसूद फारूकी ने शनिवार को कहा था कि एएसआई की एक टीम ने दोपहर में मस्जिद आकर इस बारे में चर्चा की कि पुताई के काम में कितने श्रमिकों और सामग्री की जरूरत है। शाही जामा मस्जिद की बाहरी दीवार की पुताई में किन रंगों का इस्तेमाल किया जाएगा, इस बारे में मस्जिद प्रबंधन समिति के अध्यक्ष जफर अली ने कहा,‘हम हरा, सफेद और सुनहरा रंग इस्तेमाल करते हैं। हमने हमेशा इनका इस्तेमाल किया है और हम आगे भी यही करेंगे’। अली ने कहा कि आज मस्जिद की बाहरी दीवार की पुताई में करीब 10 श्रमिक लगाए गए हैं और कल दो से तीन गुना मजदूर काम करेंगे। उन्होंने बताया, उच्च न्यायालय ने आदेश दिया है कि एएसआई और मुस्लिम पक्ष मिलकर रंगाई-पुताई कराएंगे, जो हम करा रहे हैं। रंग-रोगन करने वाले सभी श्रमिक एएसआई के लाए हुए हैं। मैं खुद भी मौके पर मौजूद रहूंगा। मस्जिद में भगवा रंग से भी पुताई करने की हिंदू पक्ष की कथित मांग के बारे में पूछे जाने पर अली ने कहा, यह मांग नाजायज और गलत है। मस्जिद में सैकड़ों वर्षों से जिन रंगों से पुताई होती रही है, अब भी उन्हीं से होगी। ठेकेदार अरमान अली ने कहा,‘मस्जिद की रंगाई-पुताई का काम 10 दिन में हो जाएगा। हालांकि, हमारा लक्ष्य एक सप्ताह का है’।

उन्होंने यह भी कहा कि केवल बाहरी हिस्से की पुताई करनी है और आज (रविवार को) 9-10 लोग काम कर रहे हैं। पिछले साल 24 नवंबर को मुगलकालीन शाही जामा मस्जिद के सर्वेक्षण के दौरान भड़की हिंसा में चार लोगों की मौत हो गई थी और पुलिस कर्मियों सहित कई लोग घायल हो गए थे।

निजी विश्वविद्यालय में खुले में नमाज पढ़ने का मुख्य आरोपी हुआ गिरफ्तार

मेरठ।(भाषा) उत्तर प्रदेश के मेरठ में पुलिस ने होली के दिन एक निजी विश्वविद्यालय में खुले में नमाज पढ़े जाने से जुड़े मामले के मुख्य आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस क्षेत्राधिकारी शिव प्रताप सिंह ने रविवार को पीटीआई-भाषा को बताया, आईआईएमटी विश्वविद्यालय परिसर में खुले में नमाज अदा करने का एक वीडियो सोशल मीडिया पर प्रसारित हुआ था। इस मामले के मुख्य आरोपी खालिद मेवाती को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

सिंह के मुताबिक, मामले में गंगा नगर थाने में कार्तिक हिंदू नामक व्यक्ति की शिकायत पर मेवाती के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया था। आईआईएमटी विश्वविद्यालय के प्रवक्ता सुनील शर्मा ने बताया कि आंतरिक जांच में पाया गया है कि विश्वविद्यालय में सांप्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने के इरादे से बिना इजाजत परिसर में खुले में नमाज पढ़ी गई और इसका वीडियो सोशल मीडिया पर प्रसारित किया गया। शर्मा ने कहा, विश्वविद्यालय ने वीडियो अपलोड करने वाले खालिद प्रधान के खिलाफ पुलिस और प्रशासनिक कार्वाई का अनुरोध किया था। उन्होंने बताया कि आरोपियों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 299 (जानबूझकर और दुर्भावनापूर्ण कार्य, जिसका उद्देश्य किसी वर्ग के धर्म या धार्मिक आस्था का अपमान करके उसकी धार्मिक भावनाओं को आहत करना है) और सूचना प्रौद्योगिकी (संशोधन) अधिनियम 2008 की सुसंगत धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है। आईआईएमटी विश्वविद्यालय के छात्र खालिद प्रधान उर्फ खालिद मेवाती की ओर से सोशल मीडिया पर एक वीडियो साझा किए जाने के बाद यह घटना सुर्खियों में आई थी। वीडियो में छात्र विश्वविद्यालय परिसर में खुले में नमाज अदा करते दिखाई दे रहे थे। स्थानीय हिंदू समूहों ने इस घटना को लेकर विरोध-प्रदर्शन किया था। वहीं, विश्वविद्यालय प्रशासन ने मामले को लेकर खालिद प्रधान और तीन सुरक्षाकर्मियों को निलंबित कर दिया था।

बरेली में प्रोफेसर की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत

बरेली। (भाषा) उत्तर प्रदेश के बरेली जिले में एक निजी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर सुनील कुमार सिंह (57) की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। पुलिस के एक अधिकारी ने रविवार को यह जानकारी दी। इज्जतनगर थाना प्रभारी निरीक्षक (एसएचओ) वीरेंद्र सिंह ने बताया कि महानगर निवासी सुनील कुमार सिंह बारादरी इलाके में किराए के एक मकान में रहते थे।उन्होंने बताया कि सिंह के दो बेटे हैं, जिनमें से बड़ा बेटा रिक्की नोएडा में नौकरी करता है और छोटा बेटा सिद्धांत बरेली में ही महानगर कॉलोनी में रहता है।अधिकारी ने बताया कि सिंह होली पर छोटे बेटे सिद्धांत के घर आए हुए थे, जहां उनकी मौत हो गई।उन्होंने बताया कि घटना की जानकारी मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने जांच शुरू की तो सामने आया कि पिता-पुत्र के बीच किसी बात को लेकर हुए विवाद के दौरान यह घटना हुई लेकिन बाद में पता चला कि सुनील कुमार अचानक जमीन पर गिर गए और उनके मुंह से खून निकलने लगा, जिससे मौके पर ही उनकी मौत हो गई।अधिकारी ने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के सटीक कारणों का पता चलेगा।

न्यू इंडिया बैंक मामला: आरोपियों ने ईओडब्ल्यू के समक्ष किया आत्मसमर्पण, अब तक छह गिरफ्तार

मुंबई। (भाषा) मुंबई पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) ने रविवार को न्यू इंडिया कोऑपरेटिव बैंक में 122 करोड़ रुपए के गबन के मामले में वांछित आरोपी को गिरफ्तार किया है। एक अधिकारी ने रविवार को बताया कि पिछले एक महीने से फरार चल रहे अरुणाचलम उल्लानाथन मारुथुवर (62) ने सुबह दक्षिण मुंबई स्थित ईओडब्ल्यू कार्यालय में आत्मसमर्पण कर दिया।

ईओडब्ल्यू अधिकारी ने बताया कि उसे अदालत में पेश किया गया, जहां से उसे 18 मार्च तक पुलिस हिरासत में भेज दिया गया है। इस मामले में यह छठी गिरफ्तारी है। पुलिस के अनुसार, अरुणाचलम को सहकारी बैंक के पूर्व महाप्रबंधक और खातों के प्रमुख हितेश मेहता से गबन की गई राशि में से लगभग 30 करोड़ रुपए मिले थे।

वित्तीय अपराध निरोधक इकाई ने शुक्रवार को वांछित आरोपी और सिविल ठेकेदार कपिल देधिया को पड़ोसी गुजरात के वडोदरा से गिरफ्तार किया। यहां की एक अदालत ने उसे 19 मार्च तक पुलिस हिरासत में भेज दिया है। पुलिस ने बताया कि गबन की गई राशि में से 12 करोड़ रुपए उसके खाते में जमा किए गए थे।पुलिस के अनुसार, न्यू इंडिया कोऑपरेटिव बैंक के मुंबई स्थित प्रभादेवी और गोरेगांव कार्यालयों की तिजोरियों से 122 करोड़ रुपए निकाल लिए गए। छह व्यक्तियों की गिरफ्तारी के अलावा कुछ और व्यक्तियों को भी वांछित आरोपी बनाया गया है, जिनमें बैंक के पूर्व चेयरमैन हिरेन भानु और उनकी पत्नी, पूर्व वाइस चेयरमैन गौरी भानु भी शामिल हैं, जो घोटाला सामने आने से ठीक पहले विदेश भाग गए थे।

भाजपा विधायक की केदारनाथ धाम में गैर-हिंदुओं पर प्रतिबंध की मांग

देहरादून। (भाषा) उत्तराखंड में 30 अप्रैल से शुरू हो रही चारधाम यात्रा से पहले केदारनाथ विधानसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की विधायक आशा नौटियाल ने रविवार को केदारनाथ धाम में मांस-मछली और शराब जैसी गलत गतिविधियां कर रहे गैर-हिंदुओं पर प्रतिबंध लगाने की मांग करते हुए कहा कि ऐसे लोग धाम को बदनाम करने का प्रयास कर रहे हैं।नौटियाल ने यहां एक वीडियो में कहा कि हाल में यात्रा की तैयारियों को लेकर स्थानीय होटल, ढ़ाबा व्यवसाई और घोड़े-खच्चर रखने वाले लोगों के साथ हुई एक बैठक में यह बात खुलकर सामने आई थी।उन्होंने कहा कि कुछ लोगों ने यह मुद्दा उठाया था कि गैर-हिंदू लोग वहां मांस, मछली और शराब के व्यापार जैसी गलत गतिविधियां में संलिप्त हैं।भाजपा विधायक ने कहा, जो भी लोग धाम को बदनाम करने का काम करते हैं, उन पर प्रतिबंध लगना ही चाहिए। नौटियाल ने यह भी कहा कि केदारनाथ और प्रदेश के अन्य धामों के दर्शन के लिए पूरे देश और विश्व से श्रद्धा के साथ लोग आते हैं इसलिए उनकी आस्था को ठेस नहीं पहुंचनी चाहिए। उन्होंने कहा कि एक जनप्रतिनिधि होने के नाते उनका यह कर्तव्य बनता है कि वह स्थानीय लोगों द्वारा उठाई गई मांगों को उचित मंच पर रखें और सुनिश्चित करें कि गलत गतिविधियों पर रोक लगाई जाए।कांग्रेस की उत्तराखंड इकाई ने विधायक के इस बयान की कड़ी भर्त्सना करते हुए कहा कि त्योहारों व धार्मिक यात्राओं के नाम पर नफरत फैलाना भाजपा का राष्ट्रीय एजेंडा है।

प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष सूर्यकांत धस्माना ने यहां संवाददाताओं से कहा, चाहे महाकुंभ मेला हो या होली और जुमे की नमाज या आगामी चारधाम यात्रा, सभी मौकों पर भाजपा इनके बहाने अल्पसंख्यक मुस्लिम समाज को निशाना बनाकर देश और प्रदेश का सांप्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने का प्रयास करती है। यह भाजपा का राष्ट्रीय एजेंडा है। उन्होंने कहा कि ऐसा करके सरकार बेरोजगारी, मंहगाई, कानून एवं व्यवस्था जैसे असली मुद्दों से जनता का ध्यान भटकाना चाहती है।धस्माना ने राज्य सरकार से चारधाम यात्रा निर्विघ्न संपन्न कराने और किसी भी प्रकार की अवांछनीय हरकत करने वाले व्यक्ति, फिर चाहे वह किसी भी धर्म, जाति या प्रांत का हो, उसके खिलाफ सख्त से सख्त कार्वाई सुनिश्चित करने की मांग की।

जम्मू-कश्मीर में 200 से अधिक निवेशकों को कारोबार करने के लिए भूमि आवंटित की गई

जम्मू। जम्मू-कश्मीर के बाहर के 200 से अधिक निवेशकों को जम्मू-कश्मीर में अपनी व्यावसायिक इकाइयां स्थापित करने के लिए पिछले एक दशक में औद्योगिक एस्टेट में भूमि प्रदान की गई है। आधिकारिक आंकड़ों में यह जानकारी दी गई।

अगस्त, 2019 में अनुच्छेद 370 के निरस्त होने और तत्कालीन राज्य को दो केंद्र शासित प्रदेशों में विभाजित करने के बाद बाहरी निवेशकों द्वारा भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया में कई गुना वृद्धि हुई है। बाहरी निवेशकों में से ज्यादातर दिल्ली, हरियाणा और पंजाब से हैं।उद्योग एवं वाणिज्य विभाग द्वारा साझा किए गए आंकड़ों के अनुसार, अधिकांश निवेशकों ने जम्मू क्षेत्र के कठुआ और सांबा जिलों को अपनी फर्म स्थापित करने के लिए प्राथमिकता दी, जबकि घाटी में बहुत कम व्यवसाई रुचि दिखा रहे हैं।

चालू सत्र में अब तक चीनी उत्पादन 16 प्रतिशत गिरा

नई दिल्ली। (भाषा) भारत का चीनी उत्पादन चालू सत्र 2024-25 में अब तक 16.13 प्रतिशत घटकर 2.37 करोड़ टन रह गया है, जिससे उच्च प्रारंभिक अनुमानों के आधार पर तैयार की गई सरकारी नीतियों के लिए चुनौतियां पैदा हो गई हैं। सहकारी संस्था एनएफसीएसएफ ने रविवार को यह जानकारी दी। राष्ट्रीय सहकारी चीनी कारखाना महासंघ (एनएफसीएसएफ) ने चीनी उत्पादन आंकड़ों में अस्पष्टता पर चिंता व्यक्त की है, क्योंकि 2024-25 गन्ना पेराई सत्र (अक्टूबर-सितंबर) शुरू में अनुमानित उत्पादन से काफी कम उत्पादन के साथ समाप्त होने वाला है।

उद्योग निकाय ने बयान में कहा कि सत्र शुरू होने के बाद से चीनी उत्पादन अनुमानों को बार-बार संशोधित कर नीचे लाया गया है, जिससे सरकारी नीतियों के लिए चुनौतियां पैदा हो रही हैं, जो 3.33 करोड़ टन के प्रारंभिक अनुमान के आधार पर तैयार की गई थीं।

एनएफसीएसएफ ने कहा, उद्योग के एक वर्ग ने केंद्र सरकार को 3.33 करोड़ टन चीनी उत्पादन का अनुमान पेश किया। उसके आधार पर केंद्र सरकार ने अपनी नीतियां बनानी शुरू कर दीं।

केंद्र सरकार ने प्रारंभिक उत्पादन अनुमान के आधार पर जनवरी, 2025 में 10 लाख टन चीनी के निर्यात की अनुमति दी थी, लेकिन अब वास्तविक उत्पादन के आंकड़े कम होने के कारण आपूर्ति-मांग में असंतुलन का सामना करना पड़ रहा है।एनएफसीएसएफ के आंकड़ों के अनुसार, भारत के सबसे बड़े चीनी उत्पादक राज्य महाराष्ट्र में उत्पादन चालू सत्र में 15 मार्च तक घटकर 78.6 लाख टन रह गया, जबकि एक साल पहले यह एक करोड़ टन था।देश के दूसरे सबसे बड़े उत्पादक राज्य उत्तर प्रदेश में उत्पादन 88.5 लाख टन से घटकर 80.9 लाख टन रह गया, जबकि इसी अवधि में कर्नाटक का उत्पादन 49.5 लाख टन से घटकर 39.1 लाख टन रह गया।एनएफसीएसएफ के अध्यक्ष हर्षवर्धन पाटिल ने कहा कि अधिकांश राज्यों में पेराई सत्र मार्च के अंत तक समाप्त हो जाएगा, जबकि उत्तर प्रदेश की मिलें अप्रैल के मध्य तक चलेंगी।

पाटिल ने पेराई अवधि, विशेष रूप से महाराष्ट्र में कम होने पर चिंता जताई, जहां पेराई सत्र केवल 83 दिनों तक चला जबकि आर्थिक रूप से व्यवहार्य अवधि 140-150 दिन है।

राज्य बजट में रुपए के चिह्न को तमिल अक्षर से बदलना भाषा नीति पर हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक: स्टालिन

चेन्नई। (भाषा) तमिलनाडु में सत्तारूढ़ द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) के अध्यक्ष और मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने रविवार को कहा कि 2025-26 के लिए पेश किए गए राज्य बजट में भारतीय रुपए के प्रतीक को तमिल अक्षर रु से बदला जाना इस बात का प्रतीक है कि उनकी पार्टी भाषा नीति को लेकर कितनी दृढ़ है।स्टालिन ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर स्पष्ट हमला करते हुए कहा कि उन्होंने बजट का लोगो जारी किया था, लेकिन जिन्हें तमिल पसंद नहीं है, उन्होंने इसे बड़ी खबर बना दिया।

मुख्यमंत्री ने अपने नियमित उंगालिल ओरुवन (आप में से एक) वीडियो संबोधन में रुपए के चिह्न के मुद्दे पर आलोचना के लिए केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण पर कटाक्ष किया। स्टालिन ने कहा कि वह इस मामले पर जवाब दे सकती हैं, लेकिन तमिलनाडु की उसके हिस्से की राशि जारी करने की अर्जी पर नहीं।मुख्यमंत्री ने कहा, मैंने बजट का लोगो जारी किया था। हमने रु शब्द का इस्तेमाल यह दिखाने के लिए किया था कि हम भाषा नीति के प्रति कितने दृढ़ हैं। लेकिन जो लोग तमिल को पसंद नहीं करते, उन्होंने इसे बड़ी खबर बना दिया। तमिलनाडु सरकार द्वारा बजट में रुपए के चिह्न की जगह रु (स्थानीय भाषा में राष्ट्रीय मुद्रा को दर्शाने वाले रुबाई का पहला अक्षर) इस्तेमाल किए जाने से विवाद पैदा हो गया था और भाजपा ने इस पर कड़ी आपत्ति जताई थी।

मोबाइल का इस्तेमाल करने से रोकने पर नाबालिग लड़की ने आत्महत्या की

भदोही। (भाषा) उत्तर प्रदेश के भदोही जिले में 17 वर्षीय एक नाबालिग लड़की ने देर रात तक मोबाइल फोन का इस्तेमाल करने से कथित तौर पर रोकने और मां की डांट से नाराज होकर फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने रविवार को यह जानकारी दी।पुलिस ने बताया कि भदोही के चौरी थानाक्षेत्र के अमवा खुर्द गांव में रविवार सुबह यह घटना उस सामने आई, जब अर्चना पटेल (17) के दादा मानिक लाल पटेल ने उसे पंखे से लटका हुआ पाया।

पुलिस के मुताबिक, परिवार के सदस्यों ने दरवाजा तोड़कर लड़की को नीचे उतारा लेकिन तब तक उसकी मौत हो चुकी थी।पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। चौरी थाना प्रभारी निरीक्षक (एसएचओ) श्याम नारायण यादव ने बताया कि अर्चना के पिता जय कुमार पटेल गुजरात के सूरत में काम करते हैं जबकि उनकी पत्नी और चार बच्चे गांव में अपने दादा के साथ रहते हैं।उन्होंने बताया कि अर्चना ने हाल ही में 12वीं की बोर्ड परीक्षा दी थी। बोर्ड की परीक्षा 12 मार्च को समाप्त हुई थी। अधिकारी ने बताया कि शनिवार देर रात अर्चना की मां ने उसे ज्यादा देर तक मोबाइल फोन का इस्तेमाल करने के लिए डांटा। उन्होंने बताया कि अर्चना ने अपनी मां को परीक्षाएं खत्म होने की बात कही और डांट से नाराज होकर कमरे में चली गई। अधिकारी ने बताया कि सुबह जब अर्चना काफी देर तक नीचे नहीं आई तो उसके दादा उसे देखने गए और उसे फंदे से लटका हुआ पाया।

उन्होंने बताया कि पुलिस को घटना की सूचना दी गई और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया।

हाथरस में यौन शोषण के आरोप में प्रोफेसर के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज, निलंबन

हाथरस। उत्तर प्रदेश के हाथरस जिले में एक निजी महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा एक प्रोफेसर के खिलाफ कथित तौर पर यौन शोषण के आरोपों पर प्राथमिकी दर्ज कर ली गई। अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी।अधिकारियों ने बताया कि वहीं महाविद्यालय प्रशासन ने प्रोफेसर को निलंबित कर दिया है।पुलिस क्षेत्राधिकारी (सीओ) योगेंद्र कृष्ण नारायण ने बताया कि सेठ फूलचंद्र बागला डिग्री कॉलेज में भूगोल विभाग के प्रमुख प्रोफेसर रजनीश के खिलाफ 13 मार्च को पुलिस ने एक अज्ञात शिकायत पर प्राथमिकी दर्ज की।

शमी की बेटी के होली खेलने पर बरेली के मौलाना ने जताई आपत्ति

बरेली। (भाषा) रमजान में मैच के दौरान भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी मोहम्मद शमी के एनर्जी ड्रिंक पीने पर विवादास्पद बयान देने वाले स्वयंभू धर्मगुरु एवं ऑल इंडिया मुस्लिम जमात के अध्यक्ष मौलाना शहाबुद्दीन रजवी ने अब शमी की बेटी के होली खेलने पर आपत्ति जताते हुए इसे शरीयत के खिलाफ करार दिया है। रजवी ने शनिवार देर शाम जारी एक वीडियो में कहा कि शमी की बेटी आयरा का होली खेलना शरीयत के खिलाफ है। उन्होंने कहा कि वह छोटी बच्ची है, अगर वह बिना समझे होली खेलती है तो कोई बात नहीं, लेकिन अगर वह समझदार है और फिर भी होली खेलती है तो इसे शरीयत के खिलाफ माना जाएगा। रजवी ने यह भी कहा कि उन्होंने शमी को पहले भी नसीहत दी थी, लेकिन उसके बावजूद उनकी बेटी का होली खेलने का वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आया है। उन्होंने कहा, मैंने शमी समेत सभी परिजनों से अपील की है कि जो भी शरीयत में नहीं है, उसे अपने बच्चों को न करने दें। होली हिंदुओं का बहुत बड़ा त्योहार है। लेकिन, मुसलमानों को होली खेलने से बचना चाहिए। क्योंकि, अगर कोई शरीयत को जानते हुए भी होली खेलता है, तो वह गुनाह है। रजवी ने इससे पहले छह मार्च को चैंपियंस ट्रॉफी टूर्नामेंट में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मैच के दौरान एनर्जी ड्रिंक पीने को लेकर शमी पर निशाना साधा था और उन्हें रोजा नहीं रहने पर गुनहगार और शरीयत की नजर में मुजरिम करार दिया था। उन्होंने कहा था, क्रिकेट खेलना बुरा नहीं है, लेकिन मोहम्मद शमी को अपनी धार्मिक जिम्मेदारियों को पूरा करना चाहिए। मैं शमी को सलाह देता हूं कि वह शरीयत के नियमों का पालन करें और अपने धर्म के प्रति जिम्मेदार रहें।

पेज 1 का शेष

पाकिस्तानी...

में कहा, जो लोग बलूचिस्तान की शांति के साथ खिलवाड़ करते हैं, उनका दुखद अंत होगा। मंत्री नकवी ने विस्फोट की निंदा की और पीड़ितों के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की तथा घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। आंतरिक मंत्रालय द्वारा सोशल मीडिया पर साझा किए गए एक बयान के अनुसार, नकवी ने इस हमले को क्रूरतापूर्ण कृत्य बताते हुए इस बात पर जोर दिया कि राज्य विरोधी तत्व देश को अस्थिर करने का प्रयास कर रहे हैं और उन्होंने जोर देकर कहा कि इस तरह की कायरतापूर्ण हरकतें देश के संकल्प को हिला नहीं पाएंगी। बलूचिस्तान सरकार के प्रवक्ता शाहिद रिंद ने भी निर्दोष लोगों को निशाना बनाकर किए गए हमले की निंदा की। बलूचिस्तान में पिछले एक साल में आतंकवादी हमलों में वृद्धि देखी गई है। ईरान और अफगानिस्तान की सीमा से सटा बलूचिस्तान लंबे समय से चल रहे हिंसक विद्रोह का केंद्र है। बलूच विद्रोही समूह अक्सर इस तेल और खनिज समृद्ध प्रांत में सुरक्षा कर्मियों, सरकारी परियोजनाओं और चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (सीपीईसी) परियोजनाओं को निशाना बनाकर हमले करते हैं। अतीत में, इस क्षेत्र में रेलवे पटरियों पर बलूच आतंकवादियों द्वारा रॉकेट या रिमोट-नियंत्रित बमों का उपयोग करके हमला किया गया है, और बीएलए ने अधिकांश हमलों की जिम्मेदारी ली है।

पाकिस्तान ने...

से जीवन के मूल्यों को सीखने के लिए खुद को धन्य मानते हैं, उन्होंने 1925 से लोगों को देश के लिए खुद को समर्पित करने के लिए प्रेरित करने के लिए काम करने के लिए इसकी सराहना की। उन्होंने कहा कि आरएसएस ने उन्हें अपने जीवन का उद्देश्य दिया, उन्होंने कहा कि इसके विभिन्न सहयोगी कई क्षेत्रों में और समाज के हर वर्ग से जुड़े हुए हैं। भाजपा में जाने से पहले खुद आरएसएस के प्रचारक रहे मोदी ने कहा कि वह कम उम्र में ही हिंदुत्व संगठन की ओर आकर्षित हो गए थे क्योंकि वह गुजरात में अपने घर के पास इसकी शाखा में गाए जाने वाले देशभक्ति के गीतों से बहुत प्रभावित थे। आरएसएस के दर्शन के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा कि जो भी व्यक्ति करे, उसे देश के लिए काम करना चाहिए। मैंने नहीं सुना कि आरएसएस जितना बड़ा कोई स्वैच्छिक संगठन है। उन्होंने कहा कि आरएसएस सिखाता है कि देश सर्वोच्च है और लोगों की सेवा करना भगवान की सेवा करने जैसा है। उन्होंने कहा, मैं ऐसे पवित्र संगठन से मूल्य पाकर धन्य महसूस करता हूं। मोदी ने कहा कि हिंदुत्व संगठन ने अपने 100 साल के सफर में ध्यान से दूर रहते हुए एक साधक के समर्पण के साथ अपने उद्देश्य के लिए खुद को समर्पित किया है। उन्होंने सेवा भारती, वनवासी कल्याण आश्रम और भारतीय मजदूर संघ जैसे संगठनों के व्यापक काम का हवाला देते हुए कहा कि आरएसएस लोगों को समाज के लिए काम करने के लिए प्रेरित करता है। उन्होंने कहा कि आरएसएस से जुड़ी एक और संस्था विद्या भारती करीब 25,000 स्कूल चलाती है और करोड़ों छात्रों को सस्ती कीमत पर शिक्षा मिली है। प्रधानमंत्री ने कहा कि वामपंथी यूनियनें श्रमिकों को एकजुट होने के लिए कहती हैं ताकि वे दूसरों से निपट सकें, जबकि आरएसएस से प्रेरित श्रमिक संघ अपने कार्यकर्ताओं से दुनिया को एकजुट करने के लिए कहता है। तीन घंटे से अधिक समय तक चली बातचीत के दौरान मोदी ने रामकृष्ण मिशन, इसके संस्थापक स्वामी विवेकानंद और इसके भिक्षु स्वामी आत्मस्थानंद का भी उल्लेख किया, जिन्होंने उनके आध्यात्मिक मूल्यों को आकार दिया। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ अपने संबंधों के बारे में पूछे जाने पर मोदी ने कहा कि ट्रंप के साथ उनका आपसी विश्वास का बंधन है और वे अच्छी तरह से जुड़ते हैं, क्योंकि वे अपने-अपने राष्ट्रीय हितों को हर चीज से ऊपर रखने में विश्वास करते हैं। मोदी ने ट्रंप को साहसी व्यक्ति बताया, जिन्होंने अपने फैसले खुद लिए, जो संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए अडिग रहे और यही भावना तब भी प्रदर्शित हुई, जब पिछले साल चुनाव प्रचार अभियान के दौरान एक बंदूकधारी ने उन पर गोली चलाई थी। प्रधानमंत्री ने कहा कि राष्ट्रपति ट्रंप अपने दूसरे कार्यकाल में पहले की तुलना में कहीं अधिक तैयार दिखाई दिए। मोदी ने कहा, उनके दिमाग में एक स्पष्ट रोडमैप है, जिसमें अच्छी तरह से परिभाषित कदम हैं, जिनमें से प्रत्येक उन्हें उनके लक्ष्यों की ओर ले जाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। मोदी ने कहा, मुझे सच में विश्वास है कि उन्होंने एक मजबूत, सक्षम समूह बनाया है। और इतनी मजबूत टीम के साथ, मुझे लगता है कि वे राष्ट्रपति ट्रंप के विजन को लागू करने में पूरी तरह सक्षम हैं। उन्होंने उपराष्ट्रपति जे डी वेंस, राष्ट्रीय खुफिया निदेशक तुलसी गबार्ड, विवेक रामास्वामी और एलन मस्क के साथ अपनी मुलाकातों को याद किया। मोदी ने कहा कि जब अमेरिकी चुनाव अभियान के दौरान ट्रंप पर गोली चलाई गई थी, तब भी उन्होंने उसी दृढ़ निश्चयी और दृढ़ निश्चयी व्यक्ति को देखा था। प्रधानमंत्री ने कहा, गोली लगने के बाद भी वे अमेरिका के प्रति अडिग रहे। उनका जीवन उनके राष्ट्र के लिए था। इससे उनकी अमेरिका फर्स्ट भावना का पता चलता है, ठीक वैसे ही जैसे मैं राष्ट्र प्रथम में विश्वास करता हूं, भारत प्रथम। मोदी ने कहा, मैं भारत प्रथम के लिए खड़ा हूं और इसलिए हम इतने अच्छे से जुड़ते हैं। ये ऐसी चीजें हैं जो वास्तव में गूंजती हैं।

लश्कर के...

संस्थापक ने रहमान को पीओके में नियंत्रण सुनिश्चित करने का काम सौंपा था। रहमान के सहयोगी रियाज अहमद उर्फ अबू कासिम और हंजला अदनान सितंबर और दिसंबर 2023 में पाकिस्तान में अलग-अलग घटनाओं में मारे गए। पिछले तीन वर्षों में पाकिस्तान और पीओके में अज्ञात बंदूकधारियों ने लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मोहम्मद और हिजबुल मुजाहिदीन सहित विभिन्न संगठनों के एक दर्जन से अधिक आतंकवादी कमांडरों को मार गिराया है।

सुनीता...

विलियम्स और दो अन्य अंतरिक्ष यात्रियों को ले जाने वाला स्पेसएक्स कैप्सूल बुधवार से पहले अंतरिक्ष स्टेशन से अलग हो जाएगा और फ्लोरिडा के तट पर उतरेगा। तब तक, ऑर्बिटिंग लैब में 11 लोग होंगे, जो अमेरिका, रूस और जापान का प्रतिनिधित्व करेंगे।

भारत...

जब वार्ता बहाल होगी, तो दोनों देशों को सफलतापूर्वक आगे बढ़ने के लिए इन मुद्दों पर आम जमीन तलाशनी होगी।

ट्रंप....

और चेतावनी दी कि अगर युद्ध में उनके नाजुक संघर्ष विराम को आगे नहीं बढ़ाया जाता है तो हमास के लिए अतिरिक्त परिणाम होंगे क्योंकि दूसरे चरण को शुरू करने पर बातचीत जारी है। हूतियों ने 2023 के अंत में इज़राइल और हमास के बीच युद्ध की शुरुआत और इस साल जनवरी में, जब गाजा में यह संघर्ष विराम प्रभावी हुआ, के बीच सैन्य और नागरिक जहाजों को निशाना बनाने के अपने अभियान के दौरान मिसाइलों और ड्रोन से 100 से अधिक व्यापारी जहाजों को निशाना बनाया था, जिसमें दो जहाज डूब गए और चार नाविक मारे गए। हमलों ने हूतियों के कद को और भी बड़ा कर दिया है, क्योंकि यमन में एक दशक से चल रहे गतिरोध के बीच उन्हें अपने घर में आर्थिक और अन्य समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, जिसने अरब दुनिया के सबसे गरीब देश को तहस-नहस कर दिया है। हूती मीडिया कार्यालय ने कहा कि अमेरिकी हमलों ने सना के उत्तरी जिले शौआब के एक रिहायशी इलाके को निशाना बनाया। निवासियों ने कहा कि कम से कम चार हवाई हमलों ने पूर्वी गेराफ इलाके को हिलाकर रख दिया, जिससे महिलाएं और बच्चे डर गए। अब्दुल्ला अल-अल्फी ने कहा, विस्फोट बहुत जोरदार थे। यह भूकंप जैसा था। पूर्वी गेराफ हूती के कब्जे वाली सैन्य सुविधाओं और विद्रोहियों के राजनीतिक ब्यूरो के मुख्यालय का केंद्र है, जो घनी आबादी वाले इलाके में स्थित है। हूतियों ने शनिवार देर रात दक्षिण-पश्चिमी धमार प्रांत पर नए हमलों की सूचना दी। उन्होंने कहा कि हमलों ने प्रांतीय राजधानी के बाहरी इलाके, जिसे धमार भी कहा जाता है, और एब्स जिले को निशाना बनाया। संयुक्त राज्य अमेरिका, इज़राइल और ब्रिटेन ने पहले भी यमन में हूती कब्जे वाले इलाकों पर हमला किया है। इज़राइल की सेना ने टिप्पणी करने से इनकार कर दिया। हालांकि, एक अमेरिकी अधिकारी के अनुसार, शनिवार का ऑपरेशन पूरी तरह से अमेरिका द्वारा संचालित किया गया था। यह ट्रंप दूसरे कार्यकाल में यमन स्थित हौथियों पर पहला हमला था। हूतियों के खिलाफ इस तरह के व्यापक मिसाइल हमले बाइडन प्रशासन द्वारा क्षेत्र में वाणिज्यिक और सैन्य जहाजों के खिलाफ हूतियों द्वारा लगातार हमलों के जवाब में कई बार किए गए थे। यूएसएस हैरी एस ट्रूमैन वाहक स्ट्राइक समूह, जिसमें वाहक, तीन नौसेना विध्वंसक और एक क्रूजर शामिल हैं, लाल सागर में शनिवार के मिशन का हिस्सा थे। यूएसएस जॉर्जिया क्रूज मिसाइल पनडुब्बी भी इस क्षेत्र में काम कर रही है। ट्रंप ने फ्लोरिडा के वेस्ट पाम बीच में अपने ट्रंप इंटरनेशनल गोल्फ क्लब में दिन बिताते हुए हमलों की घोषणा की। ट्रंप ने कहा, इन अथक हमलों ने अमेरिका और विश्व अर्थव्यवस्था को कई अरबों डॉलर का नुकसान पहुंचाया है, जबकि साथ ही, निर्दोष लोगों की जान जोखिम में डाल दी है।

पायनियर
लखनऊ, सोमवार, 17 मार्च 2025

कांग्रेस ने बोडो समझौते का मजाक उड़ाया लेकिन इससे क्षेत्र में शांति लौटी : गृह मंत्री

कोकराझार (भाषा)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को कहा कि जब भाजपा नीत सरकार ने बोडो समझौते पर हस्ताक्षर किए तो कांग्रेस ने उसका मजाक उड़ाया था, लेकिन इससे क्षेत्र में शांति स्थापित हुई और विकास को बल मिला। शाह ने असम के कोकराझार में ऑल बोडो स्टूडेंट्स यूनियन (एबीएसयू) के 57वें वार्षिक सम्मेलन को संबोधित करते हुए यह बात कही। उन्होंने कहा कि केंद्र ने बोडोलैंड के विकास के लिए 1,500 करोड़ रुपए दिए हैं, जिसकी आबादी 35 लाख है।

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता ने कहा कि बोडो समझौते के 82 प्रतिशत प्रावधानों का क्रियान्वयन हो चुका है तथा शेष प्रावधान अगले दो वर्षों में लागू कर दिए जाएंगे। शाह ने बोडो युवाओं से 2036 के ओलंपिक खेलों की तैयारी शुरू करने का भी आह्वान किया, जिसका आयोजन गुजरात के अहमदाबाद शहर में प्रस्तावित है। भाजपा नेता ने कहा कि बोडो युवा अब बंदूक के बजाय अपने हाथों में तिरंगा लेकर चलते हैं और यह जनवरी 2020 में शांति समझौते पर हस्ताक्षर के कारण संभव हुआ है। उन्होंने कहा, यह क्षेत्र में शांति लाने में समझौते पर हस्ताक्षर करने वाले एबीएसयू की भूमिका के कारण संभव हुआ है।

केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा, कांग्रेस भले ही हम पर हंसी हो कि बीटीआर में शांति नहीं होगी, लेकिन बोडो समझौते के 82 प्रतिशत प्रावधानों को लागू किया जा चुका है और अगले दो वर्षों में 100 प्रतिशत प्रावधानों को पूरा कर लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि शांति समझौते पर हस्ताक्षर करने वाले नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ बोडोलैंड (एनडीएफबी) ने भी हथियार डाल दिए हैं और केंद्र तथा राज्य सरकारों ने उनके पुनर्वास के लिए कई पहल की हैं। शाह ने कहा कि अप्रैल के पहले सप्ताह में नई दिल्ली में एबीएसयू के संस्थापक अध्यक्ष बोडोफा उपेन्द्रनाथ ब्रह्मा के नाम पर एक सड़क और उनकी प्रतिमा का लोकार्पण किया जाएगा। उन्होंने कहा कि केंद्र और राज्य की भाजपा सरकार बोडोफा के सपनों को हकीकत में बदलने के लिए प्रतिबद्ध है।

पूर्वोत्तर से 88 करोड़ मूल्य के मादक पदार्थ बरामद, ड्रग माफियाओं पर रहम नहीं: शाह

नई दिल्ली (भाषा)। गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को कहा कि इंफाल और गुवाहाटी क्षेत्रों में 88 करोड़ रुपए मूल्य की मेथमफेटामाइन गोलियों की एक बड़ी खेप जब्त की गई और इंफाल तथा गुवाहाटी क्षेत्रों में अंतरराष्ट्रीय मादक पदार्थ गिरोह के चार सदस्यों को गिरफ्तार किया गया। शाह ने एक्स पर अपने पोस्ट में कहा, मादक पदार्थ माफियाओं के लिए कोई दया नहीं। मोदी सरकार के नशामुक्त भारत के निर्माण के अभियान को गति देते हुए 88 करोड़ रुपए मूल्य की मेथमफेटामाइन गोलियों की एक बड़ी खेप जब्त की गई और इंफाल तथा गुवाहाटी क्षेत्रों में अंतरराष्ट्रीय मादक पदार्थ गिरोह के चार सदस्यों को गिरफ्तार किया गया। गृह मंत्री ने इस सफलता के लिए स्वापक नियंत्रण ब्यूरो (एनसीबी) को बधाई दी।

गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए एनसीबी इंफाल जोन के अधिकारियों ने 13 मार्च को एक अभियान चलाया। आधिकारिक बयान के अनुसार, एनसीबी टीम ने लिलोंग क्षेत्र के पास एक ट्रक को रोका और वाहन के पिछले हिस्से में एक टूलबॉक्स से 102.39 किलोग्राम मेथमफेटामाइन की गोलियां बरामद कीं। बयान में कहा गया कि ट्रक में सवार दो लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया। बयान में कहा गया कि बिना देरी किए टीम ने तुरंत कार्वाई की और लिलोंग क्षेत्र से प्रतिबंधित सामान के संदिग्ध प्राप्तकर्ता को पकड़ लिया। मादक पदार्थ की तस्करी में इस्तेमाल होने वाला चार पहिया वाहन भी जब्त कर लिया गया।

कार्यकर्ताओं को समझाने के लिए प्रस्ताव में पहली बार नव-फासीवाद शब्द का प्रयोग किया : करात

नई दिल्ली (भाषा)। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) के वरिष्ठ नेता प्रकाश करात ने कहा कि भाजपा सरकार के नव-फासीवादी के लक्षणों पर टिप्पणी पार्टी के मसौदा प्रस्ताव में जोड़ी गई थी, ताकि कार्यकर्ताओं को नव-फासीवाद शब्द के बारे में समझाया जा सके। उन्होंने कहा कि इसका प्रयोग पहली बार किसी पार्टी दस्तावेज में किया जा रहा है। करात ने पीटीआई-भाषा को दिए साक्षात्कार में कहा कि दस्तावेज में यह भी स्पष्ट किया गया है कि पार्टी अभी तक इस निष्कर्ष पर नहीं पहुंची है कि नरेन्द्र मोदी के अधीन भारत राज्य फासीवादी या नव-फासीवादी है। उन्होंने हालांकि यह भी कहा कि यदि नव-फासीवादी लक्षणों पर अंकुश नहीं लगाया गया, तो यह एक पूर्ण नव-फासीवादी राज्य या सरकार के रूप में विकसित हो सकता है।

माकपा ने आगामी पार्टी समागम के लिए राजनीतिक प्रस्ताव के मसौदे पर अपनी राज्य इकाइयों को पिछले महीने एक पत्र जारी किया था, जिसमें कहा गया था कि पार्टी मोदी सरकार या भारत राज्य को नव-फासीवादी नहीं मानती है, भले ही इसमें नव-फासीवादी लक्षणों की अभिव्यक्तियां हों। इस पत्र पर कांग्रेस की केरल इकाई ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की और माकपा पर भाजपा के प्रति नरम रुख अपनाने तथा संघ परिवार की नजर में अच्छा बनने की कोशिश करने का आरोप लगाया था।

पत्र जारी करने की आवश्यकता को सही ठहराते हुए करात ने कहा कि केन्द्रीय समिति को लगा कि उसे पार्टी सदस्यों के लाभ के लिए नव-फासीवाद शब्द की व्याख्या करनी चाहिए, जो अगले महीने मदुरै में पार्टी समागम में पेश प्रस्ताव पर चर्चा करेंगे। करात ने स्वीकार किया कि माकपा का पतन पश्चिम बंगाल और त्रिपुरा में समर्थन में कमी के कारण हुआ है। उन्होंने कहा कि पार्टी की खोई जमीन फिर से हासिल करने के लिए आगामी अखिल भारतीय सम्मेलन में कार्ययोजना पर चर्चा की जाएगी। वर्ष 2005 से 2015 तक माकपा के महासचिव रहे करात ने कहा कि वह वरिष्ठ नेता ज्योति बसु द्वारा 1996 में प्रधानमंत्री पद से इनकार करने को पार्टी के पतन का कारण नहीं मानते।

करात ने कहा, यह सच है कि पार्टी की स्वतंत्र ताकत और प्रभाव में वृद्धि नहीं हुई है... और इसका मुख्य कारण पश्चिम बंगाल और त्रिपुरा में हमारा समर्थन आधार कमजोर होना है, जो हमारे दो मजबूत राज्य हैं। माकपा के अंतरिम समन्वयक ने कहा, अत: पार्टी सम्मेलन में हमारा ध्यान इस बात पर केंद्रित होगा कि हम पार्टी को कैसे मजबूत करें। पार्टी सम्मेलन में चर्चा के सदर्भ में उन्होंने कहा, यह ध्यान में रखते हुए... हमारा राजनीतिक कार्य या लक्ष्य अभी भी यही है कि भाजपा या मोदी सरकार को कैसे हराया जाए, इसके लिए व्यापक एकता की आवश्यकता है। हम इसे पहचानते हैं। इस व्यापक एकता, एक व्यापक मंच को कैसे बनाए रखा जाए, इसके लिए हमें प्रयास करना होगा। करात ने कहा, साथ ही, हम इसे अलग से नहीं देखते हैं। माकपा को मजबूत करने से समग्र विपक्षी एकता या वामपंथ को मजबूत करने में भी मदद मिलेगी। हमें लगता है कि वामपंथ की वैकल्पिक राजनीति या नीतियों को मोदी सरकार की विभिन्न नीतियों के खिलाफ लड़ाई के लिए एक केंद्र बिंदु के रूप में पेश किया जाना चाहिए।

महाराणा प्रताप के वंशज अरविन्द सिंह मेवाड़ का निधन, कई राजनेताओं ने संवदेना व्यक्त की

जयपुर (भाषा)। राजस्थान में मेवाड़ के पूर्व राजपरिवार के सदस्य और एचआरएच होटल समूह के अध्यक्ष अरविंद सिंह मेवाड़ का उदयपुर में लंबी बीमारी के बाद रविवार को निधन हो गया। परिवारिक सूत्रों ने यह जानकारी दी।वह 81 वर्ष के थे। मेवाड़, राजा महाराणा प्रताप के वंशज थे और लंबे समय से बीमार थे।उदयपुर स्थित सिटी पैलेस में मेवाड़ का इलाज किया जा रहा था।

अरविंद सिंह मेवाड़ के परिवार में पत्नी विजयराज कुमारी, बेटा लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ और बेटियां भार्गवी कुमारी मेवाड़ और पद्मजा कुमारी परमार हैं। मेवाड़ का अंतिम संस्कार सोमवार को होगा। उदयपुर सिटी पैलेस रविवार और सोमवार को पर्यटकों के लिए बंद रहेगा। अरविंद सिंह मेवाड़, भगवंत सिंह मेवाड़ और सुशीला कुमारी के छोटे बेटे थे। अरविंद के बड़े भाई महेंद्र सिंह मेवाड़ का पिछले वर्ष नवंबर में निधन हो गया था। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत व वसुंधरा राजे, भाजपा हरियाणा प्रभारी और भाजपा की राजस्थान इकाई के पूर्व अध्यक्ष सतीश पूनिया, अरविंद सिंह मेवाड़ के भतीजे विश्वराज सिंह मेवाड़ और कई अन्य राजनेताओं तथा राजपूत नेताओं ने मेवाड़ के निधन पर शोक व्यक्त किया। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने एक्स पर लिखा, मेंवाड़ के पूर्व राजपरिवार के वरिष्ठ सदस्य अरविंद सिंह मेवाड़ का निधन अत्यंत दु:खद है। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शांति और शोकाकुल परिजनों व समर्थकों को यह असीम दुख सहने का संबल प्रदान करें। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अरविंद सिंह मेवाड़ के निधन पर शोक व्यक्त किया। उन्होंने एक्स पर लिखा, मेवाड़ की वैभवशाली विरासत को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका (अरविंद सिंह मेवाड़) प्रभावशाली व्यक्तित्व और अनुकरणीय चरित्र भावी पीढ़ियों के लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा। ईश्वर दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान और शोकाकुल परिवार को यह अकथनीय दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। वसुंधरा राजे ने कहा, महाराज अरविंद सिंह मेवाड़ के निधन का समाचार अत्यंत दु:खद है। उन्होंने उदयपुर में पर्यटन को बढ़ावा देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पर्यटन के क्षेत्र में उन्होंने जो प्रयास किए वह सदैव याद रहेंगे। उन्होंने कहा, शोक संवेदनाएं व्यक्त करते हुए मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूं कि वह दिवंगत की आत्मा को शांति एवं शोक संतप्त परिजनों को इस कठिन घड़ी में संबल प्रदान करें।

अरविंद सिंह मेवाड़ की शिक्षा अजमेर के मेयो कॉलेज में हुई और उन्होंने उदयपुर से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। मेवाड़ ने ब्रिटेन से होटल मैनेजमेंट की पढ़ाई की थी और विभिन्न अंतरराष्ट्रीय होटलों में प्रशिक्षण प्राप्त किया। वह एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स का निर्माण करने से पहले कई वर्षों तक शिकागो में रहे और काम किया। मेवाड़ क्रिकेट, पोलो और संगीत प्रेमी थे। मेवाड़ ने 1945-46 में राजस्थान के कप्तान के रूप में रणजी ट्रॉफी में पदार्पण किया और उनका एक क्रिकेटर के रूप में लगभग दो दशक तक शानदार करियर रहा। वह 1970 के दशक में पोलो खिलाड़ी थे लेकिन चिकित्सा कारणों से उन्होंने खेल छोड़ दिया। इंग्लैंड में पेशेवर पोलो के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करने के लिए मेवाड़ ने कैमब्रिज में उदयपुर कप और न्यूमार्केट पोलो क्लब की स्थापना की। उदयपुर में मेवाड़ पोलो का गठन एक पोलो टीम के रूप में किया गया था, जिसमें पेशेवर खिलाड़ी शामिल थे।

वर्दी पहनकर नाचने पर तेज प्रताप का सुरक्षा गार्ड लाइन हाजिर

पटना (भाषा)। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेता तेज प्रताप यादव के सुरक्षा गार्ड के रूप में तैनात एक कांस्टेबल को बिहार के पूर्व मंत्री के आवास पर होली समारोह के दौरान वर्दी पहनकर नाचने के कारण रविवार को लाइन हाजिर कर दिया गया। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के कार्यालय द्वारा रविवार को जारी बयान के अनुसार, विधायक तेज प्रताप के सुरक्षा गार्ड के रूप में तैनात कांस्टेबल दीपक कुमार को वर्दी में नाचने के लिए तत्काल प्रभाव से लाइन हाजिर किया गया है। कुमार की जगह विधायक की सुरक्षा में किसी अन्य कांस्टेबल को तैनात किया जाएगा।

बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद के बड़े बेटे तेज प्रताप यादव शनिवार को उस समय एक नए विवाद में घिर गए जब उन्होंने एक पुलिसकर्मी को आदेश दिया कि अगर उसने ठुमका नहीं लगाया, तो उसे निलंबन का सामना करना पड़ेगा। हसनपुर से विधायक तेज प्रताप के आधिकारिक आवास पर आयोजित होली मिलन समारोह का एक वीडियो सोशल मीडिया पर बड़े पैमाने पर साझा किया गया, जिसमें एक पुलिसकर्मी को उनके कहने पर नाचते हुए देखा जा सकता है। इस वीडियो में तेज प्रताप एक अस्थाई मंच पर रखे सोफे पर बैठे नजर आ रहे हैं और उनके हाथ में माइक है। वह पुलिसकर्मी से यह कहते नजर आ रहे हैं, ऐ सिपाही, ऐ दीपक, अभी एक गाना बजाएंगे, जिस पर तुमको ठुमका लगाना पड़ेगा। नहीं लगाओगे, तो तुमको सस्पेंड कर देंगे। बुरा न मानो होली है। वीडियो में वर्दीधारी पुलिसकर्मी तेज प्रताप की बात का खास बुरा मानता प्रतीत नहीं हो रहा, लेकिन वह ठुमका लगाने के बजाय उन्हें खुश करने के लिए अपना दाहिना हाथ हवा में लहराता दिख रहा है। समारोह में तेज प्रताप ने उनके पिता द्वारा आयोजित की जाने वाली कपड़ा फाड़ होली की याद दिलाते हुए उनसे मिलने आए समर्थकों के कपड़े फाड़े। वह अपने घर के पास सड़क पर स्कूटर चलाते हुए और जोर-जोर से हैप्पी होली पलटू चाचा कहते भी दिखाई दिए। तेज प्रताप का इशारा मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की ओर था, जिन्होंने राजद से दो बार गठबंधन किया और दोनों बार उसका साथ छोड़ दिया।

उत्तराखंड विधानसभा में अभद्र टिप्पणी कर फंसे मंत्री प्रेमचंद अग्रवाल ने पद छोड़ा

देहरादून (भाषा)। उत्तराखंड विधानसभा में पहाड़-मैदान को लेकर अभद्र टिप्पणी करने के कारण पिछले काफी समय से विरोध का सामना कर रहे संसदीय कार्य एवं वित्त मंत्रीप्रेम चंद अग्रवाल ने रविवार को पद से इस्तीफा दे दिया। यहां जारी एक आधिकारिक बयान के अनुसार, अग्रवाल ने यहां मुख्यमंत्री आवास में पुष्कर सिंह धामी से भेंटकर अपना इस्तीफा सौंपा।

होली से पूर्व मुख्यमंत्री धामी दिल्ली गए थे और उन्होंने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के शीर्ष नेताओं से इस मसले पर मुलाकात की थी और माना जा रहा था कि जल्द ही अग्रवाल से इस्तीफा मांगा जा सकता है। हाल में राज्य विधानसभा में बजट सत्र के दौरान कांग्रेस विधायक मदन बिष्ट ने अग्रवाल के खिलाफ टिप्पणी की थी, जिस पर भड़कते हुए मंत्री ने कहा था कि क्या उत्तराखंड केवल पहाड़ के लिए बना है और क्या हमने इसी दिन के लिए आंदोलन किया था कि पहाड़ी और देसी (मैदानी) को लेकर टिप्पणियां की जाएं।

इस दौरान अग्रवाल ने अपशब्द भी कह दिया था। अग्रवाल की टिप्पणी को लेकर सोशल मीडिया से लेकर प्रदेश में सड़कों तक प्रदर्शन हुआ और उनके पुतले फूंके गए। मुख्य विपक्षी कांग्रेस और उत्तराखंड क्रांति दल (उक्रांद) ने अग्रवाल को राज्य मंत्रिमंडल से बाहर किए जाने की जोरदार मांग की थी। हाल में प्रदेश की ग्रीष्मकालीन राजधानी गैरसैंण में भी कई प्रमुख संगठनों ने अग्रवाल को मंत्रिमंडल से बर्खास्त किए जाने की मांग को लेकर जोरदार रैली निकाली थी। इससे पहले, अग्रवाल ने अपने बयान पर खेद जताया था जबकि प्रदेश इकाई नेतृत्व ने उन्हें तलब कर सार्वजनिक जीवन में संयम बरतने और उचित शब्दावली का प्रयोग करने की कड़ी हिदायत दी थी।

औरंगजेब की कब्र को हटाने से कोई लाभ नहीं होगा : आठवले

मुंबई (भाषा)। केंद्रीय मंत्री रामदास आठवले ने महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजीनगर जिले में मुगल बादशाह औरंगजेब की कब्र को हटाने की मांग का विरोध करते हुए कहा कि ऐसे कदम से किसी उद्देश्य की पूर्ति नहीं होगी। शनिवार रात यहां पत्रकारों से बात करते हुए रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (आठवले) के नेता ने यह भी कहा कि इस मामले का राजनीतिकरण नहीं किया जाना चाहिए। कुछ दक्षिणपंथी संगठनों ने छत्रपति संभाजीनगर के खुल्दाबाद में स्थित औरंगजेब की कब्र को हटाने की मांग की है। बजरंग दल और विश्व हिंदू परिषद (विहिप) जैसे संगठनों ने सोमवार को राज्य सरकार को एक ज्ञापन सौंपने की योजना बनाई है, जिसमें कब्र को हटाने के लिए कानूनी कार्वाई का आग्रह किया जाएगा। संगठनों ने मांग पूरी नहीं होने पर कारसेवा और राज्यव्यापी विरोध प्रदर्शन की चेतावनी दी है। मराठा राजा छत्रपति शिवाजी महाराज के वंशज और सतारा से भाजपा सांसद उदयनराजे भोसले ने छत्रपति संभाजीनगर में औरंगजेब की कब्र को हटाने की मांग की थी। महाराष्ट्र में औरंगजेब को मराठों के साथ उनकी लड़ाई के लिए याद किया जाता है, जिन्होंने मुगल शासक की विस्तारवादी महत्वाकांक्षाओं का विरोध किया था। शिवाजी महाराज के बेटे संभाजी को औरंगजेब के आदेश पर पकड़ कर प्रताड़ित किया गया और मार डाला गया।

राम मंदिर ट्रस्ट ने पांच वर्षों में 400 करोड़ का कर चुकाया

अयोध्या (भाषा)। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के सचिव चंपत राय ने रविवार को कहा कि ट्रस्ट ने धार्मिक पर्यटन में उछाल के बीच पिछले पांच वर्षों में सरकार को लगभग 400 करोड़ रुपए का कर चुकाया है। उन्होंने कहा कि यह राशि पांच फरवरी, 2020 से पांच फरवरी, 2025 के बीच चुकाई गई। उन्होंने कहा कि इसमें से 270 करोड़ रुपए माल और सेवा कर (जीएसटी) के रूप में भुगतान किए गए, जबकि शेष 130 करोड़ रुपए अन्य विभिन्न कर श्रेणियों के तहत भुगतान किए गए। उन्होंने कहा कि अयोध्या में श्रद्धालुओं और पर्यटकों की संख्या में 10 गुना वृद्धि हुई है, जिससे यह एक प्रमुख धार्मिक पर्यटन केंद्र बन गया है और स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं। उन्होंने कहा कि महाकुंभ के दौरान 1.26 करोड़ श्रद्धालु अयोध्या आए थे। राय ने कहा कि ट्रस्ट के वित्तीय रिकार्ड का नियमित रूप से नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) के अधिकारियों द्वारा ऑडिट किया जाता है।

माता वैष्णो देवी मंदिर में पांच वर्षों में दान में भारी वृद्धि हुई: जम्मू कश्मीर में माता वैष्णो देवी मंदिर में तीर्थयात्रियों का दान वित्तीय वर्ष 2024-25 (जनवरी तक) में 171.90 करोड़ रुपए हो गया है, जो 2020-21 में 63.85 करोड़ रुपए था। यह जानकारी श्राइन बोर्ड ने दी है। श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड (एसएमवीडीएसबी) ने कहा है कि इसी अवधि के दौरान मंदिर में चढ़ाया गया सोना भी नौ किलोग्राम से बढ़कर 27.7 किलोग्राम हो गया है और चांदी 753 किलोग्राम से बढ़कर 3,424 किलोग्राम हो गई है।

जो करेगा जात की बात, उसको कसके मारूंगा लात: गडकरी

भाषा। नागपुर

केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने जाति आधारित राजनीति के खिलाफ कड़ी टिप्पणी करते हुए कहा कि किसी भी व्यक्ति के साथ जाति, धर्म, भाषा या लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए।भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता ने नागपुर स्थित सेंट्रल इंडिया ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस में शनिवार को आयोजित दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए कहा, जो करेगा जात की बात, उसको कसके मारूंगा लात। गडकरी (67) ने कहा कि उनका मानना है कि कोई भी व्यक्ति अपनी जाति, धर्म, भाषा या पंथ के कारण बड़ा नहीं होता बल्कि वह अपने गुणों के कारण बड़ा होता है। उन्होंने कहा, इसलिए, हम किसी के साथ उसकी जाति, धर्म, लिंग या भाषा के आधार पर भेदभाव नहीं करते हैं।

गडकरी ने कहा, मैं राजनीति में हूं और बहुत सी चीजें होती हैं लेकिन मैं अपने तरीके से चलता हूं। अगर कोई मुझे वोट देना चाहता है तो दे सकता है और अगर कोई नहीं देना चाहता तो वह ऐसा करने के लिए भी स्वतंत्र है। उन्होंने कहा, मेरे दोस्त मुझसे पूछते हैं कि तुमने ऐसा क्यों कहा या ऐसा रुख क्यों अपनाया। मैं उनसे कहता हूं कि चुनाव हारने से कोई खत्म नहीं हो जाता। मैं अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करूंगा और निजी जीवन में उनका पालन करता रहूंगा।

गडकरी ने समाज और देश के विकास के लिए शिक्षा के महत्व पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि कई वर्ष पहले जब वह विधायक थे तो उन्होंने मुस्लिम समुदाय के लोगों के बीच शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए एक मुस्लिम शिक्षण संस्थान को इंजीनियरिंग कॉलेज दिलाने में मदद की थी। गडकरी ने बताया कि उनके इस फैसले पर सवाल खड़े किए गए। उन्होंने कहा, जिस वर्ग को शिक्षा की सबसे अधिक आवश्यकता है वह मुस्लिम समुदाय है। गडकरी ने कहा कि पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम के शब्दों को दुनिया के हर व्यक्ति ने सुना है। उन्होंने कहा, जब कोई व्यक्ति अपनी जाति, धर्म, लिंग या भाषा से ऊपर उठ जाता है तो वह महान बन जाता है।

कर्नाटक में मुस्लिम ठेकेदारों को आरक्षण कांग्रेस के अनैतिक चरित्र को दर्शाता है: मोहन यादव

भोपाल (भाषा)। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने रविवार को कहा कि कर्नाटक में मुस्लिम ठेकेदारों के लिए चार प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था वहां सत्तारूढ़ कांग्रेस के अनैतिक चरित्र का प्रतिबिंब है और यह कानून की कसौटी पर खरा नहीं उतरेगा। कर्नाटक की सिद्धरमैया सरकार के मंत्रिमंडल ने शुक्रवार को कर्नाटक सार्वजनिक खरीद पारदर्शिता अधिनियम में संशोधन को मंजूरी दी थी, जिसके तहत दो करोड़ रुपए तक के (सिविल) कार्यों के ठेके और एक करोड़ रुपए तक के मालासेवाओं के ठेके का चार प्रतिशत मुसलमानों के लिए आरक्षित किया गया है।

यादव ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा, कर्नाटक में कांग्रेस सरकार द्वारा शासकीय कार्यों में ठेकेदारों को धर्म आधारित आरक्षण की व्यवस्था का प्रावधान करना अनुचित एवं निंदनीय है। लोकतांत्रिक देश में इस तरह किसी धर्म विशेष को लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से नियम-प्रावधान कैबिनेट से पास कर लागू करना, यही कांग्रेस का

अनैतिक चरित्र है। उन्होंने कहा, दलित, पिछड़े और समाज के वंचित लोगों के उत्थान के लिए भाजपा सरकार निरन्तर काम कर रही हैअ जिससे सभी वर्गों को समाज में पूर्ण सम्मान और अधिकार मिल सके। यादव ने आरोप लगाते हुए कहा कि इतिहास साक्षी है कि कांग्रेस ने हमेशा संविधान के मूल्यों का सम्मान करने की बजाय जातिगत पक्षपात और समाज के विभिन्न वर्गों में भेदभाव की भावना पैदा करने में मुख्य योगदान दिया है। उन्होंने कहा, कांग्रेसी भारत जोड़ो नहीं, भारत तोड़ो की विचारधारा पर काम कर रहे हैं और कर्नाटक सरकार का यह फैसला इसी राजनीति का उदाहरण है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस तरह के धर्म आधारित फैसलों के विरुद्ध पूर्व में भी कई बार माननीय न्यायालयों द्वारा निर्णय दिए गए हैं और इस बार भी कांग्रेस सरकार का यह फैसला न्यायालय में नहीं टिक पाएगा। उन्होंने कहा, मैं धर्म आधारित इस आरक्षण की कड़ी आलोचना करता हूं और कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व में बैठे मल्लिकार्जुन खरगे जी से कहना चाहूंगा कि कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धरमैया के तुष्टीकरण के फैसले को वापस कराने के लिए उचित कार्रवाई करें।

कर्नाटक में माहौल भाजपा के पक्ष में, सत्ता में होगी वापसी : एदियुरप्पा

बेलगावी (भाषा)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता बीएस एदियुरप्पा ने रविवार को भरोसा जताया कि कर्नाटक में भाजपा आने वाले दिनों में सत्ता में वापसी करेगी, क्योंकि राज्य का माहौल पार्टी के पक्ष में है। भाजपा की कर्नाटक इकाई में बढ़ती गुटबाजी के बीच पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि पार्टी के सभी सदस्यों को मिलकर काम करना चाहिए। उन्होंने कहा, भाजपा के लिए माहौल बहुत अनुकूल है और मुझे शत-प्रतिशत यकीन है कि हम आने वाले दिनों में कर्नाटक में सत्ता में वापसी करेंगे। हम सब मिलकर इस दिशा में ईमानदारी से प्रयास कर रहे हैं। एदियुरप्पा ने यहां पत्रकारों से बातचीत के दौरान एक सवाल के जवाब में कहा, कोई सुझाव देने का सवाल ही नहीं उठता है, सबको हर हाल में मिलकर काम करना होगा। कर्नाटक भाजपा में गुटबाजी खुलकर सामने आई है, क्योंकि बीजापुर शहर से विधायक बसनगौड़ा पाटिल यतनाल और गोकक से विधायक रमेश जरकीहोली के नेतृत्व में पार्टी का एक धड़ा प्रदेश भाजपा अध्यक्ष बीवाई विजएंद्र के इस्तीफे की मांग पर अड़ा हुआ है।

यतनाल और जरकीहोली ने विजएंद्र की खुलेआम आलोचना करते हुए उन पर सत्तारूढ़ कांग्रेस के साथ सुविधा की राजनीति करने का आरोप लगाया है। दोनों नेताओं ने विजएंद्र और उनके पिता एदियुरप्पा पर पार्टी को अपने चंगुल में रखने की कोशिश करने का भी आरोप लगाया है। हालांकि, एदियुरप्पा ने यतनाल से जुड़े सवाल का जवाब देने से इनकार कर दिया। विकास की कमी और गारंटी योजनाओं के क्रियान्वयन पर चिंता जताते हुए कांग्रेस सरकार को दिए गए सुझावों के बारे में पूछे गए सवाल पर एदियुरप्पा ने कहा, इन गारंटियों का कोई मतलब नहीं है। लोगों को खुश करने के लिए इनकी घोषणा की गई थी, लेकिन इन्हें ठीक से लागू नहीं किया गया। यह (सरकार) एक तरह से तुगलक दरबार है। देखते हैं कि वे कब तक इस तरह से सरकार चलाएंगे। एदियुरप्पा के मुख्यमंत्री कार्यकाल की तुलना में मौजूदा सरकार के बजट में उत्तर कर्नाटक के साथ अन्याय होने के आरोपों के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा, यह एक तथ्य है, जो सभी को पता है।

मुसलमानों के आरक्षण का पुरजोर विरोध करेगी भाजपा : विजएंद्र

बेलगावी(भाषा)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की कर्नाटक इकाई के अध्यक्ष बी वाई विजएंद्र ने रविवार को कहा कि उनकी पार्टी सरकारी अनुबंधों में मुसलमानों के लिए चार प्रतिशत आरक्षण के कांग्रेस सरकार के प्रस्ताव का विरोध करेगी। विजएंद्र ने सरकारी अनुबंधों में मुसलमानों के लिए चार प्रतिशत आरक्षण के प्रस्ताव को असंवैधानिक और सरकारी जिहाद करार देते हुए कहा कि भाजपा राज्य विधानमंडल के अंदर और बाहर दोनों जगह इसका कड़ा विरोध करेगी। उन्होंने आरोप लगाया कि

● कहा, संविधान में धर्म के आधार पर आरक्षण का कोई उल्लेख नहीं है। सरकार का यह निर्णय धर्मों के बीच विभाजन अथवा खाई पैदा करने की साजिश है। दुर्भाग्यपूर्ण है कि मुख्यमंत्री सिद्धरमैया इसमें शामिल हैं।

राज्य में कांग्रेस की यह सरकार बिना किसी विकास के एक कागजी शेर बन गई है और केवल अल्पसंख्यक तुष्टीकरण पर केंद्रित है।

विजएंद्र ने कहा, हाल ही में सात मार्च को पेश किए गए अपने 16वें बजट में मुख्यमंत्री ने सरकारी अनुबंधों में मुस्लिम ठेकेदारों को चार प्रतिशत आरक्षण देने की घोषणा की है। शुक्रवार को कैबिनेट की बैठक में इस संबंध में निर्णय भी लिया गया है। यह निर्णय असंवैधानिक है। उन्होंने यहां संवाददाताओं से कहा कि संविधान में धर्म के आधार पर आरक्षण का कोई उल्लेख नहीं है। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष ने कहा, सरकार का यह निर्णय धर्मों के बीच दरार या विभाजन अथवा खाई पैदा करने की साजिश है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि मुख्यमंत्री इसमें शामिल हैं। भाजपा इस तुष्टिकरण की राजनीति की कड़ी निंदा करती है, पार्टी राज्य विधानसभा के अंदर और बाहर सरकार के इस अलोकतांत्रिक रुख के खिलाफ लड़ेगी और इसका विरोध करेगी। राज्य मंत्रिमंडल ने शुक्रवार को कर्नाटक सार्वजनिक खरीद में पारदर्शिता (केटीपीपी) अधिनियम में संशोधन को मंजूरी दे दी, जिसके तहत दो करोड़ रुपए तक के (सिविल) कार्यों के चार प्रतिशत ठेके तथा एक करोड़ रुपए तक के मालासेवाओं के ठेकों को मुसलमानों के लिए आरक्षित कर दिया गया। भारतीय जनता पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व ने भी इस निर्णय को लेकर कांग्रेस पर हमला बोला है।

पायनियर

लखनऊ , सोमवार, 17 मार्च , 2025

म्यांमा में हवाई हमले में 27 लोग मारे गए: विपक्षी समूह

बैंकॉक। म्यांमा की सेना द्वारा लोकतंत्र समर्थक प्रतिरोध समूह के नियंत्रण वाले एक गांव पर किए गए हवाई हमले में कम से कम 27 नागरिक मारे गए और 30 अन्य घायल हो गए। एक विपक्षी समूह और म्यांमा के ऑनलाइन मीडिया ने शनिवार को यह जानकारी दी। मांडले पीपुल्स डिफेंस फोर्स के प्रवक्ता ने बताया कि यह हमला शुक्रवार को अपराह्न तीन बजे सिंगू कस्बे के लेट पान हला गांव में हुआ, जो देश के दूसरे सबसे बड़े मांडले शहर से लगभग 65 किलोमीटर उत्तर में है। सेना ने शनिवार को कोई टिप्पणी नहीं की। म्यांमा में एक फरवरी, 2021 को सेना ने आंग सान सू ची की चुनी हुई सरकार को हटा दिया था, जिसके बाद देश में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए। सेना ने शांतिपूर्ण प्रदर्शनों को बलपूर्वक दबाया और इसके बाद कई लोगों ने हथियार उठा लिए। अब देश के बड़े हिस्से में संघर्ष हो रहा है। शनिवार को अपने टेलीग्राम सोशल मीडिया चैनल पर जारी समूह के बयान में कहा गया कि लेट पैन हला गांव में भीड़भाड़ वाले बाजार की दुकानों को निशाना बनाकर किए गए हवाई हमले में मारे गए 27 लोगों में छह बच्चे भी शामिल हैं।

चीन का लड़ाकू विमान दुर्घटनाग्रस्त

ताइपे (ताइवान) ।चीन का एक लड़ाकू विमान प्रशिक्षण उड़ान के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हालांकि पायलट पैराशूट के जरिए सुरक्षित बचने में सफल रहा। सरकारी मीडिया ने यह जानकारी दी। शिन्हुआ समाचार एजेंसी ने अपनी खबर में शनिवार को बताया कि यह दुर्घटना चीन के सुदूर दक्षिणी द्वीप प्रांत हैनान के एक कस्बे के निकट हुई, जहां अनेक वायुसेना और नौसेना अड्डे, रडार स्टेशन और अन्य सैन्य अवसंरचनाएं स्थापित हैं।

रूस और यूक्रेन ने रातभर किए एक-दूसरे पर हवाई हमले

कीव। (एपी) रूस और यूक्रेन ने एक दूसरे पर शनिवार रातभर हवाई हमले किए और इसके साथ ही दोनों पक्षों ने अपने-अपने क्षेत्रों में शत्रु के 100 से अधिक ड्रोन देखे जाने की सूचना दी।

दोनों देशों ने ए हमले ऐसे समय में किए हैं जब 24 घंटे से ही कम वक्त पहले रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने अमेरिकी राजदूत स्टीव विटकॉफ से मुलाकात करके यूक्रेन के साथ 30 दिन के युद्धविराम संबंधी अमेरिकी प्रस्ताव पर विस्तृत चर्चा की थी। यूक्रेन की वायु सेना ने शनिवार को कहा कि रूस ने रात भर 178 ड्रोन और दो बैलिस्टिक मिसाइल दागीं। इन हमलों के दौरान शाहेद-प्रकार के ड्रोन और हवाई सुरक्षा को भ्रमित करने के लिए डिजाइन किए गए नकली ड्रोन का इस्तेमाल किया गया। उसने कहा कि लगभग 130 ड्रोन को मार गिराया गया, जबकि 38 और ड्रोन अपने लक्ष्य तक पहुंचने में विफल रहे। यूक्रेन की निजी ऊर्जा कंपनी डीटीईके ने शनिवार को एक

बयान में कहा कि रूस ने ऊर्जा प्रतिष्ठानों पर हमला किया, जिससे दिप्रोपेत्रोव्स्क और ओडेसा क्षेत्रों में ऊर्जा संबंधी बुनियादी ढांचे को काफी नुकसान पहुंचा। कुछ निवासियों को बिजली के बिना रहना पड़ा। वहीं रूस के वोल्गोग्राद क्षेत्र में ड्रोन के गिरने से क्रास्नोअर्मेस्की जिले में आग लग गई, जो लुकोइल तेल रिफाइनरी के करीब है। यह जानकारी गवर्नर आंद्रेई बोचारोव ने दी। स्थानीय मीडिया संस्थानों ने बताया कि आस-पास के हवाई अड्डों ने अस्थाई रूप से उड़ानें रोक दी हैं। किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। मास्को द्वारा तीन साल से भी अधिक समय पहले यूक्रेन पर पूर्ण पैमाने पर आक्रमण शुरू करने के बाद से यूक्रेन की सेना ने वोल्गोग्राद रिफाइनरी को कई बार निशाना बनाया। इस पर 15 फरवरी को भी ड्रोन हमला किया गया था। पुतिन ने बृहस्पतिवार को एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि वे युद्धविराम का सैद्धांतिक रूप से समर्थन करते हैं, लेकिन उन्होंने कहा कि युद्धविराम पर सहमति से पहले ऐसे कई बिन्दु हैं जिन पर स्पष्टता होनी जरूरी है। यूक्रेन ने पहले ही युद्ध विराम प्रस्ताव का समर्थन कर दिया है लेकिन देश के अधिकारियों ने सार्वजनिक रूप से संदेह जताया है कि क्या रूस इस समझौते का पालन करेगा। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर द्वारा आयोजित पश्चिमी सहयोगियों की ऑनलाइन वार्ता के बाद शनिवार को कीव में पत्रकारों से बातचीत में यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने दीर्घकालिक शांति योजना पर चर्चा के लिए 30-दिन के पूर्ण युद्धविराम प्रस्ताव पर अपने देश का समर्थन व्यक्त किया। जेलेंस्की ने साथ ही कहा कि रूस इस वार्ता में अडंगा डालता रहेगा। जेलेंस्की ने शनिवार को एक बयान में रूस पर सीमा पर सेना बढ़ाने का आरोप लगाया था। उन्होंने कहा, रूसी सेना का बढ़ना यह दर्शाता है कि मॉस्को कूटनीति को नजरअंदाज करना चाहता है।

मालदीव की राष्ट्रीय एयरलाइन बेंगलुरु और हनीमाधू द्वीप के बीच दो उड़ानों का परिचालन शुरू करेगी

माले।(भाषा) मालदीव की राष्ट्रीय एयरलाइन मालदीवियन ने भारत के बेंगलुरु और हनीमाधू द्वीप के बीच दो साप्ताहिक सीधी उड़ानों का परिचालन शुरू करने का फैसला किया है। एक खबर में यह जानकारी दी गई है।मालदीव के समाचार पोर्टल द एडिशन की खबर के अनुसार उड़ानें 15 मई से शुरू होंगी, जबकि टिकटों की बुकिंग रविवार से शुरू होगी। आइलैंड एविएशन सर्विस ने कहा कि यह मार्ग उत्तरी एटोल में मालदीव की सेवाओं का और विस्तार करने के लिए शुरू किया जा रहा है। कंपनी ने कहा कि इन उड़ानों के शुरू होने से क्षेत्र में आर्थिक प्रगति भी होगी। भारत से आने वाले पर्यटकों को मालदीव के उत्तरी एटोल में जाने में भी सुविधा मिलेगी। मालदीव हनीमाधू से बेंगलुरु के लिए प्रति सप्ताह दो उड़ानों का परिचालन रविवार और बृहस्पतिवार को होगा। मालदीवियन के प्रबंध निदेशक इब्राहिम इयास ने कहा कि कंपनी वर्तमान में हनीमाधू से त्रिवेंद्रम के लिए उड़ानों का परिचालन करती है, लेकिन बेंगलुरु को एक और गंतव्य के रूप में जोड़ना कंपनी की सेवाओं को व्यापक बनाने में एक महत्वपूर्ण कदम है।

ट्रंप ने निर्वासन संबंधी 18वीं सदी के कानून के इस्तेमाल की घोषणा की, न्यायाधीश ने लगाई रोक

वाशिंगटन। (एपी) निर्वासन में तेजी लाने के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 18वीं सदी के एक कानून का इस्तेमाल किए जाने की घोषणा की लेकिन इसके कुछ ही घंटों बाद एक संघीय अदालत के न्यायाधीश ने ट्रंप प्रशासन को इसे लागू करने से रोक दिया।

ट्रंप प्रशासन ने इस कानून का इस्तेमाल करते हुए कहा था कि वेनेजुएला का एक गिरोह अमेरिका पर आक्रमण कर रहा है और प्रशासन के पास उसके सदस्यों को देश से बाहर निकालने के लिए नई शक्तियां हैं। कोलंबिया जिले के लिए अमेरिकी जिला न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश जेम्स ई बोसबर्ग ने कहा कि उन्हें अपना आदेश तत्काल जारी करने की आवश्यकता है क्योंकि सरकार प्रवासियों को पहले से ही एल साल्वाडोर और होंडुरास भेज रही है। अमेरिकी प्रशासन का दावा है कि ट्रंप

की घोषणा के तहत इन प्रवासियों को नए सिरे से निर्वासित किया जा सकता है और उन्हें एल साल्वाडोर तथा होंडुरास में कैद किया जाएगा। अल साल्वाडोर ने इस सप्ताह 300 ऐसे प्रवासियों को स्वीकार करने पर सहमति दे दी जिन्हें ट्रंप प्रशासन ने गिरोह का सदस्य घोषित किया है। बोसबर्ग ने एसीएलयू और डेमोक्रेसी फॉरवर्ड द्वारा दायर मामले की शनिवार शाम सुनवाई करते हुए कहा, मुझे नहीं लगता कि मैं अब और इंतजार कर सकता हूं और मुझे कार्वाई करनी होगी। इस फैसले से कुछ ही घंटे पहले ट्रंप ने 1798 के एलियन एनीमीज एक्स (विदेशी शत्रु अधिनियम) को लागू करते हुए दावा किया कि वेनेजुएला का गिरोह ट्रेन डी अरागुआ अमेरिका पर आक्रमण कर रहा है। यह अधिनियम राष्ट्रपति को निर्वासन में बड़े पैमाने पर तेजी लाने के लिए नीतिगत और कार्यकारी कार्वाई के संबंध में व्यापक छूट देता है। अमेरिकी इतिहास में इस अधिनियम का इस्तेमाल अब तक केवल तीन बार हुआ है और वह भी केवल युद्ध के दौरान किया गया है। इससे पहले इसका इस्तेमाल द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान हुआ था।

उत्तर मैसेडोनिया के नाइट क्लब में आग लगने से 59 लोगों की मौत, 155 घायल

उत्तर मैसेडोनिया के नाइट क्लब में आग लगने के बाद जांच करने पहुंची पुलिस

स्कोप्जे (उत्तर मैसेडोनिया), 16 मार्च (एपी) उत्तर मैसेडोनिया के दक्षिणी शहर कोकानी के एक नाइट क्लब में शनिवार देर रात भीषण आग लगने से 59 लोगों की मौत हो गई और 155 अन्य घायल हो गए। गृह मंत्री पांसे तोशकोवस्की ने यह जानकारी दी। तोशकोवस्की ने संवाददाता सम्मेलन में बताया कि आग देर रात 2:35 बजे एक स्थानीय पॉप समूह के संगीत कार्यक्रम के दौरान लगी। उन्होंने कहा कि क्लब में जाने वाले युवाओं ने आतिशबाजी की जिससे आग लग गई। उन्होंने बताया कि अब तक 39 मृतकों की पहचान हो सकी है। क्लब में गए लोगों के परिवार के सदस्य अस्पतालों और कोकानी में कार्यालयों के सामने एकत्र होकर अधिकारियों से इस संबंध में अधिक जानकारी देने की गुहार लगा रहे हैं। तोशकोवस्की ने कहा कि पुलिस ने एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है, लेकिन उन्होंने उस व्यक्ति की संलिप्तता के बारे में विस्तृत जानकारी नहीं दी। स्वास्थ्य मंत्री अर्बेन तरावरी ने कहा कि 118 लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उन्होंने कहा कि अल्बानिया, बुल्गारिया, ग्रीस और सर्बिया सहित पड़ोसी देशों ने सहायता की पेशकश की है। यह हाल के दिनों में इस राष्ट्र में हुई सबसे भयानक त्रासदी है। इस देश की जनसंख्या लगभग 20 लाख है। राष्ट्रपति गोर्दाना सिलजानोवस्का दावकोवा ने स्कोप्जे के एक अस्पताल में घायलों से मुलाकात की और इमारत के बाहर इंतजार कर रहे परिजनों से भी बात की।

अमेरिका में बवंडर, धूल भरी आंधी और जंगल में आग से 32 लोगों की मौत

पिडमोंट। (एपी) अमेरिका के मध्य और दक्षिण हिस्से में आए बवंडर (टॉरनेडो) और तेज हवाओं के कारण कई मकान और स्कूलों को व्यापक नुकसान पहुंचा और कम से कम 32 लोगों की मौत हो गई। मिसौरी निवासी डकोटा हेंडरसन ने बताया कि शुक्रवार रात बवंडर से बुरी तरह प्रभावित वेन काउंटी में उन्होंने और अन्य लोगों ने मिलकर जब पड़ोसियों को बचाने का अभियान शुरू किया तो उनके रिश्तेदार के घर के बाहर मलबे में पांच शव पड़े मिले। अधिकारियों ने बताया कि राज्य में आए बवंडरों में कम से कम एक दर्जन लोगों की मौत हो गई।मिसिसिपी के गवर्नर टेट रीव्स ने शनिवार देर रात बताया कि तीन काउंटियों में छह लोगों की मौत हो गई तथा तीन अन्य लोग लापता हैं। उन्होंने बताया कि बवंडर पूर्व में अलबामा की ओर बढ़ गया है, जहां घरों को नुकसान पहुंचा है तथा सड़कें अवरुद्ध हो गई हैं।अधिकारियों ने अर्कंसास में तीन मौतों की पुष्टि की और गवर्नर सारा हकाबी सैंडर्स ने राज्य में आपातकाल की स्थिति घोषित कर दी। जॉर्जिया के गवर्नर ने भी राज्य में आपातकाल की घोषणा की है। राज्य में बवंडर और धूल भरी आंधी की वजह से शुक्रवार को लगभग एक दर्जन लोगों की मौत हो गई। स्टेट हाईवे पेट्रोल के अनुसार, कम से कम 50 वाहनों के टकरा जाने से कनसास राजमार्ग पर आठ लोगों की मौत हो गई। अधिकारियों ने कहा कि टेक्सास पैनहैंडल के अमरिलो में धूल भरी आंधी के कारण हुए कार हादसों में तीन लोगों की मौत हो गई। ओक्लाहोमा के कुछ इलाकों को आग की घटनाओं की वजह से खाली कराने का आदेश दिया गया है। पूरे राज्य में 130 से ज्यादा आग लगने की घटनाएं सामने आई हैं और लगभग 300 घर क्षतिग्रस्त या नष्ट हो गए हैं।

अमेरिका के मध्य और दक्षिण हिस्से में आए बवंडर ने जान-माल की काफी क्षति पहुंचायी

बांग्लादेश में साथी की पीटकर हत्या करने के मामले में 20 छात्रों की मौत की सजा बरकरार

ढाका। (भाषा) बांग्लादेश के उच्च न्यायालय ने रविवार को एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय के 20 छात्रों को मृत्युदंड देने के निचली अदालत के फैसले को बरकरार रखा। निचली अदालत आरोपी छात्रों को यह सजा 2019 में कथित राजनीतिक संबद्धता के कारण दूसरे वर्ष के एक छात्र की पीट-पीटकर हत्या करने के मामले में सुनाई थी। अदालत के अधिकारियों ने बताया कि न्यायमूर्ति ए.के.एम. असदुज्जमां और न्यायमूर्ति सैयद इनायत हुसैन की पीठ ने मृत्युदंड की सजा की अनिवार्य पुष्टि और निचली अदालत के फैसले के खिलाफ दोषियों की अपील पर सुनवाई पूरी करते हुए एक साथ फैसला सुनाया। अधिकारियों के मुताबिक सभी दोषी बांग्लादेश इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (बीयूईटी) के छात्र थे तथा अब भंग की जा चुकी बांग्लादेश छात्र लीग (बीसीएल) से जुड़े थे। बीसीएल अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना की पार्टी अवामी लीग की छात्र शाखा थी। आरोपियों ने सात अक्टूबर 2019 को बीयूईटी के इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग के द्वितीय वर्ष के छात्र अबरार फहद की सरकार की आलोचना करने वाली एक फेसबुक पोस्ट के कारण हत्या कर दी थी। अधिकारियों के मुताबिक अगली सुबह फहद की क्षत-विक्षत लाश उसके विश्वविद्यालय छात्रावास कक्ष में मिली। बाद में जांच में पता चला कि उसे 25 साथी छात्रों ने क्रिकेट बैट और अन्य कुंद वस्तुओं से लगभग छह घंटे तक पीटा था। फहाद की हत्या के बाद बीयूईटी और बीसीएल दोनों ने इन आरोपी छात्रों को तत्काल प्रभाव से निष्कासित कर दिया था। ढाका की एक अदालत ने आठ दिसंबर 2021 को 20 दोषियों को मौत की सजा सुनाई थी। उस समय अवामी लीग सत्ता में थी। अटॉर्नी जनरल एम. असदुज्जमान ने बताया कि 20 छात्रों की मौत की सजा बरकरार रखने के अलावा, अदालत ने अन्य पांच दोषियों की आजीवन कारावास की सजा भी बरकरार रखी। उन्होंने बताया कि ए भी बीयूईटी के छात्र थे।

यूक्रेन के विदेश मंत्री बुधवार को मुंबई आएंगे

मुंबई। (भाषा) यूक्रेन के विदेश मंत्री आंद्रेई सिबिहा युद्ध प्रभावित देश और भारत के बीच व्यापार संबंधों को गहरा करने के लिए बुधवार को मुंबई आएंगे। आयोजकों ने रविवार बताया कि सिबिहा अपने प्रतिनिधिमंडल के साथ यहां वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में एक व्यापार कार्यक्रम में भाग लेंगे। डब्ल्यूटीसी के चेयरमैन विजय कलंत्री ने बताया कि इसमें उनके मंत्रालय के वरिष्ठ राजनयिक और भारत में यूक्रेन के राजदूत ओलेक्सांद्र पोलिशचुक भी शामिल हैं।रिपोर्टों के अनुसार, मंत्री सोमवार से तीन दिवसीय भारत यात्रा पर आएंगे, जिसकी शुरुआत नई दिल्ली से होगी। वहां उनके प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मिलने और रायसीना वार्ता में भाग लेने की उम्मीद है। यह यात्रा यूक्रेन में शांति स्थापित करने के बढ़ते प्रयासों के बीच हो रही है, जिस पर तीन साल पहले रूस ने हमला किया था।कलंत्री ने कहा कि देश के पुनर्निर्माण पर नजर रखते हुए यूक्रेनी प्रतिनिधिमंडल ने डब्ल्यूटीसी और अखिल भारतीय उद्योग संघ द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित कार्यक्रम में बुनियादी ढांचे और निर्माण कंपनियों से मिलने में भी रुचि दिखाई है। उन्होंने कहा कि सिबिहा अगले तीन वर्षों में भारत-यूक्रेन व्यापार को दोगुना करना चाहता है, और भारत की वित्तीय राजधानी में एक वाणिज्य दूतावास खोलने का भी प्रस्ताव है।कलंत्री ने कहा, यूक्रेन का मानना है कि बहुत सारे अवसर हैं और वह यह संदेश देना चाहता है कि वह व्यापार के लिए खुला है। आयोजकों ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस को भी आमंत्रित किया है तथा उद्योग जगत की कई प्रमुख हस्तियों के भी कार्यक्रम में उपस्थित रहने की संभावना है।

पृथ्वी पर लौटने वाले अंतरिक्ष यात्रियों को करना पड़ता है चुनौतियों का सामना

नई दिल्ली। (भाषा) अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के अंदर अंतरिक्ष यात्रियों को हवा में तैरते देखना भले ही मजेदार लगता हो, लेकिन वहां गुरुत्वाकर्षण नहीं होने का असर धरती पर लौटने के बाद अंतरिक्ष यात्रियों पर लंबे समय तक रहता है और उन्हें मतली, चक्कर आने, बात करने और चलने में दिक्कत जैसी चुनौतियों से जूझना पड़ता है।

नासा की अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर तथा रूसी अंतरिक्ष यात्री अलेक्सांद्र गोरबुनोव बुधवार को स्पेसएक्स के ड्रैगन अंतरिक्ष यान से पृथ्वी पर लौटेंगे। विल्मोर और विलियम्स बोइंग के नए स्टारलाइनर कैप्सूल से पिछले साल पांच जून को केप कैनवेरल से रवाना हुए थे। वे दोनों आठ दिन के मिशन के लिए ही गए थे, लेकिन अंतरिक्ष यान से हीलियम के रिसाव और वेग में कमी के कारण ए लगभग नौ माह से अंतरिक्ष स्टेशन में फंसे हुए हैं। विभिन्न अंतरिक्ष मिशन के तहत यात्रा कर चुके कई अंतरिक्ष यात्रियों ने पृथ्वी पर लौटने के बाद चलने में कठिनाई, देखने में दिक्कत, चक्कर आने तथा बेबी फीट नामक स्थिति जैसी चुनौतियों का सामना करने की बात कही है। बेबी फीट का तात्पर्य है कि अंतरिक्ष यात्रियों के तलवों की त्वचा का मोटा हिस्सा निकल जाता है और उनके तलवे बच्चे की तरह मुलायम हो जाते हैं। ह्यूस्टन स्थित बेलर कॉलेज ऑफ मेडिसिन ने अंतरिक्ष में शरीर में होने वाले बदलावों के बारे में कहा, जब अंतरिक्ष यात्री पृथ्वी पर वापस लौटते हैं तो उन्हें पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के अनुसार तुरंत फिर से ढलना पड़ता है। उन्हें खड़े होने, अपनी दृष्टि को स्थिर करने, चलने और मुड़ने में समस्या हो सकती है। पृथ्वी पर लौटने वाले अंतरिक्ष यात्रियों को उनकी बेहतरी के लिए पृथ्वी पर लौटने के तुरंत बाद अक्सर एक कुर्सी पर बिठाया जाता है। अंतरिक्ष यात्रियों को पृथ्वी पर जीवन के अनुसार स्वयं को फिर से ढालने में कई सप्ताह लगते हैं। कान के अंदर स्थित वेस्टिबुलर अंग मस्तिष्क को गुरुत्वाकर्षण के बारे में जानकारी भेजकर पृथ्वी पर चलते समय मनुष्यों को अपने शरीर को संतुलित रखने में मदद करता है। जापानी अंतरिक्ष एजेंसी जेएएक्सए ने कहा, अंतरिक्ष में कम गुरुत्वाकर्षण के कारण वेस्टिबुलर अंगों से प्राप्त होने वाली जानकारी में बदलाव आता है। ऐसा माना जाता है कि इससे मस्तिष्क भ्रमित हो जाता है और स्पेस सिकनेस (अंतरिक्ष में यात्रा करने वाले कई लोगों को होने वाली स्वास्थ्य संबंधी दिक्कत) हो जाती है। जब आप पृथ्वी पर वापस आते हैं, तो आप पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के प्रभावों का फिर से अनुभव करते हैं और इस प्रकार कभी-कभी ग्रैविटी सिकनेस हो जाती है, जिसके लक्षण स्पेस सिकनेस जैसे ही होते हैं। पृथ्वी पर गुरुत्वाकर्षण रक्त और अन्य शारीरिक तरल पदार्थों को शरीर के निचले हिस्से की ओर खींचता है, लेकिन अंतरिक्ष में भारहीनता के कारण अंतरिक्ष यात्रियों के शरीर में ए तरल पदार्थ शरीर के ऊपरी हिस्सों में जमा हो जाते हैं और इसी कारण वे फूले हुए नजर आते हैं।

जेएएक्सए ने कहा, पृथ्वी पर लौटने वाले अंतरिक्ष यात्रियों को खड़े होने पर अक्सर चक्कर आते हैं। इस स्थिति को ऑर्थोस्टेटिक हाइपोटेंशन कहा जाता है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि पृथ्वी पर गुरुत्वाकर्षण अंतरिक्ष की तुलना में अधिक मजबूत होता है और हृदय से सिर तक रक्त पहुंचना अधिक कठिन होता है। गुरुत्वाकर्षण की कमी के कारण हड्डियों के घनत्व में काफी और अक्सर अपूरणीय कमी आती है। नासा के अनुसार, अगर अंतरिक्ष यात्री इस कमी को दूर करने के लिए सावधानी नहीं बरतते हैं, तो वजन सहन करने वाली हड्डियों का घनत्व अंतरिक्ष में हर महीने करीब एक प्रतिशत कम हो जाता है।इस समस्या से निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर अंतरिक्ष यात्रियों के लिए एक सख्त व्यायाम व्यवस्था है। नासा ने कहा, अंतरिक्ष यात्रियों को शून्य गुरुत्वाकर्षण के कारण हड्डियों और मांसपेशियों को होने वाले नुकसान से बचाने के लिए ट्रेडमिल या स्थिर साइकिल का उपयोग करके प्रतिदिन दो घंटे व्यायाम करना आवश्यक है। यह व्यायाम नहीं करने पर अंतरिक्ष यात्री महीनों तक अंतरिक्ष में तैरने के बाद पृथ्वी पर लौटने के बाद चलने या खड़े होने में असमर्थ रहेंगे। कनाडाई अंतरिक्ष यात्री क्रिस हैडफील्ड ने बताया कि उन्हें अंतरिक्ष में जीभ के भारहीन होने के कारण 2013 में अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन से लौटते पर बात करते समय दिक्कत हुई। हैडफील्ड ने कहा , पृथ्वी पर लौटने के तुरंत बाद मैं अपने होठों और जीभ का वजन महसूस कर सकता था और मुझे अपनी बातचीत का तरीका बदलना पड़ा। मुझे एहसास ही नहीं हुआ था कि मुझे भारहीन जीभ से बात करने की आदत हो गई थी। रोग प्रतिरोधी क्षमता कमजोर हो जाने के कारण पृथ्वी पर लौटने पर अंतरिक्ष यात्रियों को संक्रमण और बीमारी का खतरा भी अधिक रहता है।

भारत के चाफेकर को रीकैप आईएससी का सातवां कार्यकारी निदेशक नियुक्त किया गया:सिंगापुर।भारतीय तटरक्षक बल के पूर्व अतिरिक्त महानिदेशक वी डी चाफेकर को रीकैप आईएससी का सातवां कार्यकारी निदेशक (ईडी) नियुक्त किया गया है। रीकैप आईएससी एशिया में पोतों को निशाना बनाकर की जाने वाली समुद्री चोरी और सशस्त्र डकैती के खिलाफ सहयोग बढ़ाने के लिए सरकारों के बीच एक क्षेत्रीय समझौता है। रीकैप सूचना साझाकरण केंद्र (आईएससी) की 19वीं शासी परिषद की बैठक में शुक्रवार को बताया गया कि चाफेकर इस साल एक अप्रैल से 31 मार्च 2028 तक तीन साल के कार्यकाल के लिए ईडी का पद संभालेंगे। परिषद ने उन्हें पिछले साल पांच नवंबर को इस पद के लिए चुना था। परिषद ने निवर्तमान ईडी कृष्णस्वामी नटराजन को समर्पित सेवा और रीकैप आईएससी की प्रतिष्ठा बढ़ाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए धन्यवाद दिया।

परिषद ने फिलीपीन के गवर्नर एडमिरल रोनी एल गवन को 12 मार्च से 11 मार्च, 2028 तक के कार्यकाल के लिए शासी परिषद का अध्यक्ष चुना।

खैबर पख्तूनख्वा में मदरसा सह मस्जिद में हुए विस्फोट में मौलवी की मौत, तीन घायल

पेशावर। पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में एक मदरसा सह मस्जिद में शनिवार को हुए विस्फोट में एक मौलवी की मौत हो गई जबकि तीन अन्य लोग लोग घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस के मुताबिक, इस हादसे से 24 घंटे से भी कम समय पहले प्रांत में ही एक अन्य मस्जिद में शुक्रवार की नमाज के दौरान बम विस्फोट हुआ था।अस्पताल अधिकारियों के अनुसार, इस घटना में प्रतिबंधित संगठन लश्कर-ए-इस्लाम के संस्थापक बारा के स्थानीय मौलवी मुफ्ती मुनीर शाकिर घायल हो गए थे, उन्होंने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। पुलिस ने बताया कि पेशावर जिले के उर्मुर बाला गांव में एक मदरसे में विस्फोट हुआ था। पुलिस के प्रवक्ता ने बताया कि पुलिस, बम निरोधक इकाई और आतंकवाद निरोधक विभाग के कर्मचारी घटनास्थल पर मौजूद हैं और साक्ष्य एकत्र किए जा रहे हैं।लेडी रीडिंग अस्पताल (एलआरएच) के प्रवक्ता मोहम्मद असीम ने एक वीडियो संदेश में कहा, मुफ्ती शाकिर को गंभीर हालत में एलआरएच लाया गया था और उनकी मृत्यु हो गई।

कोहली ने दौरों पर परिवार के साथ रहने की वकालत की, कहा

कमरे में जाकर अकेले बैठना नहीं चाहता

भाषा। बेंगलुरू

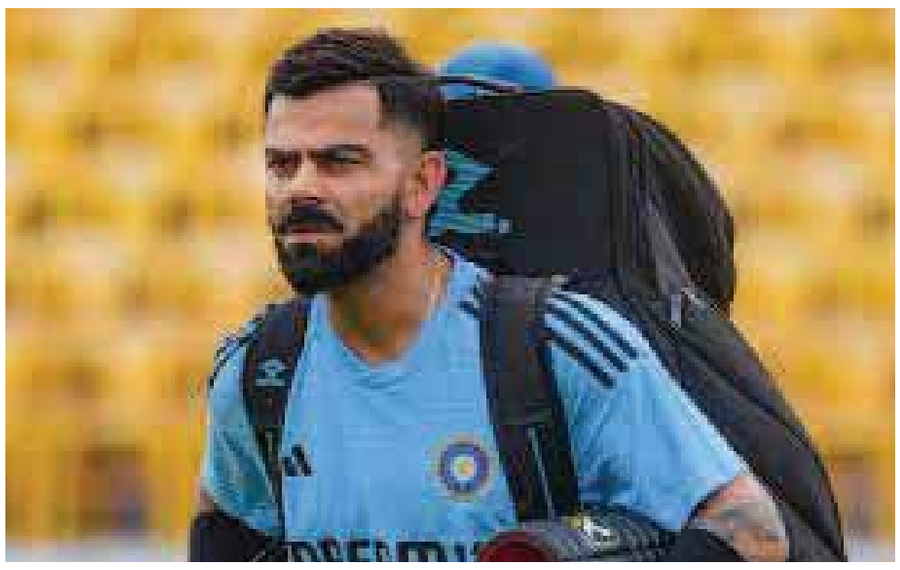

स्टार बल्लेबाज विराट कोहली ने टीम के दौरों पर खिलाड़ियों के परिवारों की मौजूदगी का समर्थन करते हुए कहा कि वह अपने होटल के कमरे में अकेले उदास रहने के बजाय मैदान पर मुश्किल और तनावपूर्ण दिनों से निपटने के लिए हमेशा अपने पास व्यक्तिगत समर्थन रखना पसंद करेंगे।भारत को ऑस्ट्रेलिया से टेस्ट श्रृंखला में मिली।-3 की हार के बाद भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) द्वारा जारी निर्देश में 45 दिन से अधिक के दौरे पर खिलाड़ियों के परिवार के साथ समय बिताने की सीमा 14 दिन तक सीमित कर दी थी।इसके अनुसार खिलाड़ियों की पत्नी, बच्चे या महिला मित्र छोटे दौरों पर अधिकतम एक हफ्ते तक उनके साथ रह सकते हैं।

हाल में खत्म हुई चैंपियंस ट्रॉफी के दौरान कोहली, रविंद्र जडेजा और मोहम्मद शमी के परिवार दुबई में थे लेकिन वे टीम होटल में नहीं रुके और परिवारों के ठहरने का खर्च खिलाड़ियों ने उठाया, बीसीसीआई ने नहीं।कोहली ने शनिवार को यहां खत्म हुए आरसीबी के इनोवेशन लैब सम्मेलन के दौरान कहा, लोगों को परिवार की भूमिका समझाना बहुत मुश्किल है। हर बार जब आप किसी तनावपूर्ण स्थिति में होते तो अपने परिवार के पास वापस आना कितना महत्वपूर्ण होता है। मुझे नहीं लगता कि लोगों को इसकी अहमियत की समझ है। कोहली ने कहा कि परिवार के साथ होने से खिलाड़ी को मैदान पर मिली निराशा से जल्दी उबरने में मदद मिलती है। उन्होंने कहा, मैं अपने कमरे में जाकर अकेले बैठकर उदास नहीं रहना चाहता। मैं सामान्य होना चाहता हूं। तभी आप अपने खेल को एक जिम्मेदारी के रूप में ले सकते हैं। कोहली ने कहा, आप बाहर की अपनी प्रतिबद्धता पूरी करते हैं और फिर आप अपने घर वापस आते हैं, आप परिवार के साथ होते हैं और आपके घर में माहौल बिलकुल सामान्य होता होती है और सामान्य पारिवारिक जीवन चलता रहता है। उन्होंने कहा, इसलिए मेरे लिए यह बहुत खुशी का दिन होता है। जब भी संभव होता है, मैं अपने परिवार के साथ बाहर जाने और समय बिताने का कोई अवसर नहीं छोड़ता। कोहली ने इस बात से निराश थे क्योंकि ऐसे मुद्दों से जिसका कोई संबंध भी नहीं था, वो लोग भी इन चर्चाओं में शामिल रहे हैं। इस 36 साल के खिलाड़ी ने कह, मुझे इससे बहुत निराशा हुई क्योंकि जिनका इस मामले में कोई लेना देना नहीं था, उन्हें भी चर्चा में शामिल किया गया जिन्होंने कहा, ओह, शायद खिलाड़ियों को परिवार से दूर रखा जाना चाहिए। उन्होंने कहा, और अगर आप किसी खिलाड़ी से पूछें कि क्या आप चाहते हैं कि आपका परिवार हर समय आपके आस-पास रहे ? तो वे हां ही कहेंगे। दुनिया के सबसे फिट क्रिकेटरों में से एक कोहली ने अपने परिवार के साथ मजबूत रिश्तों की बात बताते हुए कहा कि अपनी मां को अपने फिटनेस रूटीन के बारे में समझाना मुश्किल था।उन्होंने कहा, टीम के दृष्टिकोण से फिटनेस के लिए सपोर्ट सिस्टम इतना कठिन नहीं था।

लेकिन मेरी मां को यह समझाना इससे कहीं ज्यादा मुश्किल था कि मैं क्या कर रहा था। वह इस बात से बहुत निराश थीं कि मैं कोई परांठा नहीं खा रहा था और मैं मैदान पर दुबला दिख रहा था। कोहली ने कहा, और दूसरे देशों में खेलने वाले लोग मुझसे पूछ रहे थे कि मैं कैसे ट्रेनिंग कर रहा हूं और मैं अब इतना फिट कैसे हूं। और मेरी मां मुझे कह रही थी कि मैं दुबला दिख रहा हूं। मुझे उन्हें समझाना पड़ा कि सब कुछ ठीक है, मैं बीमार नहीं हूं, चिंता मत करो। यह ज्यादा मुश्किल था।

शेफाली और लैनिंग के शुरूआती विकेटों से मैच हमारे पक्ष में हो गया : मुंबई कोच

मुंबई।(भाषा) मुंबई इंडियंस की मुख्य कोच चार्लोट एडवर्डस ने कहा कि दिल्ली कैपिटल्स की कप्तान मेग लैनिंग और सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा के विकेट जल्दी चटकाने से उनकी टीम को महिला प्रीमियर लीग फाइनल जीतने में मदद मिली। लैनिंग 13 और शेफाली चार रन बनाकर उस समय आउट हुईं जब स्कोर बोर्ड पर 17 रन टंगे थे। जीत के लिए 150 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए दिल्ली की टीम नौ विकेट पर 141 रन ही बना सकी। एडवर्डस ने मैच के बाद प्रेस कांफ्रेंस में कहा , हमें पता था कि 150 रन का लक्ष्य ज्यादा बड़ा नहीं होगा लेकिन फाइनल में यह बुरा भी नहीं था। शेफाली अपना चिर परिचित प्रदर्शन नहीं कर सकी और मुझे पता था कि उसका विकेट लेने के बाद हमारे लिए मौका है। उन्होंने कहा , लैनिंग और शेफाली की शुरूआती साझेदारी हमारे लिए पिछले कुछ साल में सिरदर्द रही थी और उन दोनों को जल्दी आउट करने से मदद मिली। यह टीम प्रयासों का नतीजा है। इंग्लैंड की पूर्व कप्तान एडवर्डस ने 44 गेंद में 66 रन बनाने वाली कप्तान हरमनप्रीत कौर की तारीफ करते हुए कहा , वह शांतचित्त होकर खेल रही थी। वह काफी प्रतिस्पर्धी है और एक और खिताब जीतना चाहती थी जिसके लिए उसने पूरा प्रयास किया। वह युवा खिलाड़ियों से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कराती है और विदेशी तथा अनुभवी खिलाड़ियों के साथ बखूबी काम करती है।

शायद मैच का दबाव नहीं झोल पाए डब्ल्यूपीएल फाइनल हारने के बाद दिल्ली के मुख्य कोच ने कहा

मुंबई। (भाषा) दिल्ली कैपिटल्स के मुख्य कोच जोनाथन बैटी ने महिला प्रीमियर लीग में लगातार तीसरा फाइनल हारने के बाद कहा कि शायद उनकी टीम दबाव का सामना नहीं कर सकी। दिल्ली कैपिटल्स फाइनल में मुंबई इंडियंस के खिलाफ 150 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए आठ रन से चूक गई। इससे पहले दो सत्रों में उसे आरसीबी और मुंबई ने ही हराया था। कोच ने मैच के बाद कहा , सभी बहुत आहत हैं। मुझे लगता है कि इस विकेट पर 150 रन का लक्ष्य हासिल किया जा सकता था। बड़ा मैच , फाइनल खेलने का दबाव शायद खिलाड़ी झेल नहीं पाए लेकिन मुंबई को जीत का श्रेय जाता है जिन्होंने इस स्कोर का भी बचाव कर लिया। उन्होंने कहा , उन्होंने हमारे लिए काफी कठिन कर दिया और हम कभी दबाव बना नहीं पाए। उन्होंने कहा कि पिछले दो फाइनल हारने का उनकी टीम पर कोई मनोवैज्ञानिक दबाव नहीं था। उन्होंने कहा , सभी लड़कियां काफी सकारात्मक थीं। मैं उन्हें दोष नहीं देता। ऐसी नकारात्मक बातें हो रही थी कि पिछले दो फाइनल हारने का कोई दबाव है लेकिन ऐसा नहीं था। वे सभी काफी सकारात्मक और आत्मविश्वास से भरी थीं। उन्होंने कहा , कोई मानसिक गतिरोध नहीं था। हमने इस विकेट पर उन्हें 149 रन पर रोक दिया जबकि 180 रन बन सकते थे। हम हार से आहत हैं और आत्ममंथन में समय लगेगा कि गलती कहां हुई। लगातार दो कड़े मुकाबले खेलें हैं और यह इतना करीबी मैच था कि बस आठ रन यानी दो चौकों के अंतर से हारे।

दीपक पूनिया, अंतिम पंघाल एशियाई चैंपियनशिप के लिए 30 सदस्यीय भारतीय टीम में

नई दिल्ली, 15 मार्च (भाषा) विश्व चैंपियनशिप के पदक विजेता दीपक पूनिया और अंतिम पंघाल को 25 से 30 मार्च तक जॉर्डन के अम्मान में होने वाली सीनियर एशियाई चैंपियनशिप के लिए शनिवार को 30 सदस्यीय भारतीय टीम में शामिल किया गया। भारतीय कुश्ती महासंघ द्वारा यहां आईजी खेल परिसर में कराए गए चयन ट्रायल के दौरान पुरुष फ्रीस्टाइल और ग्रीको-रोमन के साथ-साथ महिला वर्ग में 10-10 पहलवानों का चयन किया गया। 2019 विश्व चैंपियनशिप में रजत और 2022 राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण जीतने वाले पूनिया हालांकि अब 86 किग्रा से 92 किग्रा में आ गए हैं जबकि विशाल कालीरमन भी 65 किग्रा से 70 किग्रा में खेलने लगे हैं। पंघाल (53 किग्रा) और रीतिका (86 किग्रा) ने उम्मीद के मुताबिक अपने ट्रायल जीते चयन ट्रायल की देखरेख भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) की चयन समिति ने की जिसमें अध्यक्ष संजय कुमार सिंह, उपाध्यक्ष जय प्रकाश, कोषाध्यक्ष एसपी देशवाल और ओलंपिक पदक विजेता योगेश्वर दत्त शामिल थे। डब्ल्यूएफआई ने कहा कि उसने देश भर के शीर्ष पहलवानों को ट्रायल में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया ताकि प्रतिस्पर्धी और पारदर्शी चयन प्रक्रिया सुनिश्चित की जा सके। डब्ल्यूएफआई ने कहा, हालांकि पेरिस ओलंपिक पदक विजेता अमन सहरावत सहित कुछ शीर्ष पहलवान चोटों के कारण भाग नहीं ले पाए।

चुने हुए पहलवान : पुरुष फ्रीस्टाइल: चिराग (57 किग्रा), उदित (61 किग्रा), सुजीत (65 किग्रा), विशाल कालीरमन (70 किग्रा), जयदीप (74 किग्रा), चंद्रमोहन (79 किग्रा), मुकुल दहिया (86 किग्रा), दीपक पूनिया (92 किग्रा), जॉइंटी कुमार (97 किग्रा) और दिनेश (125 किग्रा)।

पुरुष ग्रीको-रोमन: नितिन (55 किग्रा), सुमित (60 किग्रा), उमेश (63 किग्रा), नीरज (67 किग्रा), कुलदीप मलिक (72 किग्रा), सागर (77 किग्रा), राहुल (82 किग्रा), सुनील कुमार (87 किग्रा), नितेश (97 किग्रा) और प्रेम (130 किग्रा)। महिला कुश्ती: अंकुश (50 किग्रा), अंतिम (53 किग्रा), नीशू (55 किग्रा), नेहा शर्मा (57 किग्रा), मुस्कान (59 किग्रा), मनीषा (62 किग्रा), मोनिका (65 किग्रा), मानसी लाठर (68 किग्रा), ज्योति बेरवाल (72 किग्रा) और रीतिका (76 किग्रा)।

बीसीसीआई चिकित्सा टीम के प्रमुख नितिन पटेल ने इस्तीफा दिया, सीओई में हो सकते हैं बदलाव

नई दिल्ली।(भाषा) भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के सेंटर आफ एक्सीलेंस (सीओई, पहले एनसीएराष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी) के स्टाफ में आने वाले कुछ महीनों में कुछ बदलाव हो सकते हैं क्योंकि खेल विज्ञान और चिकित्सा टीम के प्रमुख नितिन पटेल ने हाल ही में लगभग तीन साल के सफल कार्यकाल के बाद अपना इस्तीफा दे दिया है। पटेल इस पर टिप्पणी के लिए उपलब्ध नहीं थे, लेकिन बीसीसीआई के एक वरिष्ठ अधिकारी ने पीटीआई को इस बात की पुष्टि की कि एनसीए के सबसे वरिष्ठ कर्मचारियों में से एक नितिन ने वास्तव में अपना पद छोड़ दिया है।

बीसीसीआई के एक वरिष्ठ सूत्र ने गोपनीयता की शर्त पर पीटीआई से कहा, हां, नितिन ने स्पोर्ट्स साइंस और मेडिकल टीम के प्रमुख पद से इस्तीफा दे दिया है। नितिन का बीसीसीआई के साथ बहुत अच्छा कार्यकाल था। उन्होंने एनसीए में स्पोर्ट्स साइंस और मेडिकल टीम के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सूत्र ने कहा, पिछले कुछ वर्षों में सबसे अच्छी बात यह रही कि जब भी कोई खिलाड़ी चोटिल होने पर उपचार के लिए यहां आता था तो पूरी तरह फिट होने पर ही उसे खेलने की मंजूरी मिलती थी। नितिन का परिवार विदेश में रहता है और सीओई के खेल विज्ञान और चिकित्सा प्रभाग की जिम्मेदारी संभालना साल में 365 दिन का काम है। पटेल ने अपने कार्यकाल के दौरान तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद शमी,

बल्लेबाज केएल राहुल और स्पिनर कुलदीप यादव जैसे प्रमुख खिलाड़ियों के रिहैबिलिटेशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। सूत्र ने कहा कि लेवल तीन के कुछ कोच और स्ट्रेंथ एंड कंडीशनिंग से जुड़े कुछ कोच अगले कुछ महीनो में अपना पद छोड़ सकते हैं। एनसीए प्रमुख वीवीएस लक्ष्मण का कार्यकाल इस साल के अंत तक पूरा होने वाला है। उनसे हालांकि 2027 में होने वाले वनडे विश्व कप तक अपने पद पर बने रहने का अनुरोध किया जा सकता है। पटेल से पहले एनसीए से जुड़े कोचों में से एक साईराज बहुतुले ने भी पद छोड़ दिया था और वह राजस्थान रॉयल्स के सहयोगी स्टाफ में शामिल हो गए। यही नहीं सितांशु कोटक सीनियर पुरुष टीम स्टाफ में स्थाई रूप से शामिल हो गए हैं। भारत की अंडर 19 टीम से जुड़े एनसीए के कोच हृषिकेश कानिटकर अब भी सीओई में हैं, लेकिन यह देखना दिलचस्प होगा कि जिम्बाब्वे और नामीबिया में अगले साल की शुरुआत में होने वाले अंडर-19 विश्व कप के समाप्त होने के बाद वह अपने पद पर बने रहेंगे या नहीं। कुछ विशेषज्ञ बल्लेबाजी और गेंदबाजी कोच हैं, जो आने वाले महीनों में नए करियर की तलाश में अपना पद छोड़ सकते हैं।

विशेष ओलंपिक विश्व शीतकालीन खेल : भारत ने 33 पदक के साथ अभियान खत्म किया

नई दिल्ली। भारत ने अंतिम दिन चार स्पर्धाओं में 12 पदक जीतकर इटली के तूरिन में चल रहे विशेष ओलंपिक विश्व शीतकालीन खेलों में अपना अभियान कुल 33 पदकों के साथ खत्म किया। भारत ने आठ स्वर्ण, 18 रजत और सात कांस्य पदक जीते।

स्नोशूइंग में भारत ने पहले जीते गए छह पदक में चार और पदक जोड़े। वासु तिवारी, शालिनी चौहान और तान्या ने 25 मीटर स्नोशूइंग स्पर्धा में रजत पदक जीता जबकि जहांगीर ने इसी वर्ग में कांस्य पदक अपने नाम किया। अल्पाइन स्कीइंग वर्ग में भी भारतीय खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया जिसमें राधा देवी और निर्मला देवी ने इंटरमीडिएट स्लालोम (क्रमश: एफ01 और एफ04) में रजत पदक जीते जबकि अभिषेक कुमार ने नोविस स्लालोम (एम02) में एक और रजत पदक हासिल किया। आकृति ने क्रॉस कंट्री स्कीइंग में शानदार प्रदर्शन करते हुए 100 मीटर क्लासिकल टेक्नीक (एफ02 वर्ग) में कांस्य पदक जीता। फ्लोरबॉल स्पर्धा में भारतीय महिला टीम ने कांस्य पदक जीता। भारत ने स्नोशूइंग और अल्पाइन स्कीइंग में 10-10 पदक जीते जबकि स्नोबोर्डिंग में छह पदक हासिल किए।

बाला देवी की हैट्रिक श्रीभूमि एफसी ने सेतु एफसी को 3-2 से हराया

बैरकपुर (पश्चिम बंगाल)। (भाषा) भारतीय फुटबॉल टीम की स्टार स्ट्राइकर बाला देवी की हैट्रिक की मदद से मेजबान श्रीभूमि एफसी ने रविवार को यहां इंडियन वुमैन्स लीग (आईडब्ल्यूएल) में सेतु एफसी को 3-2 से हरा दिया। बाला देवी ने 39वें, 49वें (पेनल्टी) और 65वें मिनट में गोल किए। वहीं सेतु एफसी ने 37वें मिनट में हदीजाह नंदगो के गोल से बढ़त बनाई और टीम के लिए दूसरा गोल लिशम बबीना देवी ने 88वें मिनट में किया। इस जीत से श्रीभूमि एफसी के आठ मैच में 12 अंक हो गए हैं और वह तालिका में तीसरे स्थान पर है जबकि सेतु एफसी के आठ मैच में 10 अंक हैं। भुवनेश्वर में खेले गए दूसरे मैच में मनीषा नाइक के दूसरे हाफ में किए गए दो गोल की मदद से नीता एफए ने होप्स एफसी पर 2-0 से जीत हासिल की। मनीषा ने 60वें और 63वें मिनट में दो गोल दागे। नीता एफए आठ मैच में 10 अंक के साथ पांचवें स्थान पर पहुंच गई। वहीं होप्स एक अंक के साथ सबसे नीचे बनी हुई है।

मकलारेन के लैंडो नौरिस ने आस्ट्रेलियाई ग्रां प्री जीती, हैमिल्टन दसवें स्थान पर

मेलबर्न। मैकलारेन के लैंडो नौरिस ने वर्षाबाधित आस्ट्रेलियाई ग्रां प्री जीत ली जबकि रेडबुल के मैक्स वेरस्टाप्पेन मामूली अंतर से चूक गए। फेरारी के लिए पदार्पण करने वाले सात बार के चैम्पियन लुईस हैमिल्टन निराशाजनक दसवें स्थान पर रहे। सत्र की पहली रेस 2010 के बाद पहली बार मेलबर्न में बारिश के बीच आयोजित की गई। वेरस्टाप्पेन पहला स्थान पाने से 0.865 सेकंड से चूक गए। मर्सीडीज के जॉर्ज रसेल तीसरे स्थान पर रहे। मैकलारेन ने आस्ट्रेलिया ग्रां प्री में 12वीं बार जीत दर्ज करके फेरारी का रिकॉर्ड भी तोड़ा। उसके दूसरे ड्राइव आंद्रिया किमि एंटोनेली पांचवें स्थान पर रहे।

अवनि ने 65 का कार्ड खेला संयुक्त 13वें स्थान पर रहीं

कोफ्स हार्बर (ऑस्ट्रेलिया)। भारतीय महिला गोल्फर अवनि प्रशांत ने ऑस्ट्रेलियाई वुमैन्स क्लासिक के अंतिम दौर में पांच अंडर 65 का शानदार कार्ड बनाया जिससे वह लेडीज यूरोपीय टूर में पदार्पण सत्र में शीर्ष 15 में शामिल रहीं। अवनि ने इससे पहले 72-70 के कार्ड खेले थे जिससे उनका कुल स्कोर तीन अंडर 207 का रहा। वह विजेता रहीं मैनन डि रोए से छह शॉट पीछे रहीं जिन्होंने अंतिम होल में बर्डी लगाकरअंडर 207 का रहा। वह विजेता रहीं मैनन डि रोए से छह शॉट पीछे रहीं जिन्होंने अंतिम होल में बर्डी लगाकर कारा गेनर को पीछे छोड़ते हुए खिताब जीता। कट हासिल करने वाली एक अन्य भारतीय प्रणवी उर्स ने 72 का कार्ड खेला जिससे वह संयुक्त 65वें स्थान पर रहीं। दीक्षा डागर कट में जगह नहीं बना सकी थीं।

लाहिड़ी 25वें स्थान पर रहे, नीमन ने साल का दूसरा खिताब जीता

सिंगापुर। भारतीय गोल्फर अनिर्बान लाहिड़ी ने रविवार को यहां एलआईवी गोल्फ सिंगापुर में तीसरे और अंतिम दौर में दो अंडर 69 का कार्ड खेलकर संयुक्त रूप से 25वां स्थान हासिल किया।पहले दो दिन 70 और 72 का स्कोर बनाने वाले लाहिड़ी ने अंतिम राउंड में दो बोगी के मुकाबले चार बर्डी लगाई।जोकिन नीमन (65) ने ब्रूक्स कोएप्का (66) पर पांच शॉट की बड़ी जीत हासिल करके खिताब जीता। बेन कैंपबेल तीसरे स्थान पर रहे।नीमन का सत्र की पहली कर प्रतियोगिताओं में यह दूसरी जीत है। उन्होंने फरवरी में एलआईवी गोल्फ एडिलेड भी जीता था।

तेलुगू फिल्म रॉबिनहुड में नजर आएंगे क्रिकेटर डेविड वॉर्नर

नई दिल्ली।सनराइजर्स हैदराबाद के लिए आईपीएल में खेल चुके आस्ट्रेलियाई क्रिकेटर डेविड वॉर्नर आगामी तेलुगू फिल्म रॉबिनहुड में मेहमान कलाकार की भूमिका में नजर आएंगे। मैत्री मूवी मेकर्स द्वारा बनाई जा रही इस फिल्म के निर्देशक वेंकी कुडुमुला होंगे। यह फिल्म 28 मार्च को रिलीज होगी। निर्माताओं ने एक्स पर लिखा , मैदान पर चमकने और अपनी छाप छोड़ने के बाद अब रूपहले पर्दे पर चमकने का समय है। सभी के चहेते डेविड वॉर्नर का रॉबिनहुड में अतिथि भूमिका के साथ भारतीय सिनेमा में स्वागत है। वॉर्नर ने भी इस बारे में एक्स पर लिखा , भारतीय सिनेमा, मैं आ रहा हूं। रॉबिनहुड का हिस्सा बनकर उत्साहित हूं। शूटिंग में बहुत मजा आया।

घरेलू क्रिकेट की फॉर्म आईपीएल में भी जारी रखना चाहते हैं करुण नायर

नई दिल्ली। (भाषा) घरेलू क्रिकेट में सभी प्रारूप में शानदार प्रदर्शन करने वाले अनुभवी बल्लेबाज करुण नायर इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में भी अच्छी फार्म जारी रखकर अपनी टीम दिल्ली कैपिटल्स को पहला खिताब दिलाने में अहम भूमिका निभाना चाहते हैं।नायर घरेलू क्रिकेट में विदर्भ के लिए महत्वपूर्ण खिलाड़ी साबित हुए। उन्होंने 50 ओवर के प्रारूप में खेली जाने वाली विजय हजारे ट्रॉफी में नौ मैच में 389.50 की औसत से 779 रन बनाए जिसमें पांच शतक और एक अर्धशतक शामिल है। उन्होंने रणजी ट्रॉफी में भी अपनी यह फॉर्म जारी रखी और 57.33 की औसत से 860 रन बनाए जिसमें चार शतक शामिल हैं। उन्होंने केरल के खिलाफ रणजी ट्रॉफी फाइनल में नाबाद 132 रन बनाकर अपनी टीम को चैंपियन बनने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दिल्ली कैपिटल्स ने आगामी आईपीएल से पहले उन्हें 50 लाख रुपए में खरीदा।

नायर ने यहां पत्रकारों से कहा, मैं दिल्ली कैपिटल्स की टीम में वापसी करके वास्तव में बहुत खुश हूं। मैं टीम से जुड़ने और खेलने के लिए बेहद उत्साहित हूं। मैं प्रत्एक मैच को पिछले मैच की तरह महत्वपूर्ण मानकर चलूंगा। मैंने बहुत अधिक बदलाव नहीं किए और केवल प्रक्रिया पर भरोसा रखा तथा पूरे सत्र के दौरान ऐसा करना जारी रखा। इस सत्र के लिए यही मेरी रणनीति थी। उन्होंने कहा, मैं जितनी जल्दी हो सके अपनी प्रक्रिया, अपनी लय हासिल कर लूंगा और मैं जल्दी अच्छी शुरुआत करना चाहूंगा और जैसे-जैसे टूर्नामेंट आगे बढ़ेगा मैं बेहतर होने की कोशिश करूंगा। मैंने जो एकमात्र चीज की है वह स्वयं को परिस्थितियों के अनुसार ढालना है। मैंने अपने खेल में कुछ शॉट जोड़े और जरूरत पड़ने पर उन्हें आजमाने का आत्मविश्वास बनाया। मैं अब तनावमुक्त रहने की भी कोशिश करता हूं। नायर ने दिल्ली कैपिटल्स के नए कप्तान अक्षर पटेल की ही जमकर प्रशंसा की। उन्होंने कहा, अक्षर लंबे समय से खेल रहा है और वह शानदार कप्तान साबित होगा। वह एक ऐसा खिलाड़ी है जो खेल के प्रत्एक पहलू के बारे में अच्छी तरह से जानता है और प्रत्एक की स्थिति और भूमिका को समझता है। मैं उनके साथ काम करने को लेकर उत्साहित हूं। नायर आगामी सत्र में भारत के स्टार बल्लेबाज केएल राहुल के साथ खेलने को लेकर भी उत्साहित हैं।उन्होंने कहा, मैं राहुल के साथ खेलने को लेकर उत्साहित हूं। हम शुरू से साथ में खेलते रहे हैं।

न्यूजीलैंड ने पहले टी20 में पाकिस्तान को नौ विकेट से हराया

क्राइस्टचर्च। न्यूजीलैंड ने पांच मैचो की टी20 श्रृंखला के पहले मैच मे पाकिस्तान को नौ विकेट से हरा दिया। पनी मेजबानी मे हुई 50 ओवरो के प्रारूप की चैम्पियंस ट्रॉफी मे एक भी मैच नही जीत पाने के बाद पाकिस्तान की टीम मे कई बदलाव किए गए है।सलमान आगा पहली बार कप्तानी कर रहे है और अगले साल होने वाले टी20 विश्व कप की तैयारी मे अब हर श्रृंखला अहम है। पाकिस्तानी टीम न्यूजीलैंड के तेज आक्रमण का सामना नही कर सकी और 18.4 ओवर मे 91 रन पर आउट हो गई। यह टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मे पाकिस्तान का पांचवा न्यूनतम स्कोर है। न्यूजीलैंड ने 10 .1 ओवर मे एक विकेट खोकर ही लक्ष्य हासिल कर लिया। टिम सीफर्ट ने 29 गेद मे 44 और फिन एलेन ने 17 गेद मे 29 रन बनाए। टिम रॉबिनसन 18 रन बनाकर नाबाद रहे। मोहम्मद रिजवान और बाबर आजम की जगह खेल रहे पाकिस्तान के सलामी बल्लेबाज मोहम्मद हारिस और हसन नवाज खाता भी नही खोल सके। पहले छह ओवर मे पाकिस्तान का स्कोर चार विकेट पर 14 रन था। न्यूजीलैंड के लिए काइल जैमीसन ने आठ रन देकर तीन और जैकब डफी ने 14 रन देकर चार विकेट लिए।

अल्काराज को हराकर ड्रेपर इंडियन वेल्स फाइनल में

इंडियन वेल्स। जैक ड्रेपर ने दो बार के गत चैम्पियन कार्लोस अल्काराज को 6 . ।, 0 . 6, 6 . 4 से हराकर बीएनपी परीबस ओपन टेनिस के फाइनल में प्रवेश कर लिया। 13वीं वरीयता प्राप्त ड्रेपर का सामना अब 12वीं वरीयता प्राप्त होल्गर रूने से होगा। रूने ने पांचवीं वरीयता प्राप्त दानिल मेदवेदेव को 7 . 6, 6 . 4 से मात दी जो टूर पर उनकी 150वीं जीत थी। महिला वर्ग के फाइनल में शीर्ष वरीयता प्राप्त एरिना सबालेंका का सामना 17 वर्ष की मिर्रा आंद्रीवा से होगा। ड्रेपर ने इस जीत के साथ एटीपी मास्टर्स 1000 टूर्नामेंट में अल्काराज के 16 मैचों के विजय अभियान पर रोक लगा दी।

आइजोल एफसी ने दिल्ली एफसी को हराया

माहिलपुर (पंजाब)। विंगर लालबियाकडिका के दो गोल की मदद से आइजोल एफसी ने रविवार को यहां आई-लीग फुटबॉल टूर्नामेंट के मैच में दिल्ली एफसी को 2-0 से हराया। लालबियाकडिका ने 40वें और 77वें मिनट में गोल दागकर अपनी टीम को महत्वपूर्ण तीन अंक दिलाए। आइजोल के लिए यह जीत बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि वह वर्तमान सत्र में पहली बार अंतिम दो टीम से ऊपर आने में सफल रहा।

फिटनेस टेस्ट पास करने के बाद नीतीश सनराइजर्स की टीम में शामिल होने के लिए तैयार

बेंगलुरु। भारतीय ऑलराउंडर नीतीश कुमार रेड्डी साइड स्ट्रेन की समस्या से उबरने के बाद इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की अपनी टीम सनराइजर्स हैदराबाद से जुड़ने के लिए पूरी तरह तैयार हैं।नीतीश चोटिल होने के कारण जनवरी के बाद से कोई मैच नहीं खेल पाए हैं। पीटीआई को पता चला है कि नीतीश ने यहां भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में यो-यो टेस्ट सहित सभी फिटनेस टेस्ट सफलतापूर्वक पास कर लिए हैं और फिजियो ने उन्हें खेलने की मंजूरी दे दी है। आंध्र के इस 21 वर्षीय क्रिकेटर ने अपना आखिरी मैच भारत की तरफ से 22 जनवरी को ईडन गार्डन्स में इंग्लैंड के खिलाफ पहले टी20 अंतरराष्ट्रीय के रूप में खेला था, लेकिन उन्होंने उस मैच में बल्लेबाजी या गेंदबाजी नहीं की थी। नीतीश ने चेन्नई में दूसरे टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच से पहले नेट्स पर अभ्यास किया था, लेकिन साइड स्ट्रेन के कारण वह उस मैच और पांच मैचों की श्रृंखला से बाहर हो गए थे।

सीएमवाईके प्रिंटेक के लिए तथा उसी की ओर से मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा द इंडियन एक्सप्रेस प्रा.लि. सी-26 अमौसी इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज लखनऊ से मुद्रित एवं चौथी मंजिल, सहारा शापिंग सेंटर, फैजाबाद रोड, लखनऊ (फोन: 0522-4036600) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक: शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादक: विजय प्रकाश सिंह। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं।